BSW – 123

सामुदायिक संगठन और संचार

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामुदायिक संगठन 1

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

– इन्दिरा गाँधी

''स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण'' की चेयर के अन्तर्गत् विकसित कार्यक्रम

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- **Indira Gandhi**

खंड

1

सामुदायिक संगठन

इकाई 1
सामुदायिक संगठन : अवधारणा और सिद्धांत

इकाई 2
सामुदायिक संगठन का इतिहास

इकाई 3
समाज कार्य की प्रणाली के रूप में सामुदायिक संगठन

इकाई 4
सामुदायिक संगठन में समकालीन मुद्दें

इकाई 5
विभिन्न परिवेशों में सामुदायिक संगठनकर्त्ता की भूमिका

विशेषज्ञ समिति

पी.के. गांधी
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. डी.के. दास
आर.ए. कॉलेज ऑफ सोशल वर्क, हैदराबाद

डॉ. पी.के. मैथ्यू,
भारतीय सामाजिक संस्थान,
नई दिल्ली

डॉ. एलेस वड़वुम्मथला,
सी.बी.सी.आई.सेण्टर, नई दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए.पी.बर्नबास (सेवानिृत्त)
आई.आई.पी.ए.
नई दिल्ली

डॉ. रंजना सहगल,
इंदौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क,
इंदौर

डॉ. रमा वी.बारू
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. जेरी थॉमस
डॉन बास्को
गुवाहटी

प्रो. सुरेन्द्र सिंह,
कुलपति
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

प्रो. ए.बी. बोस (सेवानिवृत्त)
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू नई दिल्ली

प्रो. के.के. मुखोपाध्याय
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ए.आर.खान
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर.पी. सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. ऋचा चौधरी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

प्रो. प्रभा चावला,
इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति (संशोधन)

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर.आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सौम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुइन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई लेखक

इकाई 1	डॉ. सुरेश पथारे, टि.आई. एस.एस., मुम्बई
इकाई 2	पी.एफ. अब्राह्मम, बी.आर. अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली
इकाई 3	डॉ. सी.एम.जे. बॉस्को, सेक्रेड हार्ट कॉलेज, तिरूपत्तूर
इकाई 4	प्रो. गोपाल जी. मिश्रा, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर
इकाई 5	डॉ. ए.जे. क्रिस्टोफर, सेक्रेड हार्ट कॉलेज, तिरूपत्तूर

विषय संपादक

प्रो. के.के. जेकब
उदयपुर,
इग्नू

खंड संपादक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

भाषा संपादक

डॉ. गुलाब झा,
पी.जी. कॉलेज,
नोएडा

पाठ्यक्रम संयोजक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
डॉ. आर.पी. सिंह
डॉ. अन्नु जे. थॉमस

कार्यक्रम संयोजक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
डॉ. आर.पी. सिंह
डॉ. अन्नु जे. थॉमस

इकाई रूपांतरण

श्री जोसेफ वर्गीस
परामर्शदाता, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (संशोधन)

इकाई लेखक

इकाई 1 डॉ. सुरेश पथारे, टि.आई. एस.एस., मुम्बई

इकाई 2 पी.एफ. अब्राह्मम, बी.आर. अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली

इकाई 3 डॉ. सी.एम.जे. बॉस्को, सेक्रेड हार्ट कॉलेज, तिरूपत्तूर

इकाई 4 प्रो. गोपाल जी. मिश्रा, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर

इकाई 5 डॉ. ए.जे. क्रिस्टोफर, सेक्रेड हार्ट कॉलेज, तिरूपत्तूर

विषय संपादक

डॉ. सनी जोस,
लोयोला कॉलेज ऑफ सोशल साइंसेस, केरल

खंड संपादक

डॉ. सायन्तनी गुइन,
इग्नू, नई दिल्ली

कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. सायन्तनी गुइन,
इग्नू, नई दिल्ली

संपादक हिंदी

डॉ. कौशलेन्द्र प्रताप सिंह
राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर

भाषा संपादक

डॉ. नीतू,
शिक्षा विभाग,
नई दिल्ली।

मुद्रण निर्माण

....., 2021

© इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN -81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से ..... द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर कम्पोजिंगः

पाठ्यक्रम परिचय

"सामुदायिक संगठन और संचार" पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। इस पाठ्यक्रम में चार खंड हैं। खण्ड एक "**समुदाय संगठन**" के विषय में है। यह खण्ड समुदाय संगठन की अवधारणा से परिचित कराता है तथा इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डालता है। यह समाज कार्य अभ्यास की एक प्रविधि के रूप में समुदाय संगठन की अवधारणा को स्पष्ट करता है। समुदाय संगठन में समसामयिक मुद्दों तथा विभिन्न स्थापनों में समुदाय संगठनकर्त्ता की भूमिका पर भी इस खंड में चर्चा की गयी है।

द्वितीय खण्ड "**समकालीन विधियाँ**" के बारे में है। यह खण्ड समाज कार्य की समकालीन प्रविधियों से आपको परिचित कराएगा। यह वह अभ्यास प्रविधियाँ हैं, जो एक व्यवसाय के रूप में समाज कार्य के भावी उपक्रमों को निर्धारित करेंगी। इस खण्ड में छह समकालीन प्रविधियों जैसे पक्षकारिता, नेटवर्किंग, संसाधन गतिशीलता, सशक्तिकरण आधारित अभ्यास, जनहित याचिका तथा जागरूकता अभियान पर विस्तार से चर्चा की गयी है।

तृतीय खण्ड "**संचार/संप्रेषण के मूल तत्त्व**" के विषय में है। इस खण्ड में, हमने संचार की अवधारणाओं, प्रकारों तथा प्रक्रियाओं के विषय में विचार किया है। इस खण्ड में संचार के परम्परागत तथा आधुनिक मीडिया का अन्वेषण किया गया है। इस खण्ड में, हमने अर्न्तव्यैक्तिक, समूह तथा जन संचार का भी वर्णन किया है। स्वास्थ्य संचार के क्षेत्र तथा चुनौतियों का भी इस खण्ड में वर्णन किया गया है।

चतुर्थ खण्ड **"समाज कार्य अभ्यास के सामान्य क्षेत्र"** के बारे में है। यह खण्ड समाज कार्य अभ्यास के विशिष्ट क्षेत्र पर विचार करता है। इस खण्ड में परिवारों, शैक्षिक संस्थाओं, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, समुदायों तथा नैदानिक स्थापनों के साथ समाज कार्य अन्तःक्षेप का भी वर्णन किया गया है।

यह पाठ्यक्रम आपको समुदाय संगठन, समाज कार्य में समकालीन प्रविधियों, संचार तथा समाज कार्य अभ्यास के सामान्य क्षेत्रों की एक व्यापक समझ प्रदान करेगा।

खंड 1 का परिचय

सामुदायिक संगठन समाज कार्य शिक्षा और कार्य–व्यवहार में पूरी तरह स्थापित पद्धति है। यह मूल्यपरक है और व्यवहारिक कार्य में सामान्य सिद्धांतों को एक सेट के द्वारा मार्गदर्शित है। सामुदायिक संगठन का उद्देश्य समुदाय को अपनी आवश्यकताओं और समस्याओं को सुलझाने के लिए उसे और अधिक संगठित बनाते हुए उसमें क्षमता का विकास करना है।

इस खंड में 5 इकाइयाँ हैं। इकाई 1 समाज कार्य व्यवहार की पद्धति के रूप में सामुदायिक संगठन का अर्थ, परिभाषा, मूल्यों और सिद्धांतों के माध्यम से सामुदायिक संगठन के समझने का मार्ग दर्शन प्रदान करती है। यह इकाई समाज कार्य में सामुदायिक संगठन की अवधारणाओं को समझने में भी आपकी सहायता करेगी। इकाई 2 इंग्लैंड और भारतवर्ष में सामुदायिक संगठन के उद्‌भव के संदर्भ ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में चर्चा करती है। यह भारत के विशेष संदर्भ में सामुदायिक संगठन की विभिन्न विचारधाराओं और स्वरूपों के बारे में सूचना प्रदान करती है। इकाई 3 सामुदायिक विकास के लिए सामुदायिक संगठन की सार्थकता की व्याख्या करती है। यह विभिन्न समुदायों के साथ समाज कार्य अंतःक्षेप की भी व्याख्या करेगी। अधिकार की संकल्पना और सामुदायिक संगठन में इसकी सार्थकता, लोगों को शक्तिशाली बनाने में आने वाली बाधाओं की भी चर्चा की जाएगी। इकाई 4 समुदाय में लोगों के सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले मुद्दे जैसे जेण्डर संबंधी मुद्दे, वर्ग, समाज में असमानता और सामाजिक संस्थाओं पर उनके प्रभावों की चर्चा करेगी। इकाई 5 विभिन्न सामाजिक ढाँचों में सामुदायिक संगठनकर्त्ता द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं की व्याख्या करेगी।

इस खण्ड की पाँचों इकाइयाँ सामुदायिक संगठन के विभिन्न पक्षों की व्यापक जानकारी प्रदान करेगी। यह समाज कार्य व्यवहार की महत्त्वपूर्ण पद्धतियों में से एक मूल पद्धति की उपर्युक्त पर्याप्त जानकारी प्रदान करने में सहायता करेगी।

इकाई 1 सामुदायिक संगठन : अवधारणा और सिद्धांत

डॉ. सुरेश पथारे*

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 सामुदायिक संगठन का अर्थ तथा परिभाषा

1.3 समाज कार्य में सामुदायिक कार्य और सामुदायिक संगठन

1.4 सामुदायिक संगठन में मूल्य अभिविन्यास

1.5 सामुदायिक संगठन के सिद्धांत

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य समाज कार्य प्रणाली की विधि के रूप में सामुदायिक संगठन संबंधी मार्ग–निर्देश उपलब्ध कराना है। इस इकाई में आपको सामुदायिक संगठन के तात्पर्य, परिभाषा, मूल्यों तथा सिद्धांतों से अवगत कराया जाएगा। इस

* डॉ. सुरेश पथारे, टि.आई.एस.एस., मुम्बई।

इकाई के द्वारा आप सामुदायिक कार्य तथा समाज कार्य में सामुदायिक संगठन की अवधारणा से भी अवगत हो पाएँगे।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- सामुदायिक संगठन की परिभाषा दे सकेंगे;
- समाज कार्य के संदर्भ में सामुदायिक कार्य तथा सामुदायिक संगठन की जाँच कर सकेंगे; और
- सामुदायिक संगठन के मूल्यों तथा सिद्धांतों का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

समाज कार्य–व्यवसाय में लोगों (व्यक्ति, समूह तथा समुदाय) के साथ काम करने की तीन मूल सिद्धांत हैं। हम पहले ही सामाजिक केस कार्य तथा सामाजिक समूह कार्य नामक दो विधियों का अध्ययन कर चुके हैं। तीसरी प्राथमिक विधि सामुदायिक संगठन है। हम जानते ही हैं कि समाज केस कार्य का उद्देश्य एक व्यक्ति विशेष को सहायता करना है तथा समाज समूह कार्य में सामूहिक गतिविधियों के द्वारा व्यक्तिगत विकास को बढावा दिया जाता है। समुदाय को अपनी आवश्यकताओं या समस्याओं को हल करने के लिए "इन्हें अधिक संगठित करके" सुचारू रूप से इनकी "क्षमता को बढ़ाना" सामुदायिक संगठन का उद्देश्य है। समाज कार्यों में सामुदायिक संगठन एक सुस्थापित पद्धति है। इसके मूल्य अभिविन्यास हैं तथा सामान्य सिद्धांतों के एक सेट द्वारा इसका कार्यान्वयन होता है।

1.2 सामुदायिक संगठन का अर्थ तथा परिभाषा

अर्थ

सामुदायिक संगठन को समाज कार्य की पद्धति के रूप में अधिकाधिक जानने से पहले हमें इसका तात्पर्य जान लेना चाहिए। सामुदायिक संगठन के अनेक अर्थ

हैं। इसके पर्याय शब्द सामुदायिक कार्य, सामुदायिक विकास तथा सामुदायिक लामबंदी हैं। सामान्यतया सामुदायिक संगठन से तात्पर्य, समुदाय की समस्याओं को समुदाय के लोगों को संगठित करके सहायता करना है। भारत में समाज कार्य–व्यवसाय के संदर्भ में, इस शब्द का प्रयोग समुदाय के विकास में हस्तक्षेप के लिए समाज कार्य की प्राथमिक विधि से है।

समाज विज्ञान में, हम सीखते हैं कि समाज तथा समाजिक संस्थाएँ व्यक्तियों के संग्रह से बढ़कर हैं। इसमें यह भी शामिल है कि ये आपस में एक दूसरे से कैसे जुड़े हुए है। इनमें अर्थव्यवस्था, राजनीतिक संगठन, मूल्य, विचार, आस्था, प्रणालियाँ, प्रौद्योगिकी तथा प्रत्याशित आचरण (सामाजिक विचार–विमर्श) का प्रतिमान जैसी प्रणालियों का संग्रह होता है। इसका तात्पर्य यह है कि एक सार्वजनिक स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों का समूह जरूरी नहीं कि संगठित हो। इन्हें संगठित मानने के लिए उनके बीच एक समान विचार तथा आशाएँ होनी चाहिए। इससे उन्हें सामाजिक संरचना तथा कुछ सामाजिक प्रक्रियाएँ प्राप्त होती हैं, जिनसे वे (सामाजिक) कुछ संगठित होते हैं। सामूहिक संगठित होने के लिए व्यक्तियों को आगे आना होता है।

साथ ही यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि कुछ ढाँचागत या प्रशासनिक प्रकार (अध्यक्ष, खजांची, सचिव आदि जैसे) के रूप में सामूहिक विभिन्न समूहों का निर्माण करने से ही समुदाय संगठित नहीं होता। संस्थाओं की बहुविधताओं से नहीं, वरन् उचित सामूहिक रुचि या गतिविधियों के समूह से ही समुदाय संगठित होते हैं। वास्तव में इससे अधिक द्वंद्व पैदा होते हैं तथा सामान्य जीवन अवरुद्ध होता है। अतः सामुदायिक संगठन के महत्त्वपूर्ण निर्धारक तत्त्वों में आपसी विचार–विमर्श, एकीकरण सहयोग तथा वर्तमान संस्थाओं का समन्वय, सामूहिक हित तथा गतिविधियाँ और समुदाय की बदलती परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु, यदि आवश्यक हो तो नए समूहों तथा संस्थाओं का निर्माण शामिल है।

परिभाषा

सामुदायिक संगठन प्रणाली के अध्ययन तथा इसमें कार्य करने के लिए एक स्पष्ट परिभाषा का होना आवश्यक है। साहित्य में अनेक परिभाषाएँ उपलब्ध हैं, जिन्हें समय–समय पर एवं विभिन्न संदर्भो में प्रस्तुत किया गया है। इनमें से अधिकांश का सामूहिक सार आवश्यकताओं से संसाधनों का मिलान करना है। हम यहाँ पर सामुदायिक संगठन की दो ऐसी परिभाषाएँ दे रहे हैं जो व्यापक रूप से स्वीकार्य हैं :

मूरे जी रॉस (1967) के अनुसार 'सामुदायिक संगठन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें समुदाय अपनी आवश्यकताओं या उद्देश्यों की पहचान करता है, इन्हें प्राथमिकता देता है। इन पर कार्य करने के लिए विश्वास एवं संकल्प विकसित करता, है इनके लिए (आंतरिक तथा बाहरी तौर पर) संसाधन जुटाता है तथा इन समस्त कार्यों को करने के लिए समुदाय में सहकारिता तथा सहकार का दृष्टिकोण एवं अभ्यास का प्रसार करता है।''

इस परिभाषा में ''प्रक्रिया'' से रॉस का आशय एक आंदोलन (गतिविधि) से है, जो समस्या या उद्देश्य का पता लगाने से लेकर समुदाय में समस्या के समाधान या उद्देश्य की प्राप्ति तक है। समुदाय की समस्याओं को दूर करने के लिए अन्य प्रक्रियाएँ भी हैं परंतु यहाँ पर सामुदायिक संगठन प्रक्रिया को उसने ऐसी प्रक्रिया कहा है, जिसमें ज्यों–ज्यों एक या एक से अधिक सामुदायिक समस्याओं पर कार्रवाई की जाती है, त्यों–त्यों समुदाय की एकीकृत इकाई को मजबूती समुदाय की आवश्यकताओं एवं कार्य के लिए विश्वास को पहचानने के साधन के रूप में की जाती है। सामुदायिक संगठन में व्यवसायिक कार्यकर्त्ता का कार्य पहल करने, संगठित करने, विकसित करने तथा इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में सहायता

करना है। उसका कार्य इस प्रक्रिया को सजग, सुविचारित तथा सुस्पष्ट समझी हुई बनाना भी है।

यहाँ पर प्रयोग किया गया ''समुदाय'' शब्द लोगों के दो मुख्य समूहों से संबंधित है। पहला यह कि एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र जैसे एक गाँव, कस्बे, शहर, पड़ोस या शहर में एक जिले के सभी लोगों से बना होता है। इस प्रकार से यह एक प्रांत या एक राज्य, एक राष्ट्र या विश्व के सभी लोगों से भी संबंधित हो सकता है। दूसरे, इसमें ऐसे लोगों के समूह शामिल हैं, जिनके विचार या कार्य सामूहिक जैसे कि कल्याणकारी, कृषि, शिक्षा या धार्मिक हो सकते हैं। इस सन्दर्भ में सामुदायिक संगठन एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो विभिन्न मुख्य लोगों को समुदाय के सामूहिक लक्ष्यों या रूचियों को सामुदायिक कार्य की प्राप्ति के लिए साथ लाता है।

यहाँ पर प्रस्तुत दूसरी परिभाषा क्रैमेर (Kramer) तथा स्पेक्ट (Specht) (1975) की है जोकि अधिक समाज–तकनीकी है। इनके अनुसार "सामुदायिक संगठन का संबंध विभिन्न प्रकार के अन्तःक्षेपों की विभिन्न पद्धतियों से है, जिसमें एक व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता की सहायता से व्यक्ति, समूह या संगठनों को मिलाकर बनी हुई सामुदायिक कार्य प्रणाली द्वारा मूल्यों की लोकतांत्रिक प्रणाली के अंतर्गत् रहकर, विशेष प्रकार की समस्याओं को सुनियोजित सामूहिक कार्रवाई द्वारा हल करने के लिए कार्य करते हैं।

इनकी व्याख्या के अनुसार, इसमें दो मुख्य आपसी संबंधित पहलू शामिल हैं (क) एक कार्य प्रणाली के साथ काम करने की पारस्परिक प्रक्रिया, जिसमें पहचान करने, नियुक्त करने तथा सदस्यों के साथ कार्य करने और संगठनात्मक तथा इनके बीच आपसी संबंध विकसित करना सम्मिलित है, जिससे उनके प्रयासों को बढ़ावा मिलता है, और (ख) समस्याग्रस्त क्षेत्रों का पता लगाने, कारणों का विश्लेषण करने, योजना बनाने, नीतियाँ विकसित करने तथा प्रभावी कार्रवाई करने के लिए अपेक्षित संसाधनों को संग्रहीत करने संबंधी तकनीकी कार्य शामिल हैं।

इन दोनों परिभाषाओं के विश्लेषण से पता चलता है कि ये ''आवश्यकता–संसाधन समायोजन'' दृष्टिकोण, ''सामाजिक संबंध'' दृष्टिकोण तथा आवश्यकताओं को पूरा करने और सहकारी दृष्टिकोण के विकास संबंधी दो विचारों के सम्मिश्रण को शामिल करती हैं।

सामुदायिक संगठन पद्धति की प्रमुख विशेषताएँ तीन आयामों से उत्पन्न होती हैं: (1) इसके विन्यास तथा केंद्रबिंदु का स्वरूप – समुदाय तथा इसकी समस्याएँ, (2) इसके लक्ष्यों का स्वरूप – समुदाय की बढ़ी हुई कार्यात्मक क्षमता और सामाजिक कल्याणकारी नीति को प्रभावित करने की इसकी क्षमता, तथा (3) समुदाय के सदस्यों में आपस में तथा समूहों के बीच संबंधों को प्रभावित करने के लिए प्रयोग की गई प्रविधियाँ। सामुदायिक संगठन विधि की परिभाषा देने वाले विवरण में व्यक्तिगत या उक्त तीनों पहलुओं के सम्मिश्रण पर बल दिया गया है तथा मुवक्किलों के समूह एवं सम्पूर्ण प्रक्रिया तथा विधि के कार्यान्वयन के तरीके का संदर्भ भी लिया जाता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक संगठन की परिभाषा दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 समाज कार्य में सामुदायिक कार्य और सामुदायिक संगठन

सामुदायिक संगठन का अर्थ तथा परिभाषा पर चर्चा करने के पश्चात, आइए, अब इसकी तुलना सामुदायिक कार्य तथा समाज कार्य व्यवसाय के संदर्भ में करें। समाज कार्य में ''सामुदायिक कार्य'' शब्द का प्रयोग प्रायः अलग अर्थों में किया जाता है। समाज कार्य साहित्य में ''सामुदायिक कार्य'', ''सामुदायिक विकास'', ''सामुदायिक संगठन'' तथा ''सामुदायिक सशक्तिकरण'' शब्दों को सामुदायिक कार्यों में आपस में बदलकर प्रयोग किया जाता है। कुछ लेखकों ने इन शब्दों का प्रयोग एक ही प्रकार के कार्यों के लिए किया है, जबकि दूसरों ने इनका प्रयोग समुदाय से संबंधित विभिन्न प्रकार के कार्यों के संदर्भ में किया है।

समाज कार्य के अंग के रूप में सामुदायिक कार्य का लम्बा इतिहास है। यह विभिन्न चरणों से गुजरा है। समस्त विश्व में इसे समाज कार्य पद्धति के अभिन्न अंग के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। इतिहास से स्पष्ट होता है कि समाज कार्य–शिक्षा से पहले समाज कार्य हुआ है। यूनाइटेड किंगडम (यू.के.) तथा यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमरीका (यू.एस.ए.) में समाज कार्य में सामुदायिक कार्य की शुरुआत सन् 1880 में दान संगठन आंदोलन और बस्ती/घर आंदोलन से हुई। समाज कार्य की आरंभिक अवस्था में यू.के. में सामुदायिक कार्य को ऐसे समाज कार्य के रूप में देखा गया, जो प्रत्येक व्यक्ति का सामाजिक समायोजन बढ़ाने में सहायता का प्रयास करता था। इसमें मुख्य दिशा कार्य करने वाली स्वैच्छिक संस्थाओं के समन्वय को बढ़ावा देने के लिए कार्य करना था।

हमारे देश के मुम्बई शहर की गंदी बस्तियों के समुदाय में कार्य के अनुभव के साथ सन् 1936 में समाज कार्य शिक्षा के लिए पहली संस्था की स्थापना के साथ शुरुआत हुई। भारत में समाज कार्य की पद्धति के रूप में सामुदायिक कार्य को

मुख्यतः स्थानीय प्रमुखताओं के विकास की प्रक्रिया के रूप में, विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य तथा कृषि विकास के क्षेत्रों देखा जाता है। कार्य का केंद्र बिंदु लोगों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार आगे बढ़ाना, उनमें आत्मविश्वास एवं इच्छाशक्ति भरना तथा इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध संसाधनों के उपयोग हेतु सक्षम बनाना है।

क्षेत्रीय समाज कार्यकर्त्ता तथा अन्य के द्वारा समुदाय कार्य करने के अनेक उपाय हैं। बहरहाल, समाज कार्य में हम मुख्यतः सामुदायिक विकास, सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक संबंध/सेवाओं के तीन तरीके पाते हैं। हालांकि ये दृष्टिकोण सामुदायिक कार्य की विभिन्न स्थितियों या क्षेत्रों को दर्शाते हैं फिर भी प्रयासों में मूलभूत समानताएँ हैं। इनके घटक प्रायः आपस में जुड़े हुए हैं तथा कई बार एक दूसरे के क्षेत्र में अतिक्रमण करते हैं।

हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि सामुदायिक कार्य मूल रूप में समाज कार्य की ही प्रक्रिया है। केस कार्य तथा समह कार्य की तरह इसका प्रयोग भी कुछ मूल उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। आपको विदित ही है कि सभी समाज कार्य पद्धतियों का संबंध व्यक्तियों, समूहों या समुदाय के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करना, इनकी अंतः शक्तियों का उपयोग करना, आंतरिक संसाधनों का पूरा इस्तेमाल, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने कार्यों को व्यवस्थित करने संबंधी क्षमता का विकास करने और एकीकृत इकाई के रूप में कार्य करने की उनमें क्षमता लाने से है। सामुदायिक संगठन में, समाज कार्य का संबंध उस प्रक्रिया के प्रारंभ से है, जो समुदाय को मिल जुलकर कार्य करने से रोकने वाली बाधाओं (उदासीनता, निहित स्वार्थों, भेदभाव) पर नियंत्रण करती है, तथा संभावनाओं को प्रोत्साहित करने, स्थानीय संसाधनों के प्रयोग तथा सहयोगी दृष्टिकोण तथा निपुणता का विकास करने को बढ़ावा देती है, जिससे उपलब्धियों के साथ–साथ अत्यधिक कठिन उद्देश्यों की प्राप्ति को संभव बनाती है।

अतः सामुदायिक संगठन का सामुदायिक व्यवसाय के रूप में शुरुआत की तुलना में परिपक्वता प्रक्रिया का उत्पाद अधिक है। आधुनिक समाज की बढ़ती हुई जटिलता तथा इसकी परस्पर निर्भरता की प्रक्रिया के फलस्वरूप किसी भी समाज के सुचारु कार्यों के लिए सामुदायिक संगठन लगभग पूर्व अपेक्षा है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्य में सामुदायिक संगठन की स्थिति क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 सामुदायिक संगठन का मूल्य अभिविन्यास

उपर्युक्त चर्चा से हम समझते हैं कि सामुदायिक संगठन, समाज कार्य पद्धति के व्यवहार में उपयोग के लिए एक अभिन्न अंग है। सामुदायिक संगठन के व्यवहारिक इस्तेमाल में कुछ प्रश्न उठते हैं कि किस कार्य को कैसे किया जाए? सामुदायिक संगठन प्रक्रिया में क्या मूल्य अभिविन्यास तथा सामान्य सिद्धांत हैं, जो

हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं कि सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया में क्या सारगर्भित या सामाजिक तौर पर वांछनीय है? सामुदायिक संगठन के उद्देश्यों की सफल प्राप्ति के लिए प्रयासों में सुधार कैसे किया जाए? इस भाग में हम ऐसे प्रश्नों पर चर्चा कर रहे हैं।

सामुदायिक संगठन की उत्पत्ति अद्वितीय संदर्भ संरचना से होती है, जिसका स्वरूप विशेष मूल्य अभिविन्यास पर आधारित है। समाज कार्य में सामुदायिक संगठन पद्धति का केंद्र, व्यक्तिगत तथा व्यवसायिक मूल्यों की प्रणाली से प्रभावित होता है। इन मूल्यों से कार्यकर्त्ताओं की अंतःक्षेप की शैली तथा समुदाय के सदस्यों के साथ इनके द्वारा अपनाई जाने वाली कुशलता भी प्रभावित होती है। मूल्य विश्वास हैं, जो किसी भी व्यक्ति द्वारा क्या किया जाना चाहिए तथा क्या नहीं किया जाना चाहिए? इन अधिमान्यताओं को चित्रित करती हैं। मूल्यों के ऐसा निर्माण करने के पीछे वास्तव में कुछ व्यक्तिपरक तत्व होते हैं। समूहों के बीच तथा एक ही समूह के अंदर व्यक्तियों के मूल्यों में विभिन्नता होती हैं। इसके अतिरिक्त, सामुदायिक संगठन के कार्यकर्त्ताओं के किसी भी प्रतिनिधि समूह द्वारा निर्मित मूलभूत नैतिक तथा सामाजिक मूल्य सुस्पष्ट, व्यापक तथा सामान्य स्वीकृत नहीं होते।

सभी समाज कार्य पद्धतियों में सामुदायिक संगठन की मूल्य अभिविन्यास की उत्पत्ति, लोगों के साथ काम करने की कुछ मूलभूत अवधारणाओं तथा सिद्धांतों की स्वीकृति से होती है। इनमें व्यक्ति की अपेक्षित मर्यादा तथा योग्यता, अपना जीवन व्यवस्थित ढंग से जीने के लिए प्रत्येक व्यक्ति में सामर्थ्य तथा संसाधनों का होना अनिवार्य है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने विषय में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सभी सामाजिक प्राणियों में विकास करने की क्षमता, प्रत्येक व्यक्ति को मूलभूत भौतिक आवश्यकताएँ (भोजन, आश्रय स्थल तथा कपड़ें) को प्राप्त करने का अधिकार, जिनके बिना जीवन की पूर्णता अवरुद्ध हो जाती है, अपना जीवन तथा वातावरण आसपास सुधारने हेतु प्रत्येक व्यक्ति को संघर्ष तथा मेहनत करने की जरूरत,

आवश्यकता तथा संकट के समय सहायता प्राप्ति का व्यक्तिगत अधिकार और एक सामाजिक संगठन का महत्त्व, जिसमें व्यक्ति स्वयं को उत्तरदायी महसूस करे। ऐसे सामाजिक वातावरण की आवश्यकता, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को वृद्धि तथा विकास करने की प्रेरणा मिले, प्रत्येक व्यक्ति को अपने समुदाय के कार्यों में भाग लेने का अधिकार तथा उत्तरदायित्व. चर्चा की व्यवहारिकता, परामर्श, व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्याओं के निदान के लिए उपायों पर सलाह तथा ''स्वयं सहायता'' सामुदायिक संगठन के लिए अनिवार्य अपेक्षाएँ हैं, जिनसे सामुदायिक संगठन प्रक्रिया के आधार के लिए मूल्य अभिन्यासों की उपलब्धि होती हैं।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक संगठन पद्धति के व्यवहारिक उपयोग के मूल्य अभिन्यासों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 सामुदायिक संगठन के सिद्धांत

जिस अर्थ में सामुदायिक संगठन के सिद्धांत यहाँ प्रयोग किए गए हैं, ये सुदृढ़ व्यवहार पद्धति हेतु सामान्य मार्गदर्शी नियम हैं। सिद्धांत मूल्य पर आधारित निर्णयों की अभिव्यक्ति होते हैं। यहाँ चर्चित किए जा रहे सामुदायिक संगठनों के सिद्धांत संदर्भ के अंतर्गत् है तथा लोकतांत्रिक समाज में समाज कार्य के उद्देश्यों तथा भावना के अनुकूल हैं। हमारा संबंध प्रत्येक व्यक्ति की मर्यादा तथा योग्यता, स्वतंत्रता, सुरक्षा, सहभागिता और हितकारिता एवं पूरे जीवन से है। लोकतंत्र के सिद्धांतों जैसे सीमांत व्यक्ति की दशा को बेहतर बनाना, पारदर्शिता, ईमानदारी, जीवोत्तरता को बढाना, आत्मनिर्भरता, भागीदारी, सहयोग आदि का अनुसरण करने से संबंधित है।

सामुदायिक संगठन के साहित्य में हम सिद्धांतों के विभिन्न आयाम पाते हैं। दुनहैम (Dunham) (1958) ने सामुदायिक संगठन के 28 प्रस्तावित सिद्धांतों को प्रस्तुत किया है। उसने इन्हें सात शीर्षकों में समूहीकृत किया है।

1) प्रजातंत्र तथा समाज कल्याण।

2) सामुदायिक कार्यक्रमों के लिए सामुदायिक जड़।

3) नागरिकों की समझ, संभरण, भागीदारी तथा व्यवसायिक सेवा।

4) सहयोग

5) समाज कल्याण के कार्यक्रम

6) समाज कल्याण सेवाओं की पर्याप्तता, वितरण और संगठन तथा

7) निवारण

रॉस (Ross) (1967) ने विशेष सिद्धांत दिए हैं – सामुदायिक संगठन प्रक्रियाओं के प्रारंभ तथा इन्हें जारी रखने के लिए मूल या मौलिक विचार। इन सिद्धांतों पर संगठन या संघ के स्वरूप तथा व्यवसायिक कार्यकर्त्ता की भूमिका के संदर्भ में चर्चा की गई है। रॉस (Ross) द्वारा बताए गए सामुदायिक संगठन के 12 सिद्धांत निम्नलिखित हैं :

1) समुदाय के अंदर अपनी वर्तमान स्थितियों से असंतोष अवश्य पैदा होना चाहिए और/या संघों के विकास का पोषण हो बढ़ता है।

2) असंतोष का फोकस एवं समुचित उपयोग संगठन, नियोजन एवं विशिष्ट समस्या के क्रम में कार्य में परिणत होना चाहिए।

3) असंतोष जो सामुदायिक संगठन में फैला या बना हुआ हो, उस पर समुदाय में व्यापक चर्चा की जानी चाहिए।

4) संघ में मुख्य उप–समूहों के द्वारा पहचाने गए तथा स्वीकृत नेताओं (औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों) को शामिल करना चाहिए।

5) समुदाय के लक्ष्य तथा विधियों एवं प्रणालियों को समुदाय की पूर्ण स्वीकार्यता प्राप्त होनी चाहिए।

6) संघ के कार्यक्रमों में कुछ भावनात्मक गतिविधियाँ भी शामिल होनी चाहिए।

7) संघ को चाहिए कि वह समुदाय में वर्तमान लक्षित स्पष्ट तथा अव्यक्त सदभावना का पता लगाकर प्रयोग करना चाहिए।

8) संघ को अपने अंदर तथा दो संघों के मध्य और समुदाय के बीच में संप्रेषण का सक्रिय एवं प्रभावशाली ढंग से विकास अवश्य करना चाहिए।

9) संघ को चाहिए कि वह सहयोगी कार्य में समूहों को सशक्त करें तथा उनका समर्थन लें।

10) संघ को समुदाय की वर्तमान स्थितियों के साथ तालमेल करके काम की गति को बढ़ावा देना चाहिए।

11) संगठन को चाहिए कि वह प्रभावी नेतृत्व का विकास करे।

12) संघ को अपनी शक्ति, स्थायित्व तथा सम्मान को विकसित करना चाहिए।

भारत सामुदायिक संगठनकार्य के उपयोग की वास्तविक स्थितियों को ध्यान में रखकर सिद्दिकी (1997) ने आठ सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं :

1) विशिष्ट उद्देश्यों का सिद्धांत

2) नियोजन का सिद्धांत

3) लोगों की भागीदारी का सिद्धांत

4) अंतः समूह दृष्टिकोण का सिद्धांत

5) प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का सिद्धांत

6) लचीले संगठन का सिद्धांत

7) स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग का सिद्धांत

8) सांस्कृतिक अभिन्यास का सिद्धांत

हम उपलब्ध सिद्धांतों में से भारतीय संदर्भ में सामुदायिक संगठन की व्यवहारिक पद्धतियों का मार्गदर्शन करने वाले सिद्धांतों में से कुछ का उल्लेख करना चाहेंगे :

1) **सामुदायिक संगठन साधन है, साध्य नहीं :** जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, सामुदायिक संगठन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एकीकृत इकाई के रूप में समुदाय की क्षमता बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार से यह एक पद्धति या साधन है, जिससे लोग सुखी तथा पूर्णतया विकसित

जीवन जी सकें। यह ऐसी अंतःक्षेप विधि का संदर्भ देता है, जिसके द्वारा व्यक्तियों, समूहो या संगठनों वाले समुदाय को उनकी आवश्यकताओं तथा समस्याओं के अनुसार नियोजित सामूहिक कार्यों में लगाने में सहायता की जाती है।

2) **सामुदायिक संगठन सामुदायिक एकता तथा प्रजातांत्रिक पद्धति को विकसित करने को लिए है :** इसे उन विघटनकारी प्रभावों को रोकना चाहिए, जो समुदाय के कल्याण तथा प्रजातांत्रिक संस्थाओं की आंतरिक शक्तियों में बाधा डालते हों। सामुदायिक संगठन में भेदभाव और पृथक्करण या अलगाव से दूर रहना चाहिए और एकीकरण तथा परस्पर स्वीकार्यता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

3) **समुदाय की स्पष्ट पहचान :** चूंकि सामुदायिक संगठन कार्यकर्त्ता का मुवक्किल समुदाय ही है, अतः इसकी स्पष्ट पहचान की जानी चाहिए। यह संभव हो सकता है कि वह उसी समय अनेक समुदायों के साथ काम कर रहा हो। साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि समुदाय की पहचान हो जाने पर पूरे समुदाय के बारे में चिंता कार्यकर्त्ताओं को होनी चाहिए। समाज कल्याण की आवश्यकताओं तथा पूरे समुदाय के संसाधनों से किसी भी कार्यक्रम को अलग नहीं किया जा सकता। समुदाय में किसी एक एजेंसी/समूह के हित या बेहतरी की तुलना में पूरे समुदाय का कल्याण ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है।

4) **तथ्यान्वेषण और आवश्यकता का मूल्यांकन :** समुदाय विकास कार्यक्रम की जड़े समुदाय में होनी चाहिए। समुदाय में कोई भी कार्यक्रम प्रारंभ करने से पहले सही ढंग से तथ्यान्वेषण तथा समुदाय की आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना अनिवार्य है। स्थानीय सामुदायिक सेवाओं के लिए बाहर से लादे जाने वाले कार्यक्रमों के स्थान पर आधारभूत देशी विकास कार्य अपेक्षित होते हैं। जब कभी संभव हो, तब सामुदायिक संगठन का प्रारंभ

समुदाय की आवश्यकता या समुदाय में अत्यधिक व्यक्तियों की संख्या के आधार पर किया जाना चाहिए। सामुदायिक विकास में समुदाय की भागीदार जानदार तथा समुदाय के नियंत्रण पर अनिवार्यतः होना चाहिए।

सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए कार्यक्रम को समुदाय की आवश्यकताओं के आधार तथा अन्य तुलनात्मक उपलब्ध सेवाओं के आधार पर आरंभ, विकसित, संशोधित तथा समाप्त किया जाना चाहिए। जब आवश्यकता पूरी हो जाए तो कार्यक्रम को संशोधित या समाप्त कर देना चाहिए।

5) **उपलब्ध संसाधनों का पता लगाना, संग्रहण तथा इनका प्रयोग** : नए संसाधनो या नयी सेवाओं का सृजन करने से पहले वर्तमान समाज कल्याणकारी संसाधनों का जहाँ तक संभव हो भरपूर प्रयोग किया जाना चाहिए। संसाधनों/सेवाओं के अभाव में कार्यकर्त्ताओं को विभिन्न स्रोतों जैसे समुदाय, सरकार, गैर–सरकारी निकायों आदि से संसाधन जुटाने होते हैं। स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इन्हें विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने से पहले कभी–कभी इन संसाधनों में गहन परिवर्तन अपेक्षित होता है। भौतिक संसाधनों को जुटाने के साथ साथ स्थानीय मानव संसाधनों का भी अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए।

6) **नियोजन में भागीदारी** : सामुदायिक संगठन के कार्यकर्त्ताओं को सामुदायिक संगठन प्रक्रिया के दौरान भागीदारी नियोजन की आवश्यकता को स्वीकार करना चाहिए। यह महत्त्वपूर्ण है कि व्यवसायी कार्यकर्त्ता कार्य शुरू करने से पहले एक रूपरेखा तैयार करें कि वह समुदाय के लिए क्या करना चाहता है। ऐसा करने के लिए समुदाय की आवश्यकताओं, उपलब्ध संसाधनों, एजेंसी के उद्देश्यों आदि को ध्यान में रखकर समुदाय के साथ आगे बढ़ना चाहिए। सामुदायिक संगठन में नियोजन एक अनवरत प्रक्रिया

है क्योंकि यह कार्यान्वयन तथा मूल्यांकन के चक्र की अनुपालना करता है। नियोजन कल्याण की अभिव्यक्ति, ''पक्षपात'' या परीक्षण प्रणाली के आधार पर न होकर निर्धारित तथ्यों के आधार पर होनी चाहिए।

अधिकतम सहभागिता के लिए यह आवश्यक है कि आसन्न (Impend) कारकों का विश्लेषण करें तथा इन्हें दूर करने के लिए समयानुसार उपाय करें। सभी मामलों में लोगों को भाग लेने के लिए बाध्य करने के स्थान पर उन्हें किसी एक स्तर पर तथा मुद्दों के आधार पर भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। यदि लोगों को कार्यक्रम के लाभ में विश्वास हो जाए तो कार्यक्रम में अवश्य भाग लेंगे।

7) **सक्रिय तथा व्यापक सहभागिता :** स्वयं सहायता की अवधारणा सामुदायिक संगठन का मूल मंत्र है। समुदाय के सदस्यों को सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया के दौरान सहभागिता को प्रजातांत्रिक सिद्धांत तथा व्यावहार्यता – दोनों बिंदुओं के आधार पर प्रोत्साहित करना चाहिए अर्थात् उन व्यक्तियों को इसमें प्रत्यक्ष रूप से शामिल होना चाहिए, जिनकी इसके परिणामों में मूल भागीदारी है। नागरिकों या मुवक्किलों के समूहों के स्वयं सहायता समूहों को प्रेरित तथा विकसित करना चाहिए।

8) **स्वयं निर्णय के समुदाय के अधिकार का आदर किया जाना चाहिए :** सामुदायिक संगठन कार्यकर्त्ता की भूमिका व्यवसायिक निपुणता, सहायता तथा सृजनात्मक नेतृत्व उपलब्ध कराना है ताकि लोगों के समूह और संगठन समाज कल्याण के. उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें। समुदाय के सदस्यों को कार्यक्रम तथा नीति के बार मूल निर्णय लेने चाहिए। हालांकि सामुदायिक संगठनों के कार्यकर्त्ताओं को विभिन्न परिस्थितियों में अनेक भूमिका निभानी होती हैं परंतु मूलतः उनकी चिंता, लोगों की अभिव्यक्ति तथा नेतृत्व के बारे में होती है ताकि वे सामुदायिक संगठन के लक्ष्यों को

प्राप्त कर सकें और इस पर नियंत्रण, वर्चस्व या हेराफेरी का उनका प्रयास नहीं होना चाहिए।

9) **स्वैच्छिक सहयोग :** सामुदायिक संगठन का आधार पारस्परिक समझ, स्वैच्छिक स्वीकार्यता तथा पारस्परिक समझौता है। यदि सामुदायिक संगठन लोकतांत्रिक सिद्धांतों के समन्वय से है, यह संगठन सैनिक शासन में नहीं होता। इसे ऊपर से या बाहर से नहीं थोपा जाना चाहिए अपितु यह आंतरिक स्वतंत्रता से लिया जाना चाहिए और इसमें कार्यरत सभी व्यक्तियों को एकसूत्र में बांधे रखने की इच्छा चाहिए।

10) **प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग की भावना तथा प्रयासों का व्यवहार में समन्वयः** सामुदायिक संगठन पद्धति प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग की भावना पर आधारित है। सामुदायिक संगठन पद्धति ने प्रमाणित कर दिया है कि अधिकांश प्रभावी विकास सहयोगी प्रयासों के द्वारा उपलब्ध किए गए हैं। यह विभिन्न समूहों के द्वारा किए गए छुटपुट प्रयासों के स्थान पर मुख्य समस्याओं पर समन्वित तथा नियमित/प्रेरक कार्यक्रमों के द्वारा कार्रवाई करने पर संभव होता है।

सहयोगी तथा सहकारी दृष्टिकोण तथा इन पर अमलीकरण का मतलब विचारों में फर्क, तनाव या संघर्ष को दूर करने के लिए है। हमें मानना होगा कि इन बाद वाली शक्तियों से एक जनान्दोलन के लिए जीवन तथा महत्त्व प्राप्त होता है। ऐसे विरोध विघटनकारी या विनाशक या सकारात्मक तथा सृजनात्मक हो सकते हैं। सामुदायिक संगठन के कार्यकर्त्ताओं के लिए इन ताकतों को पहचानने तथा उचित ढंग से बदलाव करने की आवश्यकता है ताकि ये संपूर्ण समुदाय के लिए लाभकारी हो सकें।

11) **स्थानीय नेतृत्व की पहचान तथा शामिल करना :** जैसा कि कहा जा चुका है कि सामुदायिक संगठन में समुदाय के लोगों की सहभागिता अपेक्षित है

तथापि समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति के साथ आमने–सामने वार्ता करके शामिल नहीं किया जा सकता। अतः यह आवश्यक है कि समुदाय के विभिन्न समूहों तथा उप समूहों द्वारा स्वीकृत नेताओं की पहचान (औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों) करें तथा इन्हें मान्यता प्रदान की जाए। मुख्य उप–समूहों के साथ घनिष्ठ संबंधों वाले सम्मानित तथा स्वीकार्य नेताओं को शामिल करने से, समुदाय को एक सूत्र में बाँधने में सहायता मिलती है। इससे आगे चलकर सम्प्रेषण प्रक्रिया शुरू करने में सहायता मिलती है, जिसके प्रभावी होने पर सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया विकसित तथा कायम रहती है।

12) **प्राधिकार या विवशता का सीमित प्रयोग :** कभी–कभी सामुदायिक संगठन में प्राधिकार का या बल का प्रयोग करना अनिवार्य हो जाता है। परंतु इसका प्रयोग यथासंभव कम से कम, सीमित समय तथा अंतिम उपाय के रूप में ही प्रयोग किया जाना चाहिए। जब बल का प्रयोग किया जाता है तो इसका अनुपालन सहकारी प्रक्रिया के द्वारा यथाशीघ्र पुनर्ग्रहण के द्वारा करना चाहिए।

13) **कार्यक्रमों तथा सेवाओं की गतिशील तथा लचीली प्रकृति :** इस सिद्धांत का मूल आधार स्वस्थ सामुदायिक संगठन है। सामाजिक कल्याण एंजेसियाँ तथा कार्यक्रम सामुदायिक जीवन की बदलती हुई परिस्थितियों, समस्याओं और आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। समुदाय गतिशील है, जिसमें लगातार परिवर्तन हो रहे है। इसके कारण आवश्यकताएँ तथा समस्याएँ भी बदल रही हैं। अतः यह आवश्यक है कि कार्यक्रम तथा सेवाएँ काफी हद तक लचीली हों।

14) **सतत सहभागी मूल्यांकन :** चूँकि कार्यक्रमों का विकास सामुदायिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए होता है, इस प्रक्रिया के मूल्यांकन के लिए भी कुछ समय रखा जाना चाहिए। समुदाय से नियमित फीडबैक प्राप्त

होना चाहिए। कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए मानदंड निर्धारित होने चाहिए ताकि कार्यक्रम की सफलता तथा किस हद तक कार्य समाप्त हो गया है, देखा/जाना जा सके।

1.6 सारांश

इस इकाई का उद्देश्य समाज कार्य पद्धति की विधि के रूप में सामुदायिक संगठन की मूल अवधारणा को समझने के लिए आपको दिशा–निर्देश उपलब्ध कराना था। हमने सामुदायिक संगठन के तात्पर्य की विस्तार से चर्चा की तथा स्पष्टीकरणों के साथ परिभाषाएँ भी दी हैं। अब आप सामुदायिक संगठन की परिभाषा तथा इसका अर्थ को स्पष्ट करने में सक्षम हो सकेंगे। सामुदायिक कार्य तथा सामुदायिक संगठन समाज कार्य के अभिन्न अंग हैं – यह जानने के अतिरिक्त आप इन्हें समाज कार्य के संदर्भ में स्थित कर सकते हैं। हमने मूल्य अभिन्यास तथा सामुदायिक संगठन व्यवहार प्रणाली के कुछ महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शी सिद्धांतों पर भी चर्चा की है। अब आप मूल्यों तथा सिद्धांतों का महत्त्व जानने की स्थिति में हैं तथा क्षेत्र में सामुदायिक संगठन के क्रियान्वयन के समय इनका अनुपालन कर सकेगे।

1.7 शब्दावली

क्षमता : किसी भी व्यक्ति, समुदाय या संगठन की योग्यता, शक्ति या क्षमता।

सामुदायिक एकीकरण : एक ऐसी प्रक्रिया, जिसके द्वारा सहकारिता तथा सहयोगी दृष्टिकोण तथा पद्धति के प्रयोग से समुदाय को अधिक पहचान प्राप्त होती है, समुदाय के कार्यों में रुचि तथा सहभागिता बढ़ती है तथा इन मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए सामूहिक मूल्यों तथा साधनों में भागीदारी विकसित होती है।

सामुदायिक सहभागिता : सामुदायिक सहभागिता से तात्पर्य है कि समुदाय को प्रभावित करने वाले निर्णय समुदाय के सभी सदस्यों (न कि कुछ व्यक्तियों) द्वारा (किसी बाहरी एजेंसी द्वारा नहीं) लिए जाते हैं।

सहयोग : सामूहिक कार्यों में एक दूसरे की सहायता करना या किसी सामूहिक लक्ष्य, उद्देश्य के लिए मिलकर कार्य करना या प्रभावी सहयोग अति–आवश्यक है।

योजना निर्माण : लक्ष्य प्राप्ति हेतु योजना बनाने के लिए विभिन्न उपाय तथा विधियाँ आवश्यक हैं।

आवश्यकतानुसार संसाधनों का समायोजन : समुदाय में आवश्यकताओं के साथ संसाधनों का सही मेल करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

संसाधन : कोई भी संसाधन (भौतिक सामग्री, धन लोग आदि) जो किसी परियोजना में आदान के रूप में प्रयोग किए जा सकें।

सामाजिक संस्था : समाज द्वारा अनुमोदित तथा निर्धारित नियमों और एजेंसियों द्वारा संगठित तथा जारी संघ प्रथा या विवेकपूर्ण संबध अर्थात् सामाजिक विचार विमर्श का मान्यता प्राप्त स्वरूप। कोई भी संस्था दृष्टिकोणों, व्यावहारिक स्वरूप, आशाओं तथा तात्पर्यों के आधार पर बनती है।

सामाजिक विचार–विमर्श : सामाजिक विचार–विमर्श जनता के बीच प्रचलित व्यवहार तथा आस्था पर निर्भर होते हैं जोकि एक

दूसरे तथा अन्य लोगों के व्यवहार तथा आस्था पर निर्भर होते हैं।

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गंगराडे के.डी., (1971), "कम्युनिटी ऑरनाइजेशन इन इंडिया", पापुलर प्रकाशन, बम्बई।

हार्पर ई.डी. एड डनहम, आर्थर (1959), "कम्युनिटी ऑर्गनाइजेशन इन एक्सन",एसोसिएशन प्रेस, न्यूयार्क।

रास. एम.जी. (1967), "कम्यूनिटी ऑरगेनाइजेशन", हार्पर एंड रो, न्यूयार्क।

सिद्दिकी, एच.वाई. (1997), "वर्किंग विद् कम्यूनिटीज", हीरा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

"जर्नल ऑफ कम्यूनिटी प्रैक्टिस आर्गनाइजिंग, प्लानिंग, डेवलपमंट एंड चेंज", द हॉवर्थ सोशल वर्क प्रेक्टिस प्रेस।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) साहित्य में अनेक परिभाषाएँ उपलब्ध हैं, जिन्हें विभिन्न समय तथा संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है। इनमें से अधिकांश का सामूहिक सार संसाधनों का आवश्यकताओं से मेल करना है। हम यहाँ पर सामुदायिक संगठन को व्यापक रूप से स्वीकार्य दो परिभाषाओं पर चर्चा करेंगे।

   मूरे जी रास (Murry G. Ross) के अनुसार सामुदायिक संगठन "एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक समुदाय अपनी आवश्यकताओं या उद्देश्यों का पता लगाते हैं। इन्हें प्राथमिकता देता है, विश्वास तथा इकट्ठे कार्य करने

की इच्छा बनाते हैं, प्रयोग के लिए संसाधनों (आंतरिक तथा बाहरी) का पता लगाते हैं तथा ऐसा करते समय समुदाय में सहकारिता और सहयोगी दृष्टिकोण तथा प्रणाली को विकसित करते तथा अपनाते हैं।"

हम दूसरी परिभाषा क्रैमेर (Kramer) तथा स्पैच (Specht) (1975) पर यहाँ चर्चा करते हैं जोकि अधिक तकनीकी है। उनके अनुसार, "सामुदायिक संगठन अंतःक्षेप का विभिन्न विधियाँ हैं, जिसके द्वारा व्यक्तियों, समूहों या संगठनों से बनी सामुदायिक कार्य प्रणाली मूल्यों की प्रजातांत्रिक प्रणाली के अंदर विशेष समस्याओं पर नियोजित सामूहिक कार्रवाई करने के लिए व्यवसायिक परिवर्तन लाने वाले एजेंट की सहायता से कार्य किया जाता है।

बोध प्रश्न II

1) समाज कार्य में "सामुदायिक कार्य" शब्द प्रायः विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया जाता है। समाज कार्य साहित्य में हम देखते हैं कि "सामुदायिक कार्य", "सामुदायिक विकास", "सामुदायिक संगठन" तथा "सामुदायिक सशक्तिकरण" शब्द समुदायों के कार्यों के लिए समय समय पर आपस में बदल–बदल कर प्रयोग किए गए हैं। कुछ लेखकों ने समान प्रकार के कार्यों के लिए इनका प्रयोग किया है जबकि दूसरों ने समुदायों के विभिन्न कार्यों के संदर्भ में इनका प्रयोग किया है।

सामुदायिक कार्य का समाज कार्य के एक भाग के रूप में लम्बा इतिहास रहा है। यह विभिन्न चरणों में फैला हुआ है। संपूर्ण विश्व में इसे समाज कार्य प्रणाली के अभिन्न भाग के रूप में मान्यता प्राप्त है। यू.के. में प्रारंभिक अवस्था में, सामुदायिक कार्य को समाज कार्य के एक ऐसे उपाय के रूप में देखा गया था, जिससे व्यक्ति के सामाजिक सामंजस्य को विकसित करके व्यक्ति की सहायता की जा सकें।

भारत में, समाज कार्य की विधि के रूप में सामुदायिक कार्य को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिससे स्थानीय पहल को, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा कृषि विकास के क्षेत्र विशेष में बढ़ावा मिलता है। कार्य का केंद्र बिंदु जनता को अपनी आवश्यकताओं को बताने के लिए बढ़ावा देना तथा उन्हें उपलब्ध संसाधनों को ग्रहण करने योग्य बनाना है।

बोध प्रश्न III

1) समाज कार्य में, सामुदायिक संगठन प्रणाली का केंद्र बिंदु व्यक्तिगत तथा व्यवसायिक मूल्यों के द्वारा प्रभावित होता है। इन मूल्यों का प्रभाव सामुदायिक सदस्यों के साथ कार्य करते समय उनके द्वारा प्रयुक्त अंतःक्षेपों तथा उनकी कार्य कुशलता पर पड़ता है।

सामुदायिक संगठनों का मूल्य अभिन्यास, लोगों के साथ कार्य करने के लिए कछ स्वीकृत तथा निर्धारित अवधारणाओं तथा तथ्यों, से उत्पन्न होता है। इनमें से व्यक्ति की मर्यादा तथा नैतिकता, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपना जीवन व्यवस्थित करने के लिए निर्धारित संभावनाएँ तथा संसाधन, प्रत्येक को अपने बारे में बोलने की स्वतंत्रता सभी सामाजिक प्राणियों में विद्यमान अत्यधिक क्षमता या विकास, प्रत्येक व्यक्ति की उन मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, आवास तथा कपड़े) को प्राप्त करने का अधिकार है, जिनके बिना जीवन अवरुद्ध हो जाता है, अपने जीवन तथा वातावरण को सुधारने के लिए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला संघर्ष तथा प्रतिस्पर्धा मूल है। आवश्यकता तथा संकट के समय सहायता प्राप्त करने का व्यक्ति का अधिकार सामाजिक संगठन का महत्त्व जिसके लिए व्यक्ति स्वयं को उत्तरदायी मानता है तथा जोकि व्यक्तिगत भावना का प्रत्युत्तर है, सामाजिक वातावरण की आवश्यकता जिससे व्यक्तिगत विकास तथा वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। अपने समुदाय के कार्यों में भाग लेने का व्यक्ति का अधिकार तथा उत्तरदायित्व भी उतने ही महत्त्वपूर्ण जितना कि व्यक्तिगत तथा

सामाजिक समस्या पर चर्चा, सम्मेलन तथा सलाह करने के दौरान विचार–विमर्श की व्यवहारिकता होती है। क्योंकि किसी भी सहायता कार्यक्रम का अनिवार्य आधार "स्वयं सहायता" है, अतः ये सभी मूल्य आभन्यासी के कुछ उदाहरण है, जिनसे सामुदायिक संगठन का आधार बनता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 सामुदायिक संगठन का इतिहास*

पी.एफ. अब्राह्म*

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 हमें इतिहास का अध्ययन क्यों करना चाहिए?

2.3 सामुदायिक संगठन

2.4 सामुदायिक संगठन का इतिहास

2.5 यूनाइटेड किंगडम (यू.के.) में सामुदायिक संगठन

2.6 भारत में सामुदायिक संगठन का इतिहास

2.7 सामुदायिक कार्य के लिए गांधीवाद का दृष्टिकोण

2.8 सामुदायिक संगठन के प्रतिरूप (मॉडल)

2.9 सामुदायिक संगठन का दृष्टिकोण

2.10 सारांश

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

* पी.एफ. अब्राह्म, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली।

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको सामुदायिक संगठन के ऐतिहासिक विकास तथा दर्शन से परिचित कराना है। आपको सामुदायिक संगठन के विभिन्न प्रकारों तथा मॉडलों (प्रतिरूपों) विशेषकर भारतीय परिस्थितियों से भी अवगत कराया जाएगा। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- सामुदायिक संगठन के इतिहास की रूपरेखा बना सकेंगे;
- सामुदायिक संगठन के दर्शन की चर्चा कर सकेंगे;
- सामुदायिक संगठन के विभिन्न दृष्टिकोणों तथा मॉडलों (प्रतिरूपों) का विश्लेषण कर सकेंगे;
- भारत में सामुदायिक संगठन के मूल तत्त्व तथा विकासात्मक प्रयासों की दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता पर चर्चा कर सकेंगे; और
- आलोचनात्मक रूप से विगत में किए गए प्रयासों की जाँच कर सकेंगे तथा सामुदायिक संगठन में नई प्रवृत्तियों के उद्‌भव पर चर्चा कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने सामुदायिक संगठन की अवधारणा तथा इसके विभिन्न सिद्धांतों के विषय में संक्षेप में सारी जानकारी मिली। जैसा कि आप जानते हैं पश्चिमी देशों विशेषकर इंग्लैंड तथा संयुक्त राज्य अमेरिका सामुदायिक संगठन समाज में कार्य की पद्धति के रूप में पहले ही अपनाया जा चुका है। बहरहाल, सामुदायिक संगठन के इतिहास के बारे में बहुत कम लिखा गया है। सामुदायिक संगठन एक प्रक्रिया है तथा प्रजातांत्रिक सिद्धातों तथा लोगों की सहभागिता के माध्यम से समान हितों वाली वर्तमान समस्याओं को हल करने के बारे में है। लोगों ने इस पद्धति का पहले भी प्रयोग किया है तथा वांछित परिणाम प्राप्त किए हैं। इस प्रकार सामुदायिक संगठन के विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे

विगत वर्षों को समझे इससे सबक लें तथा समुदाय के साथ काम करने के लिए आवश्यक नए मॉडलों (प्रतिमानों) तथा पद्धतियों का विकास और अनुप्रयोग करें।

इस इकाई में हम इंग्लैंड एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में सामुदायिक संगठन का इतिहास पढ़ेंगे तथा भारत में अपनाए जाने वाले सामुदायिक संगठन के बारे में संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करेंगे। अध्याय के बाद के भाग मे हम सामुदायिक संगठन के कुछ प्रतिरूपों (मॉडलों) तथा पद्धतियों का भी अध्ययन करेंगे।

2.2 हमें इतिहास का अध्ययन क्यों करना चाहिए?

हम इतिहास से बहुत कुछ सीखते हैं तथा अनेक सामाजिक–परिवर्तन समूहों ने अनेक अवरोधों का सामना किया तथा कमजोर शुरुआत के बावजूद भी अंततः विजयी हुए। इतिहास हमें स्पष्ट करता है कि धीमी प्रगति का मतलब आशा का अंत नहीं है। अपितु दृढ़ता की शिक्षा देते समय हमें धैर्य प्रदान करता है। विगत में अपनाई गई रणनीतियों के बारे में ठोस पाठ उपलब्ध कराता है, जिसके आधार पर विभिन्न तरीके के प्रत्येक पीढ़ी अपने पूर्वजों के ज्ञान को आगे बढ़ाती है। यह लोगों द्वारा अनुभव की गई समस्याओं तथा उनके द्वारा प्राप्त सफलता के बारे में बताती है।

संक्षेप में, इतिहास हमें समस्याओं तथा परिवर्तन की संभावनाओं के प्रति संवेदनशील बनाता है, वर्तमान में की जाने वाली कार्रवाई के लिए ठोस सुझाव देता है तथा आशा और गर्व के साथ हमारी कार्रवाई को कायम रखता है, जो विगत अनुभवों से सीखने से प्राप्त होता है। इसलिए एक समाज कार्यकर्त्ता के लिए सामुदायिक संगठन के इतिहास का अध्ययन करना अनिवार्य होता है।

2.3 सामुदायिक संगठन

"सामुदायिक संगठन" शब्द के अंतर्गत् सामुदायिक स्तर पर की जाने वाली अनेकों गतिविधियाँ आती हैं इन गतिविधियों का उद्देश्य व्यक्तियों, समूहों तथा पड़ोसियों

को सामाजिक कुशलता में वांछित सुधार लाना है। सतत सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए सामुदायिक संगठन प्रजातांत्रिक व्यवस्था उत्पन्न करना है। मुरे जी रास के अनुसार, "सामुदायिक संगठन एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से समुदाय अपनी आवश्यकताओं को पहचानता है और कार्रवाई करता है तथा ऐसा करते हुए सहायोगी दृष्टिकोण और व्यवहारों को विकसित करता है।''

सामुदायिक संगठन का दर्शन

सामुदायिक संगठन के शुरुआती प्रयास गंभीर समस्याओं जैसे बेरोजगारी, गरीबी आदि के परिणामस्वरूप सामने आए, जिनका समुदायों को सामना करना पड़ा। इस प्रकार समुदाय को सहायता देने के लिए बहुत से संगठन तथा सामाजिक एजेसियाँ बनाई गई। जल्दी ही यह महसूस किया गया कि इन सभी प्रयासों को समन्वित तथा क्रमबद्ध करने की आवश्यकता थी ताकि कार्यों की पुनरावृत्ति रोकी जा सके तथा समुदाय को दी जाने वाली सेवाओं के अंतराल को कम किया जा सके। अध्ययन के अंतर्गत् किसी स्तर पर हम यह पूछ सकते हैं कि इन सभी प्रयासों को चलाने के पीछे कौन–सी शक्ति थी, जिससे ख्याति प्राप्त लोगों को समुदाय की सेवा करने में प्रेरणा मिली? हम सामुदायिक संगठन के दर्शन को देखते हैं, जो इस विषय पर कुछ प्रकाश डाल सकता है:

- सामुदायिक संगठनों का मौलिक पहल "सहयोग की भावना" का सिद्धांत है, जो समान मुद्दे पर लोगों को आपस में एक होने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- सामुदायिक संगठन प्रजातांत्रिक मूल्यों तथा सिद्धांतों की भावना को पहचानता है और लोकतांत्रिक रूप से कार्यक्रम में सम्मिलित होने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- संगठित करने का मतलब सबल बनाना है। जब लोग आपस में एकजुट हो जाते हैं तथा सामुदायिक संगठन में शामिल हो जाते हैं, तो उनमें विश्वास विकसित होता है। यह सबलीकरण तब आता है जब लोग अपने आप तथा

दूसरों की सहायता करने का कौशल सीख लेते हैं। यह सामूहिक कार्रवाई समुदाय बनाने में मदद करता है।

- सामुदायिक संगठन व्यक्ति की शक्ति को पहचानता है। यह विश्वास करता है कि लोगों को सामूहिक शक्ति बेहतर टीम भावना के माध्यम से तथा वैज्ञानिक पद्धतियाँ अपनाकर सामाजिक समस्याओं का व्यापक हल निकाला जा सकता है।
- अन्य दर्शन समन्वय का है। यह सामुदायिक जीवन में सभी के कल्याण के लिए समायोजन तथा आपसी संबंधों की शक्तियों से संबंधित है।
- इसलिए सामुदायिक संगठन एक अनवरत प्रक्रिया है, जिसमें सामुदायिक जीवन की बदलती स्थितियों के साथ गति बनाए रखने के लिए बार–बार समायोजन किए जाते हैं।

2.4 सामुदायिक संगठन का इतिहास

व्यापक अर्थ में, हम कह सकते हैं कि जहाँ कहीं भी लोग साथ–साथ रहे हैं, एक प्रकार का संगठन उत्पन्न हुआ है। लोगों के इस प्रकार के अनौपचारिक संघों ने जरूरत पड़ने तथा समाज के अधिकारों की रक्षा को लिए हमेशा लोगों का भला करने की कोशिश की है इसके विपरीत इतिहास में औपचारिक संगठनों के बारे में बताया गया है, जिन्हें समुदाय के कल्याण के लिए बनाया गया था। सामाजिक कल्याण के लिए सामुदायिक संगठन का सर्वप्रथम प्रयास इंग्लैंड में शुरू किए गए ताकि अत्यंत गरीबी की समस्या, जिसकी वजह से लोगों में भीख मांगना शुरू हुआ उससे निजात पाई जा सके।

इंग्लैंड में इस प्रकार का पहला प्रयास ऐलीजाबेथन गरीब कानून (1601) था, जिसे जरूरतमंदों को सेवाएं देने के लिए बनाया गया था। सामुदायिक संगठन के इतिहास में दसरा महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर 1880 के दौरान धर्मार्थ मदद और भिक्षावृत्ति निरोधक लंदन सोसायटी का बनना तथा इंग्लैंड में अधिवास गृह आंदोलन का उदय था।

तथ्यतः इन आदोलनों का संयुक्त राज्य अमेरिका में बहुत बड़ा असर पड़ा। धर्मार्थ तथा रीलीफ (राहत) सहायता के क्षेत्र में तर्कसंगत व्यवस्था बनाने के लिए 1880 में धर्मार्थ संगठन बनाया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रमुख सामुदायिक संगठन की गतिविधियों को तीन समयावधियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

1) **1870–1917 अवधि के धमार्थ संगठन :** यह युग संयुक्त राज्य अमेरिका में सामाजिक कल्याण की शुरुआत का समय था। संयुत राज्य अमेरिका में पहली शहर में बनी धर्मार्थ संगठन सोसाइटी 1877 में बुफालो में स्थापित हुई थी। यह आंदोलन 1869 में लदन धर्मार्थ संगठन की स्थापना के साथ शुरू हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका में रेव.एस.एच, गुर्टीन, एक अंग्रेज पादरी थे, जो लंदन धर्मार्थ संघ से थोड़े जुड़े हुए तथा 1873 में बुफालो गए थे. उन्होंने इस आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। छह वर्षों के थोड़े से समय में धर्मार्थ संगठन सोसायटी 25 से अधिक अमेरिकी शहरों तक पहुँच गई।

धर्मार्थ संगठन दो विषयों से संबंधित था :

- जरूरतमंद परिवारों तथा व्यक्तियों को पर्याप्त व्यक्तिगत सेवा उपलब्ध कराना।
- सामाजिक कल्याण के मुद्दों/समस्याओं को संशोधित करने के लिए कदम उठाना।

इस सेवा के अलावा धर्मार्थ संगठन सोसायटी ने विभिन्न कल्याण एजेंसियों के बीच सहयोग बढ़ाने की पहल की। धर्मार्थ संगठन के इस आंदोलन से अनेक सेवा देने वाली संगठनों की शुरुआत हुई जैसे सामाजिक सेवा एक्सचेंज, समुदाय कल्याण परिषदें, सामाजिक एजेंसियों की परिषदें।

2) **परिसंघ की उत्पत्ति 1917 से 1935 :** यह वह अवधि है, जिसमें हम चेस्ट तथा परिषदों की वृद्धि और विकास को देख सकते हैं। यह 1917 में युद्ध के बाद चेस्ट की उत्पत्ति से शुरू हुई तथा सामजिक सुरक्षा अधिनियम के

अधिनियमन के बनने के बाद समाप्त हुआ,, जिसने 1935 में सार्वजनिक कल्याण कार्यक्रमों के विकास के लिए एक प्लेटफॉर्म तैयार किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारी संख्या में चेस्ट (Chests) और परिषदें (Councils) बनीं। सामुदायिक संगठन के लिए अमेरिकी संघ को 1918 में चेस्ट तथा परिषदों की राष्ट्रीय एजेंसी के रूप में संगठित किया गया तथा बाद में यह अमेरिका की सामुदायिक चेस्ट और परिषद के रूप में जानी गई। 1917 में स्थापित सिनसिनाटी सार्वजनिक स्वास्थ्य परिसंघ अमेरिकी शहर में पहली स्वतंत्र स्वास्थ्य परिषद थी। यहाँ इसी अवधि में 1921 में अमेरिकी समाज कार्यकर्त्ता संघ का गठन हुआ, यह पहला सामान्य व्यवसायिक संगठन था, जिसने समाज कार्यकर्त्ताओं तथा अन्य के लिए इसके प्रशिक्षण की व्यवस्था की तथा इन्होंने सामुदायिक संगठन में विशेष योग्यता प्राप्त की।

एक सामुदायिक चेस्ट (Chests) स्वैच्छिक कल्याण संस्था है, नागरिकों और कल्याण संस्थाओं का सहयोगी संगठन है, जो सामुदायिक कल्याण के लिए शक्तिशाली स्थानीय ताकत है, जो बड़ी निधियों को संभालती है। इसके दो कार्य हैं। यह समुदाय में अपील के माध्यम से बड़ी–बड़ी निधियाँ एकत्रित करती है तथा प्रणालीबद्ध बजट प्रक्रिया के अनुसार उनका आबंटन करती है। दूसरे यह समुदायों के सामाजिक कल्याण में सहयोगी नियोजन, समन्वय तथा प्रशासन को बढ़ावा देती है।

3) **1935 से वर्तमान समय तक विस्तार और व्यवसायिक विकास की अवधि :** हम देखते हैं कि इसी अवधि में सार्वजनिक कल्याण के क्षेत्र में सामुदायिक संगठन प्रक्रिया का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग हुआ। इस युग की चिन्हित महत्त्व संघीय सुरक्षा एजेंसी की स्थापना है जहाँ हम कल्याण कार्यक्रमों में सरकार की अधिकतम साझेदारी देखते हैं। 1946 में एजेंसी को मजबूती

प्रदान की गई तथा इसे पुनगर्ठित किया गया, जिसके बाद 1953 में इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग स्थापित किए गए।

इस अवधि के दौरान दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य व्यवसायिक विकास है। कुछ महत्त्वपूर्ण व्यवसायिक विकास निम्न थे :

1938–39 में समाज कार्य के राष्ट्रीय सम्मेलन, जिसमें सामुदायिक संगठन पर एक अध्ययन किया गया, जिसे बाद में "सामान्य समुदाय कल्याण संगठन" शीर्षक से प्रकाशित किया गया। इसके आधार पर 1940 में दूसरा अध्ययन हुआ लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका के शामिल होने के कारण एक सक्रिय कार्यक्रम नहीं बनाया जा सका।

वर्ष 1946 में बुफालो में समाज कार्य के राष्ट्रीय सम्मेलन में सामुदायिक संगठन अध्ययन संघ (ए.एस.सी.ओ.) का गठन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य समाज कल्याण के लिए संगठन के व्यवसायिक अमलीकरण को सुधारना था। 1955 में सामुदायिक संगठन अध्ययन संघ का छह अन्य व्यवसायिक संगठनों के साथ सम्मिलित हो करके समाज सेवकों का राष्ट्रीय संघ बनाया गया। सामुदायिक संगठन को समाज कार्य शिक्षा के स्कूलों के अमेरिकी संघ में समाज कार्य शिक्षा के अभिन्न तथा महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में मान्यता दी गई है। वर्तमान में समाज कार्य शिक्षा परिषद की एक सक्रिय समिति सामुदायिक संगठन की अध्यापन सामग्रियों के उत्पादन में लगी हुई है। सामुदायिक संगठन पर तैयार "समाज कल्याण के लिए सामुदायिक संगठन" नामक शीर्षक वाली 1945 में प्रकाशित पहली समकालीन पुस्तक को वेन मैकमिलन द्वारा प्रकाशित किया गया है।

सामुदायिक विकास के इतिहास में दूसरा विकास द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान देखा गया। युद्ध के समय की जरूरतें बहुत विशिष्ट और नाजुक थीं। इस दौरान बहुत–सी परिषदें तथा समुदाय पर आधारित युद्ध सेवाएँ

अग्रणी थी। इनमें संयुक्त सेवा संगठन (यू.एस.ओ.) प्रमुख था क्योंकि यह अनेक बलों की यूनियन थी, जिन्होंने सेना कार्मिकों तथा रक्षा समुदायों की जरूरतें पूरी की । इस अवधि की अन्य ध्यान खींचने वाली विशेषता स्वैच्छिक सेवा जैसे रक्षा परिषद, अमेरिकी रैडक्रास तथा संयुक्त सेवा संगठन में अत्यंत वृद्धि हुई, जिन्होंने स्वयं सेवकों की भर्ती की तथा इन संगठनों तथा स्वयं सेवकों के बीच समन्वय स्थापित किया।

युद्ध के समय जो दूसरा विकास हुआ वह है श्रमिक तथा समाज कार्यकर्त्ता के बीच घनिष्ठ संबंध विकसित हुए, जिन्हें सामुदायिक संगठन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना गया है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जो अन्य विकास हुए तथा जो सामुदायिक विकास के क्षेत्र में बहुत विशिष्ट हैं, वे निम्नलिखित हैं :

- शारीरिक तथा मानसिक रूप से बाधित लोगों का पुनर्वास।
- मानसिक स्वास्थ्य नियोजन, वृद्धों की समस्याएँ
- किशोर अपराध की रोकथाम तथा उपचार

इन मुद्दों को हल करने के लिए अलग निकाय स्थापित किए गए तथा सामुदायिक संगठन के क्षेत्र में हम अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं/संगठनों का प्रवेश देखते हैं। सामुदायिक संगठन के वर्तमान स्थिति में नए सामुदायिक विकास कार्यक्रमों का प्रसार है, जिनका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय समाज कल्याण के लिए कम विकसित क्षेत्रों में सेवा उपलब्ध कराना है। इसलिए वर्तमान कार्यसूची पूरे समुदाय के साथ काम करना है तथा स्वयं सहायता पर ज्यादा जोर देना है।

2.5 यू.के. में सामुदायिक संगठन

बाल्डोक (1974) ने समाज कार्य को चार चरणों में विभक्त करके युनाइटेड किंगडम में ऐतिहासिक विकास का सारांश दिया है :

प्रथम चरण 1880–1920 : इस अवधि के दौरान सामुदायिक कार्य को समाज कार्य एक पद्धति के रूप में देखा गया। लोगों के बीच सामाजिक समायोजन को बढ़ाने के लिए इसे व्यक्तियों की सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया माना गया। इस दौरान स्वैच्छिक एजेसियों के कार्यों में समन्वय स्थापित करने के लिए प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनी भूमिका निभाई।

दूसरा चरण 1920–1950 : इस अवधि में सामाजिक मुद्दों तथा समस्याओं के हल करने के नए तरीके सामने आए। सामुदायिक संगठन केंद्र तथा राज्य सरकार के शहरी विकास कार्यक्रम से काफी नजदीक से जुड़ा रहा। इस अवधि में महत्त्वपूर्ण विकास सामुदायिक संघ आदोलन से इसका साहचर्य रहा।

तीसरा चरण 1950 के बाद : यह पड़ोसी (आपसी) भ्रातृत्व के विचार की प्रतिक्रिया स्वरूप सामने आया, जिसने दूसरे चरण के लिए वैचारिक आधार प्रदान किया। यह अवधि समाज कार्य के व्यवसायिक विकास की थी। ज्यादातर शिक्षाविदों तथा योजनाकारों ने मौजूदा प्रणाली में कमियों का विश्लेषण करने की कोशिश की है। यही वह अवधि भी है जब समाज कार्यकर्त्ताओं ने व्यवसायिक पहचान की तलाश की।

चौथा चरण : यह हाल की अवधि है, जिसमें सामुदायिक कार्य में लगाव की सुस्पष्ट भागीदारी देखी गई है। इसमें सामुदायिक कार्य तथा समाज कार्य के बीच के संबंध पर प्रश्न उठाए। इस अवधि को क्रांतिकारी सामाजिक आंदोलन के रूप में देखा गया तथा हम समुदाय का प्राधिकरण (सत्ता) के साथ संघर्ष देखा जा सका। समाज कार्यकर्त्ताओं तथा समुदाय के बीच के साहचर्य को इस अवधि में व्यवसायीकरण के स्तर से घटाया गया। इस प्रकार इस अवधि में सामुदायिक

कार्य में संघर्ष संबंधी रणनीतियों का समावेश किया गया, यद्यपि अभी तक इस मुद्दे पर एक मत नहीं बन पाया है (बेडलॉक 1974)।

2.6 भारत में सामुदायिक संगठन का इतिहास

भारत में सामुदायिक संगठन के इतिहास का लेखा–जोखा उपलब्ध नहीं है क्योंकि सामान्यतः समाज कार्य साहित्य का सीमित प्रलेखन हुआ है खासतौर से सामुदायिक संगठन का। संयुक्त राज्य अमेरिका में सामुदायिक संगठन की जड़े धर्मार्थ संगठनों में हैं। उन्होंने लोगों की जरूरतें महसूस की तथा लोगों को अपना कार्य समन्वित करने के लिए संगठित करने की कोशिश की। मुख्य गतिविधियाँ सामाजिक कल्याण, निधियाँ एकत्रित करना, सामाजिक कानूनों का अधिनियमन तथा कल्याणकारी गतिविधियों का समन्वय करना था। इन सभी गतिविधियों के पीछे दान की भावना थी। भारत में, परोपकार का विचार हमारे धार्मिक दर्शन के मूल में मौजूद है। भारत में 1937 में समाज कार्य शिक्षा की शुरुआत से भी पहले, सामुदायिक कार्य हो रहा था। परंतु पहले चरण में 1937 से 1952 तक सामुदायिक कार्य सुसुप्तावस्था में था। इस अवधि में समाज कार्य अपने शैशव में था तथा सामुदायिक परिवेशों में ज्यादा लोग नियुक्त नहीं किए गए थे क्योंकि शायद ही कोई काम था, जिसमें सामुदायिक संगठन के द्वारा काम करने की जरूरत थी। व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता केस कार्य के काम करना पसंद करते थे।

1952 में भारत सरकार द्वारा सामुदायिक विकास परियोजना शुरू की गई और इसी के साथ सामुदायिक कार्य के एक नए युग का सूत्रपात हुआ। भारत में सामुदायिक विकास का उद्देश्य ग्रामीण लोगों को उनकी जरूरतों के प्रति जागरूक बनाना, उनके अंदर एक बेहतर जिंदगी की महत्त्वाकांक्षा पैदा करने तथा उन्हें अपने अधिकारों तथा शक्तियों से अवगत कराना था, जिससे लोग अपनी समस्याओं को हल करे सकें। मुखर्जी (1961) के अनुसार, सामुदायिक संगठन एक

आंदोलन है, जिसकी सक्रिय भागीदारी से पूरे समुदाय के लिए बेहतर जीवन स्तर को उन्नतिशील बनाने के लिए परिकल्पित किया जा सके।

डॉ. मुखर्जी के अनुसार, सामुदायिक विकास को दो प्रक्रियाओं में विभक्त किया जा सकता है। (1) विस्तार शिक्षा, (2) सामुदायिक संगठन। विस्तार शिक्षा से मानव के ज्ञान और दाताओं में सुधार करके उनकी गुणवत्ता में प्रत्याशित सुधार लाना था। सामुदायिक संगठन के द्वारा मुखर्जी के विचार से में गाँव में तीन संस्थाएँ स्थापित करना था।

- ग्राम पंचायत
- ग्रामीण सहकारी संस्थाएँ
- ग्रामीण स्कूल

इस अवधि के दौरान सामुदायिक कार्य का जोर ग्रामीण क्षेत्रों में रहा जबकि समाज कार्य अधिकतर शहरी चरित्र का था।

हम 1970 से व्यवहारिक सामुदायिक कार्य में एक नया प्रचलन देख सकते हैं। समाज कार्यकर्त्ताओं ने अपने पारंपरिक कार्य विषय से हट कर अपना विषय क्षेत्र और कार्य संचालन परंपरागत केस कार्य के दायरे से अन्य विकासात्मक क्षेत्रों की तरफ बढ़ाया। उदाहरण के लिए स्कूल के बच्चों के साथ काम करने वाले लोगों ने समुदाय के साथ काम करना शुरू कर दिया। गैर–सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) तथा स्वैच्छिक संगठनों ने सामुदायिक संगठन की पद्धतियों को अपनाया। इस झुकाव से वास्तव में सामुदायिक कार्य की प्रक्रिया का उपयोग शुरू हुआ। बहरहाल, सामुदायिक कार्य कल्याण की तरफ ही उन्मुख रहा।

भारत में सामुदायिक कार्य का वर्तमान चरण अपने व्यवहारिक पद्धति से बढ़ा हुआ असंतोष महसूस कर रहा है न कि अपने अमलीकृत परिणामों से इसलिए समुदायों के साथ काम करने की वैकल्पिक प्रविधियों को उत्पन्न करने के प्रयास जारी हैं।

इस बावजूद पेशेवर लोग ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में समुदाय के लिए बेहतर जीवनयापन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न परियोजनाओं में भागीदार रहे हैं।

सामुदायिक कार्य में अपने पड़ोस में कल्याण कार्यों को प्रोत्साहित करने में व्यापारिक घरानों का शामिल करने की एक प्रवृत्ति के रूप में सामने आया है। आमतौर पर इसे कारपोरेट सामाजिक दायित्व (सी.एस.आर.) के रूप में जाना जाता है। व्यापारिक घरानों जैसे टाटा, एस्कार्टस् तथा कुछ अन्य बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी इस साहसिक कार्य से जुड़ गए हैं। इस लगाव के प्रचलन ने इस क्षेत्र में अनेक व्यवसायिकों को आकर्षित किया है।

सामुदायिक विकास का मुख्य उद्देश्य, उन पद्धतियों से ग्रामीण समुदायों का विकास करना है, जो ग्रामीणों को अपने वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए जरूरी कार्य को खुद करने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित और सहायता प्रदान करेगा। विचार किए गए और बढ़ावा दिए गए, परिवर्तनों में लोगों की भागीदारी होनी चाहिए तथा वे उन्हें स्वीकार्य होने चाहिए तथा हम उनके द्वारा ही अमलीजामा पहनाएँ।

सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास के बीच एक सामान्य दार्शनिक सम्पर्क है। दोनों का लक्ष्य, लोगों को प्रसन्नतापूर्वक जीने और पूरी तरह विकसित जीवन जीने योग्य बनाना है। दोनों को आम आदमी तथा समाज के ढाँचे के भीतर स्व–निर्धारण के उसके अधिकार में मूल रूप से विश्वास है। दोनों अपनी मदद–खुद तथा लोगों द्वारा अपनी समस्या का हल निकालने के लिए लोगों की सहायता करके स्वयं अपनी सहायता पर जोर देते हैं। फिर भी, सामुदायिक संगठन और सामुदायिक विकास को पर्याय नहीं समझा जाना चाहिए।

- सामुदायिक विकास ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सहित जीवन के सभी पहलुओं में उन्नति से संबंधित है जबकि सामुदायिक संगठन शहरों, राज्यों, राष्ट्रों तथा गाँवों में सामाजिक

कल्याण की आवश्यकताओं तथा संसाधनों के बीच समायोजन से संबंधित है।

- संयुक्त राज्य अमेरिका में सामुदायिक संगठन को स्वैच्छिक आधार पर कार्य रूप में परिणत किया जाता है जबकि लगभग सभी विकासशील देशों में सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम हैं।
- सी.ओ. शहरीकरण और औद्योगीकरण का परिणाम है। यहाँ पर चिंता का मुख्य कारण जनसंख्या की गतिशीलता, परिवार, वृद्धों, किशोर अपराध, बेरोजगारी तथा सामाजिक सुरक्षा के प्रावधानों से संबंधित समस्याएँ हैं। लेकिन सामुदायिक विकास सी.डी. इससे संबंधित है कि कैसे लोगों को अपनी मूल मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने को लिए प्रेरित किए जाए।
- सामुदायिक संगठन में प्रक्रिया अभिमुख होने की प्रवृत्ति ज्यादा रहती है जबकि भारत में कार्यान्वित की जा रही सामुदायिक विकास लक्ष्य अभिमुख होने की प्रवृत्ति रखता है।

2.7 सामुदायिक कार्य के लिए गांधीवाद का दृष्टिकोण

गांधी जी ने समुदाय शब्द की स्पष्ट परिभाषा नहीं दी है। उनके लिए अपनी भौगोलिक सीमाओं सहित गाँव मूल समुदाय है जहाँ अनेक परिवार साथ रहते हैं तथा एक समान जीवन को सफल बनाने के लिए आपस में सहयोग करते हैं। गांधी जी के अनुसार, किसी समुदाय का मूल तत्त्व आपसी सहयोग तथा सभी की भागीदारी है।

सामुदायिक कार्य के गांधीवादी विचार का जोर असंगठित या विसंगठित समुदाय को संगठित करने या पूरी तरह एक नए समुदाय के विकास की अपेक्षा समुदाय के पुनः निर्माण पर है। इसलिए सामुदायिक कार्य का गांधीवादी उद्देश्य पूरे देश में फैले ग्राम समुदायों का पुनः निर्माण है। यह निर्माण 19 विषयों के रचनात्मक कार्यक्रमों पर आधारित है। जिनको समुदाय की समाज कल्याण संबंधी

आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिचित किया गया है। ग्रामीण समुदाय के निर्माण द्वारा गांधी जी ने ''सर्वोदय सामाजिक व्यवस्था'' के पुनर्निर्माण का अपना अंतिम लक्ष्य प्राप्त करने का उद्देश्य पूरा किया। गांधीजी ने पनर्निर्माण कार्यक्रम के लिए कोई खास या निर्धारित प्रतिमान स्थापित नहीं किया अपित इसे उन सामुदायिक संगठनकर्त्ताओं की क्षमता पर छोड़ दिया, जो विभिन्न स्थितियों तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप कार्य कर रहे हैं।

इस दृष्टिकोण के अंतर्गत् कार्यकर्त्ता की भूमिका विशिष्ट होती है। यहाँ, कार्यकर्त्ता का सम्पर्क केवल उन्हीं लोगों के समूह या समुदायों से नहीं होता, जिन्हें उसके मार्गदर्शन की तलाश होती है बल्कि उन समुदायों से भी उसको सम्पर्क साधना होता है, जो उससे मदद के लिए नहीं कहते क्योंकि उसका मुख्य कार्य कहीं भी समाज का पुनर्निर्माण करना है। इस दृष्टिकोण से कार्यकर्त्ता पहल करता है और धीरे–धीरे समुदाय को प्रेरित करता है। यह कार्य क्षेत्र में किए जाने वाले पुनर्निर्माण कार्यक्रम में कार्यकर्त्ता की नियमितता और गंभीरता की माँग करता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक संगठन के संबंध में गांधीवादी दृष्टिकोण पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 सामुदायिक संगठन के प्रतिरूप (मॉडल)

प्रतिरूप (मॉडल) क्या है?

विभिन्न पद्धतियों तथा सामुदायिक संगठन के मॉडलों को समझने का प्रयास करने से पूर्व यह अच्छा होगा कि शब्दावली को समझ लिया जाए कि एक मॉडल क्या है?

प्रतिरूप

प्रतिरूप एक माध्यम है, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति जटिल या कठिन वास्तविकताओं को देखता है। प्रतिरूप, किसी जटिल परिस्थिति की सरल व्याख्या है। मॉडल कार्य के संदर्भ के रूप में काम करते हैं तथा क्या होगा इसकी हमें स्पष्ट समझ देते हैं। वे दृष्टि (परिप्रेक्ष्य) को मूर्त रूप देने के लिए रणनीतियों, वहाँ तक पहुँचने के लिए किए जाने वाले उचित उपाय बताते हैं। कुछ मॉडल की विशिष्ट विचारधाराओं में परिवर्तन के कारण तथा कुछ ठोस परिस्थितियों के जबाव में विकसित किए जाते हैं।

जैक रोथमैन ने सामुदायिक संगठन के तीन निम्न मूल मॉडल बताए हैं :

- स्थानीय विकास
- सामाजिक नियोजन
- समाज कार्य

1) **प्रतिरूप-क - स्थानीय विकास :** स्थानीय विकास मॉडल सामुदायिक समूहों के साथ काम करने की पद्धति है। पहले इन्हें आवास गृहों द्वारा प्रयोग किया जाता था। इसमें महत्त्वपूर्ण फोकस समुदाय निर्माण प्रक्रिया है। नेतृत्व विकास तथा भागीदारों की शिक्षा इस प्रक्रिया में अनिवार्य तत्त्व है।

मुरे रास के अनुसार, "स्वयं की सहायता तथा साम्प्रदायिक कार्रवाई की प्रक्रिया अपने निजी अधिकार में बहुमूल्य है।" स्थानीय विकास का मॉडल इस विशिष्ट विचार प्रक्रिया पर आधारित है। यह पारंपरिक सामुदायिक संगठन के अमलीकरण से उत्पन्न हुई है। इस मॉडल का मुख्य केंद्र बिंदु पूरा समुदाय या इसका एक भाग है। इसका बुनियादी विश्वास यह है कि समुदायों की कुछ समान आवश्यकताएँ और स्वार्थ होते हैं और एक बार लोग इस आवश्यकता को महससू करते हैं तथा प्रजातांत्रिक रूप से साथ–साथ काम करते हैं तो वे जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लिए उचित कदम उठा सकते हैं।

यहाँ सामुदायिक के संगठनकर्त्ता की भूमिका समुदाय में लोगों की भागीदारी को बढ़ाना और समस्या का समाधान नियोजित करने तथा हल ढूंढने में समुदाय के सदस्यों की मदद करना है। यह सामुदायिक विकास के काम को समग्र की तरह मानते है, जिसे अविकसित देशों में किया जाता है।

जब कोई कार्यकर्त्ता या एजेंसी किसी परिभाषित क्षेत्र में निर्दिष्ट लक्ष्य की जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न योजनाएँ और कार्यक्रम विकसित करने का प्रयास करता है तो यह सामुदायिक संगठन के व्यवहारिक रूप से संदर्भित है। यह उन विभिन्न एजेंसियों के काम के समन्वय को भी शामिल करती है, जो इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सेवा उपलब्ध करा रही है।

2) **प्रतिरूप-ख - सामाजिक नियोजन :** इसका आशय, उस प्रकार के सामुदायिक कार्य से है जहाँ कोई कार्यकर्त्ता या एजेंसी इस क्षेत्र में कल्याण संबंधी आवश्यकताओं तथा मौजूदा सेवाओं का मूल्यांकन करने के लिए एक अभ्यास करता है तथा अधिक दक्ष सेवाएँ प्रदान करने के लिए एक संभावित रूपरेखा सुझाता है तो उसे सामाजिक नियोजन कहा जाता है। यह सामाजिक समस्या है – उदाहरण के लिए, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, बच्चों की देखरेख आदि से संबंधित है। इसका उद्देश्य बड़ी जनसंख्या को प्रभावित करना है। सामुदायिक योजनाकार इस स्थिति में सरकार के साथ काम करता है तथा समुदाय के शक्ति संरचना से अक्सर इसकी पहचान होती है। परंतु मूलरूप से वह समुदाय की आवश्यकताओं तथा रुझानों में रुचि रखता है तथा उन्हें अपने भविष्य की योजना बनाने में सहायता करता है।

3) **प्रतिरूप-ग - समाजिक कार्य :** फ्रायड लैंडर, डब्ल्यू.ए. (1963) के अनुसार, "सामाजिक कार्रवाई सामाजिक कार्यदर्शन तथा व्यवहार ढाँचे के भीतर एक व्यक्तिगत, सामूहिक या सामुदायिक प्रयास है, जिसका उद्देश्य सामाजिक प्रगति करना, सामाजिक नीतियों को रूपांतरित करना तथा सामाजिक कानूनों तथा स्वास्थ्य और कल्याण सेवाओं को सुधारना है।" रॉथमैन द्वारा सुझाया गया सामुदायिक संगठन का दूसरा प्रतिरूप, सामाजिक कार्रवाई का है। इसके अनुसार, समाज कार्य एक ऐसी रणनीति है, जिसे उन समूहों या उप–समुदायों या यहाँ तक कि राष्ट्रीय संगठनों द्वारा प्रयोग किया जाता है, जो महसूस करते हैं कि अपनी आवश्यकताएं पूरी करने को लिए उसके पास अपर्याप्त शक्ति तथा संसाधन हैं। इसलिए असमानताओं तथा वंचन से संबंधित अपने मुद्दों को हल करने के लिए संघर्ष को एक पद्धति के रूप में प्रयोग करते हुए शक्ति संरचना से टकराव करते हैं।

इस प्रकार के सामुदायिक संगठन में सामुदायिक संगठनकर्त्ता अपनी माँगों को मनवाने के लिए शक्तिगत ढाँचे पर दबाव बनाने के लिए सभी तरीके इस्तेमाल करता है। संगठनकर्त्ताओं की भूमिका अलग–अलग हो सकती है, जो इस बात पर निर्भर करती है कि वे किस प्रकार के मुद्दों में शामिल हैं। यह भूमिका एडवोकेट, सक्रिय कार्यकर्त्ता, आंदोलनकारी, मध्यस्थ या वार्ताकार की हो सकती है। यह एक प्रक्रिया है। यह संगठन प्रक्रिया विभिन्न अवस्थाओं के माध्यम से गुजरती है। इसलिए संगठनकर्त्ता की भूमिका उसके द्वारा प्रत्याशित भूमिकाओं के अनुसार परिवर्तित हो जाती है, जो सामाजिक परिस्थितियों के बदलने पर निर्भर करती है।

इस मॉडल को आमतौर पर 1960 के दशक के दौरान प्रयोग किया गया था। इसे राष्ट्र की सामाजिक समस्याओं को हल करने, संसाधनों के पुनर्वितरण तथा गरीबों और कमजोर वगों को शक्ति प्रदान करने के साधन के रूप में प्रयोग किया गया था। मॉडल के रूप में समाज कार्य की सामुदायिक संगठन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

रॉथमैन (1979) द्वारा दिये गए प्रतिरूपों का एक तुलनात्मक विवरण

तुलनाओं के पहलू	स्थानीय विकास	सामाजिक नियोजन	समाज कार्य
लक्ष्य	अपनी सहायता स्वयं तथा सामान्य एकीकरण	मौलिक सामुदायिक समस्याओं को हल करना	शक्ति तथा संसाधन में बदलाव
प्रजातांत्रिक मान्यताएँ	समाज में गतिशील संबंधों तथा समस्या का हल निकालने की क्षमता में कमी होती है।	मूलभूत मौजूद समस्याएँः गरीबी, निरक्षरता तथा बेरोज़गारी	जनसंख्या/समाज को हानि, अन्याय तथा असमानता
रणनीति	समस्याओं के निर्धारण तथा निराकरण में समुदाय के बड़े भाग को शामिल होना।	तथ्य एकत्रित करने वाला, तर्कसंगत निर्णय लेने वाला, प्रभावी कार्रवाई करने वाले कार्य की दिशा	लक्ष्य के विरूद्ध कार्रवाई करने के लिए लोगों को संगठित करना
पद्धतियाँ	आम राय बनाने के लिए विभिन्न समूहों में	आम सहमति बनाना या संघर्ष के लिए	सीधी कार्रवाई आपसी वार्ता, टकराव के

	सामुदायिक संबंधों को सुधारना	प्रेरित करना	माध्यम से संघर्ष को प्रेरित करना
एजेंसी के प्रकार	आवास गृह	कल्याण परिषदें	सामाजिक आंदोलन
एजेंसियाँ	उपभोक्ता संघ	योजना निकाय	

स्रोत : रॉथमैन (1979)

2.9 सामुदायिक संगठन का दृष्टिकोण

इतिहास सामुदायिक संगठन के विविध प्रयासों तथा इस क्षेत्र में नए आयामों की साक्षी है। ज्यादातर सामुदायिक संगठन के प्रयास पहचान संबंधी तथा मुद्दा आधारित समुदायों पर आधारित रहे हैं। इतिहास से हमें विभिन्न प्रकार के सामुदायिक संगठन पद्धतियों की सूची मिलती है। बीसवीं सदी में जिस सामुदायिक संगठन पद्धति को देखा गया वह है "पड़ोसी संगठन" की उत्पत्ति।

पड़ोस संगठन

पड़ोसी संगठन सामुदायिक संगठन का एक प्रकार है। दैनिक समस्याओं को हल करना तथा जरूरतमंदों की मदद करने के लिए समुदाय द्वारा किए जाने वाले प्रयास के अलावा कुछ और नहीं है

पड़ोस संगठित करने के तीन तरीके हैं :

1) समाज कार्य का दृष्टिकोण

2) राजनैतिक सक्रियवादियों का दृष्टिकोण

3) पड़ोस का संरक्षण/सामुदायिक विकास दृष्टिकोण

1) **समाज कार्य का दृष्टिकोण :** इस दृष्टिकेण के अनुसार समाज को एक सामाजिक अंग के रूप में देखा जाता है और इसलिए प्रयास सामुदायिक भावना बनाने की दिशा में होते हैं। समुदाय का संगठनकर्त्ता, जिसकी भूमिका एक "सक्षम बनाने वाले या अधिवक्ता" की है, पड़ोस की समस्या का

पहचान करने में समुदाय की मदद करता है तथा मौजूदा सामाजिक सेवाओं को एकत्रित करके तथा पड़ोस की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सत्ता में मौजूद लोगों को प्रभावित करके जरूरी सामाजिक संसाधनों को प्राप्त करने की भरसक कोशिश करता है। यह पद्धति ज्यादातर "एकमत" संबंधी है तथा पड़ोसियों को सामूहिक अनुयायी गण के रूप में देखा जाता है। इस तरीके का उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका में सामाजिक व्यवस्था आंदोलन तथा 1960 में जॉनसन प्रशासन की गरीबी के खिलाफ लड़ाई के कार्यक्रमों के समान हैं।

2) **राजनीतिक सक्रियतावादियों का दृष्टिकोण :** साउल एलिंस्की सामुदायिक संगठन के जनक ने यह तरीका खोजा है। वे 1930 में सामुदायिक संगठनकर्त्ता के रूप में सामने आए। इस तरीके का मूल दर्शन इस सोच पर आधारित था कि ''संगठन में जितने अधिक प्रतिनिधि होंगे संगठन उतना ही मजबूत होगा।''

इस तरीके में समुदाय को एक राजनीतिक तत्त्व के रूप में देखा गया न कि एक सामाजिक अंग के रूप में। पड़ोसी को संभावित शक्ति के आधार रूप में देखा गया है, जो शक्ति प्राप्त करने में सक्षम है। सामुदायिक संगठन की भूमिका शक्ति के संदर्भ में समुदाय को अपनी समस्या समझने में मदद करना है तथा समुदाय को संगठित करने के लिए आवश्यक कदम उठाता है। पड़ोसी की समस्या हमेशा शक्ति न होने के रूप में पहचानी जाती है तथा पड़ोस के लिए अधिकार पाने के लिए संगठनकर्त्ताओं को समूहों से संघर्ष नीहित, स्वार्थों तथा सभ्रांत लोगों से होने वाले संघर्षों का सामना करना पड़ता है। चूँकि ज्यादातर सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय के बाहर से आते हैं, इसलिए इन्हें समुदाय में शक्ति संबंधों, असमानता तथा नेतृत्व की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सामुदायिक संगठन के समाज कार्य वाले तरीके के विपरीत ''शक्ति के समान शक्ति का प्रयोग'' पड़ोसियों का स्थायी, लोकतांत्रिक और प्रभावशाली संगठन का निर्माण करते हैं।

3) **पड़ोसी संरक्षण/सामुदायिक विकास का दृष्टिकोण :** यह ढंग पिछले दोनों प्रकार से उत्पन्न हुआ है, जिसका नाम एक ही पड़ोसी आंदोलन में दिया गया है। इसे नागरिक संघ के रूप में देखा गया है। यह संघ समुदाय में सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए समकक्ष समूह के दबाव का प्रयोग करता है। वे समुदाय को सेवाएँ देने के लिए अधिकारियों पर दबाव बनाने की कार्यनीति को अमल में लाते हैं लेकिन कभी–कभी यह तरीका राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं की शक्ल ले लेता है क्योंकि वे महसूस करते हैं कि केवल टकराव के माध्यम से ही अपने लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

इस तरीके में हम विरोध तथा टकराव पर जोर न देने की विशेषताएँ देखते हैं तथा ये संगठन अपने आपको ज्यादा सक्रिय तथा विकासात्मक सोच वाला मानते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) रॉथमैन द्वारा दिए गए सामुदायिक संगठन के प्रतिरूपों (मॉडलों) पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.10 सारांश

इस इकाई में हमने समाज कार्य की पद्धति के रूप में सामुदायिक संगठनों के इतिहास के बारे में चर्चा की है। हमने देखा है कि कैसे पश्चिम में वंचित समुदायों की जीवन स्थिति को सुधारने के लिए समाज सुधारकों तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के शुरुआती प्रयास धीरे धीरे औपचारिक समाज कार्य पद्धति बनें। महात्मा गांधी के योगदान पर जोर देते हुए भारतीय अनुभव पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। हमने यह भी देखा है कि सामुदायिक संगठन के विभिन्न प्रकार हैं, जिन्हें सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए चुना जा सकता है। रॉथमैन के स्थानीय विकास, सामाजिक योजना बनाना तथा समाज कार्य नामक सामुदायिक संगठन के प्रतिरूपों (मॉडलों) की विस्तार से चर्चा की गई है तथा इसमें अंतर की मूल बातें बताई गईं हैं।

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर्थर डनहम (1958), कम्यूनिटी वेल्फेयर आर्गेनाइजेशन – प्रिंसिपल्स एंड प्रेक्टिस थॉमस वाई क्रेविल कंपनी, न्यूयार्क।

दयाल परमेश्वरी (1986), गांधीयन अप्रोच टू सोशल वर्क, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।

मरे रास (1955), कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन – थ्योरी एंड प्रिंसिपल्स, हार्पर ब्रदर्स, न्यूयार्क।

लिपिट रोनाल्ड, जे. वाटसन तथा बी. वेस्टली (1958), द डाइनेमिक्स ऑफ प्लांड चेंज ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ प्रिंसिपल्स एंड टैक्नीक हर्कीट ब्रेस एंड कम्पनी, न्यूयार्क।

सिद्दीकी, एच.वाई. (1997), वर्किंग विद कम्यूनिटीज एन इन्ट्रोडक्शन टू कम्यूनिटी वर्क हीरा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

स्टाइनर फ्रेडरिक जेसी (1958), कम्यूनिटी आर्गेनाइजेशन, द न्यू सेंचुरी कंपनी, न्यूयार्क।

वाल्टर ए. फ्रेंड लेडर एंड राबर्ट जेड (1982), आप्टे : इन्ट्रोडक्शन टू सोशल वेल्फेयर, प्रेंटिस हॉल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) गांधीजी के अनुसार, भौगोलिक सीमाओं सहित गाँव एक मूल समुदाय है जहाँ अनेक परिवार एक साथ रहते हैं और समान जीवन बनाने के लिए एक दूसरे का सहयोग करते हैं। समुदाय का मूल तत्त्व आपसी सहयोग तथा सबकी भागीदारी है। सामुदायिक संगठन के गांधीवादी विचार का जोर समुदाय के पुनर्गठन पर है। इसलिए गांधीवादी सामुदायिक संगठन का उद्देश्य उन ग्राम समुदायों का पुनर्निर्माण करना हो, जो पूरे देश में फैले हुए हैं। यह निर्माण 19 मुद्दों के क्रमिक कार्यक्रम पर है, जिसे समुदाय की समाज कल्याण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है। ग्राम समुदायों के निर्माण के माध्यम से गांधीजी ने पुनर्निर्माण 'सर्वोदय',

'सामाजिक व्यवस्था', अर्थात् 'एक और सभी का कल्याण' हासिल करने के लक्ष्य को अपना उद्देश्य बनाया।

इस विचार में कार्यकर्त्ता की भूमिका बहुत भिन्न है। यहाँ कार्यकर्त्ता केवल उन्हीं लोगो के समूह या समुदायों के साथ काम नहीं करता, जो उसके मार्गदर्शन में आना चाहते हैं बल्कि समुदाय के उन व्यक्तियों या समूहों से भी सम्पर्क बनाए रखता है, जो उससे सहायता के लिए नहीं कहते हैं, उसका प्रमुख कार्य पूरे समाज का पुनर्निर्माण है। इस सोच में कार्यकर्त्ता पहल करता है तथा धीरे–धीरे सारे समुदायों को प्रेरित करता है क्योंकि वह सभी समुदायों की प्रगति में समान रूप से रुचि रखता है।

बोध प्रश्न II

1) जैक रॉथमैन ने सामुदायिक संगठन के तीन निम्न मूल प्रतिरूप (मॉडल) बताए हैं

- स्थानीय विकास
- सामाजिक नियोजन
- समाज कार्य

a) मॉडल क – स्थानीय विकास : स्थानीय विकास मॉडल सामुदायिक समूहों के साथ काम करने की एक पद्धति है। महत्त्वपूर्ण फोकस समुदाय निर्माण की प्रक्रिया पर रहता है। नेतृत्व विकास भागीदारों की शिक्षा इस प्रक्रिया में अनिवार्य तत्त्व है। मरे रास के अनुसार ''स्वयं सहायता तथा साम्प्रदायिक कार्य की प्रक्रिया अपने अधिकार क्षेत्र में बहुमूल्य है।'' स्थानीय विकास का मॉडल इस खास विचार प्रक्रिया पर आधारित है। यह पारंपरिक सामुदायिक संगठन के अमलीकरण से उत्पन्न होता है। इस मॉडल का मुख्य केंद्र बिंदु पूरा समुदाय या इसका कोई अंग होता है। आधारभूत विश्वास यह है कि समुदायों की कुछ सामान्य आवश्यकताएँ तथा स्वार्थ होते हैं तथा जब एक

बार लोग इस आवश्यकता को महसूस करते हैं तथा प्रजातांत्रिक रूप से साथ–साथ काम करते हैं तो वे जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लिए उपयुक्त कदम उठाते हैं।

b) **मॉडल ख – सामाजिक नियोजन** : इसका आशय इस प्रकार के सामुदायिक कार्य से है, जिसमें कोई कार्यकर्त्ता या एजेंसी किसी क्षेत्र में कल्याण संबंधी आवश्यकताओं तथा मौजूदा सेवाओं का एक आकलन करता है तथा ज्यादा से ज्यादा सक्षम सेवाएँ देने के लिए एक रूपरेखा बनाता है, इसे सामाजिक नियोजन कहा जाता है। यह सामाजिक समस्याओं – आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल आदि से संबंधित होता है। इसका उद्देश्य काफी बड़ी जनसंख्या को प्रभावित करना है।

c) **मॉडल ग – सामाजिक कार्य** : रॉथमैन द्वारा सुझाया गया सामुदायिक संगठन का अन्य मॉडल सामाजिक कार्रवाई का है। उसके अनुसार सामाजिक कार्रवाई एक ऐसी रणनीति है, जिसे उन समूहों या उप–समुदायों या राष्ट्रीय संगठनों द्वारा अमल में लाया जाता है, जो यह महसूस करते हैं कि अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए उनके पास अपर्याप्त शक्ति तथा संसाधन हैं। इसलिए वे असमानताओं तथा वंचनाओं से संबंधित अपने मुद्दों को हल करने के लिए संघर्ष को एक पद्धति के रूप में प्रयोग करते हुए सत्ता के ढाँचे से टकराते हैं। इस प्रकार के सामुदायिक संगठनों में सामुदायिक संगठनकर्त्ता अपनी माँग पूरी कराने को लिए सत्ता के ढाँचे पर दबाव डालने के सभी तरीके अपनाता है। संगठकों की भूमिका बदल सकती है, जो इस पर निर्भर है कि वे किन मुद्दों में शामिल हैं। यह भूमिका, वकील, सक्रिय कार्यकर्त्ता, आंदोलनकर्त्ता, मध्यस्थ या वार्ताकार की हो सकती है। यह संगठन प्रक्रिया विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरती है। इसलिए संगठनकर्त्ता की भूमिका प्रत्येक अवस्था में उसकी प्रत्याशित भूमिका के अनुसार बदल जाती है।

इस प्रतिरूप को आमतौर पर 1960 के दौरान प्रयोग किया गया था। इसको राष्ट्र की सामाजिक समस्याओं को दूर करने, संसाधनों को पुनः आवंटित करने तथा गरीब और कमजोर वर्गों को शक्ति प्रदान करने के लिए साधन के रूप में प्रयोग किया गया है। सामुदायिक संगठन में समाज कार्य की एक प्रतिरूप के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 समाज कार्य की प्रणाली के रूप में सामुदायिक संगठन

*डॉ सी.एम.जे. बॉस्को

रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 सामुदायिक संगठन वृहत् पद्धति के रूप में

3.3 सामुदायिक संगठन – समस्या निराकरण पद्धति के रूप में

3.4 सामुदायिक विकास के लिए सामुदायिक संगठन की प्रासंगिकता

3.5 सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास में अंतर

3.6 समुदाय के अंदर व्यक्तियों, परिवारों तथा समूहों के साथ कार्य करना

3.7 शक्ति की अवधारणा और आयाम

3.8 सामुदायिक संगठन में शक्ति की प्रासंगिकता

3.9 सशक्तिकरण में व्यवधान

3.10 सारांश

3.11 शब्दावली

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

* डॉ. सी.एम.जे. बॉस्को, सेक्रेड हर्ट कॉलेज, तिरूपत्तुर

3.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य, समुदायों के साथ समाज कार्यों अंतःक्षेप को सीखना तथा समाज कार्य की एक पद्धति के रूप में सामुदायिक संगठन को समझना है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- सामुदायिक संगठन को समाज कार्य की पद्धति के रूप में जान सकेंगे;
- सामुदायिक विकास के लिए सामुदायिक संगठन का सार्थकता समझ सकेंगे;
- सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास में अंतर कर सकेंगे;
- समुदाय में शक्ति की अवधारणा को ज्ञात कर सकेंगे;
- सामुदायिक संगठन में शक्ति की सार्थकता को समक्ष सकेंगे;
- सबलीकरण (सशक्तिकरण) की अवधारणा का ज्ञान हो सकेगा; और
- सशक्तिकरण में आने वाले व्यवधानों की पहचान कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

सामुदायिक संगठन समाज कार्य की मूल पद्धतियों में से एक है। इसका संबंध सामुदायिक समस्याओं के समाधान के लिए अंतःक्षेप से है। समाज कार्य पद्धति के रूप में सामुदायिक संगठन समुदाय के अनेक लोगों की समस्याओं का समाधान उनके सामूहिक सहयोग एवं लगाव के आधार पर कर सकता है। सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास एक ही सिक्के के दो पहलूओं के रूप में परस्पर संबंधित हैं। सामुदायिक संगठन में समाज कार्य का अन्य पद्धतियाँ अर्थात् समूह कार्य एवं केस कार्य घटना शामिल हैं। समुदाय के अंतर्गत् शक्ति की संरचना सामुदायिक संगठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। समाज कार्यकर्त्ताओं को जानने की आवश्यकता है। सामुदायिक संगठन पद्धति जिसका इस्तेमाल लोगों को

उनके विकास हेतु सशक्त करते समय किया जाता है। समाज कार्य विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक संगठन पद्धति को प्रभावी बनाने तथा इसे सविस्तार समझने के लिए इस इकाई में उपलब्ध कराए गए हैं।

3.2 सामुदायिक संगठन : वृहत् पद्धति के रूप में

सामुदायिक संगठन को समाज कार्य पद्धति में वृहत् पद्धति के रूप में अमलीकरण के लिए माना जाता है। आर्थर ई. फिंक (Arthur E. Fink)। इसको सामुदायिक समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रयोग किया जाता है। व्यापक (Macro) शब्द का प्रयोग इसलिए किया जाता है क्योंकि सामाजिक समस्याओं का समाधान करने के लिए इसमें अधिकतम लोगों को शामिल करने की क्षमता है। सामुदायिक संगठन एक वृहत् पद्धति है क्योंकि इस पद्धति का प्रयोग समुदाय में स्थानीय स्तर या राज्य के स्तर या समुदाय के क्षेत्रीय स्तर और यहाँ तक कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलतापूर्वक किया जा सकता है। उदाहरणार्थ – सामुदायिक संगठन स्थानीय, राज्य, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदूषण नियंत्रण में सहायता कर सकता है। केस कार्य (case work) जोकि एक समय में केवल एक व्यक्ति के साथ काम करता है या समूह कार्य, जोकि सीमित संख्या में सहभागियों के साथ कार्य करता है, इसकी तुलना में सामुदायिक संगठन एक व्यापक पद्धति के रूप में एक ही समय में अधिक संख्या में लोगों से व्यवहार करता है। उदाहरणार्थ – गरीबी से अनेक लोग प्रभावित होंगे, अतः केस कार्य की तरह व्यक्तिगत दृष्टिकोण के प्रयोग द्वारा गरीबी का समाधान नहीं किया जा सकता। जहाँ पर समस्या खतरनाक है वहाँ व्यक्तिगत उपगम व्यवहारिक नहीं है। ऐसे मामलों में हमें एक ऐसी पद्धति प्रयोग करनी है, जिससे अधिकाधिक लोगों को सहायता मिल सके। गरीबी जैसी व्यापक आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान में अन्य समाज कार्य की पद्धतियों की तुलना में सामुदायिक संगठन एक व्यापक पद्धति के रूप में ज्यादा लाभदायक है।

3.3 सामुदायिक संगठन – समस्या निवारण पद्धति के रूप में

सामुदायिक संगठन पद्धति में समुदाय मुवक्किल होता है। सामुदायिक संगठन के द्वारा समुदाय की समस्याएँ दूर की जाती हैं तथा समुदाय की आवश्यकताएँ पूरी की जाती हैं। सामाजिक अन्याय, गरीबी, अपर्याप्त आवास, कुपोषण, अस्वस्थता, चिकित्सा सेवाओं का अभाव, बेरोजगारी, प्रदूषण, शोषण, बंधुआ मजदूर प्रणाली, अवैध ताड़ी, दहेज प्रथा, महिला–शिशु हत्या, महिलाओं तथा बच्चों के अवैध व्यापार, मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार आदि जैसी अनेक सामुदायिक समस्याओं का समाधान सामुदायिक संगठन की पद्धति के द्वारा किया जा सकता है। समस्या का समाधान करने में मुख्यतः तीन मूल अवधारणाएँ हैं। ये अध्ययन, निर्धारण तथा उपचार हैं। पहले समस्या का अध्ययन किया जाता है। इसके लिए हमें समस्या से संबंधित सूचना इकट्ठी करनी होती है। संग्रह की गई सूचना के आधार पर इसके मुख्य कारणों का पता लगाया जाता है। इसे निर्धारण करना कहते हैं। निष्कर्षों या निर्धारण के आधार पर एक समाधान निकाला जाता है, जिसे उपचार कहते हैं। हम इस प्रतिरूप (मॉडल) को चिकित्सीय प्रतिरूप (मॉडल) कहते हैं क्योंकि डॉक्टर पहले बीमारी के कारण जानने के लिए रोगी के बारे में जानकारी (अध्ययन) लेता है तथा निष्कर्षों के आधार पर उपचार या दवाइयाँ दी जाती हैं। ऐसे मॉडल का प्रयोग सामुदायिक संगठन पद्धति में भी प्रयोग किया जा सकता है। समस्याओं का समाधान लोगो के लगाव एवं सहयोग से ही हो सकता है क्योंकि इनके सहयोग से ही समस्याओं के समाधान के लिए संसाधन इकट्ठे होते हैं। यह पद्धति विशेष रूप से भारत में लागू होता है क्याकि भारत में काफी संख्या में लोग गरीबी या गरीबी से संबंधित अन्य समस्याओं से ग्रस्त है, जिनका समाधान तत्काल करने की आवश्यकता है। इसके लिए सामुदायिक संगठन, समस्याओं का समाधान करने की पद्धति के रूप में, सामुदायिक समस्याओं के प्रभावी निराकरण के लिए अधिक उपयोगी है। उदाहरणार्थ – कुछ क्षेत्र में खेतीबाड़ी के लिए पानी की बहुत कमी है। सामुदायिक संगठनकर्त्ताओं तथा लोगों की सहभागिता के द्वारा जलाशय का निर्माण किया जा सकता है तथा भूमिगत पानी का स्तर बढ़ाया जा सकता है।

बरसात का पानी इकट्ठा करके लोगों को खेतीबाड़ी करने में सहायता दे सकता है। यहाँ पर पूरे गाँव की समस्या सिंचाई तथा पीने के पानी के संबंध में है, जिसका समाधान सामुदायिक संगठन पद्धति का प्रयोग करके निकाला जा सकता है। सामुदायिक संगठन की पद्धति का उपयोग निम्न प्रकार के क्षेत्रों में भी की जा सकती है:

1) समुदाय की आवश्यकताओं तथा संसाधनों का समायोजन करने, आवश्यकताएँ पूरी करने तथा निष्पादित करने में।

2) लोगों को उनकी समस्याओं पर प्रभावी ढंग से कार्य करने तथा उनके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए समुदाय का विकास, सशक्त बनाने में सहायता देकर तथा सहभागिता की गुणवत्ता बनाकर, स्वयं दिशा–निर्देशन सहयोग करना।

3) समुदाय तथा समूह के संबंधों तथा निर्णय लेने की शक्ति में परिवर्तन लाना।

4) समुदाय के संसाधनों की पहचान की जाती है तथा इनका सामुदायिक समस्याओं को हल करने के लिए संग्रहण करना।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) व्यापक व्यवहारिक कार्यपद्धति के रूप में सामुदायिक संगठन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 सामुदायिक विकास के लिए सामुदायिक संगठन की प्रासंगिकता

सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास परस्पर संबंधित हैं। सामुदायिक विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सामुदायिक संगठन पद्धति प्रयोग की जाती है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार सामुदायिक विकास किसी भी विकासशील देश के संपूर्ण विकास अर्थात् आर्थिक, भौतिक तथा सामाजिक पहलू पर कार्य करता है। संपूर्ण विकास की प्राप्ति के लिए सामुदायिक संगठन का प्रयोग किया जाता है। सामुदायिक विकास में निम्नलिखित पहलू महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। इन्हीं पहलुओं को सामुदायिक संगठन में भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ये निम्नलिखित हैं :

क) प्रजातांत्रिक प्रक्रियाएँ

ख) स्वैच्छिक सहयोग

ग) स्वयं सहायता

घ) नेतृत्व का विकास

ङ) शैक्षणिक पहलू

उपर्युक्त सभी पहलूओं का संबंध, सामुदायिक संगठन से है :

क) प्रजातांत्रिक प्रणाली के द्वारा समुदाय के सभी सदस्यों को निर्णय लेने में सहभागिता प्राप्त होती है। यह सामुदायिक संगठन से ही संभव है। चुने हुए या मतों द्वारा चयनित सदस्यों या प्रतिनिधियों को निर्णय लेने में सहायता की जाती है। प्रजातांत्रिक प्रणाली सामुदायिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में लोगों के भाग लेने में सहायता करती है। सामुदायिक संगठन की पद्धति से प्रजातांत्रिक प्रक्रिया द्वारा लोगों को सहभागिता की अनुमति मिलती है।

ख) स्वैच्छिक सहयोग से अर्थ है कि लोग अपनी इच्छा से बिना किसी दबाव से अपना योगदान दें। इसके लिए उन्हें विश्वास में लिया जाता है। उन्हें अनुभव करना चाहिए कि वे बेझिझक विकास प्रक्रिया में स्वयं शामिल किए गए हैं। सामुदायिक संगठन पद्धति इस दृष्टिकोण को समर्थन देती है। इस पद्धति को सफल बनाने के लिए लोगों का संवेगात्मक सहयोग आवश्यक है। लोगों में उनकी स्थितियों के बारे में यदि असंतोष पैदा किया जाता है तो लोग अपनी इच्छा से सहभागी बनते हैं। सामुदायिक संगठन लोगों को सहभागी बनने के लिए ही उनको अपनी वर्तमान दशा से असंतोष पैदा करने के पहलू पर जोर देता है।

ग) स्वयं सहायता सामुदायिक विकास का आधार है। आंतरिक संसाधन जुटाने के लिए स्वयं सहायता का सहारा लिया जाता है। आत्मनिर्भरता तथा स्थायी विकास के लिए स्वयं सहायता ही आधार है। सामुदायिक संगठन में स्वयं सहायता महत्त्वपूर्ण है। सामुदायिक विकास सामुदायिक संगठन के लिए सार्थक है क्योंकि दोनों स्वयं सहायता की अवधारणा पर जोर देते हैं।

घ) सामुदायिक विकास में विकास एक महत्त्वपूर्ण पहलू नेतृत्व है। नेतृत्व प्रभावी कार्य करता है तथा लोगों को लक्ष्यों की प्राप्ति में सक्षम बनाता है।

सामुदायिक संगठन में भी नेतृत्व पर बल दिया जाता है। नेताओं की सहायता से लोगों को कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। नेतृत्व को विकसित करने तथा इसका प्रयोग करने के लिए सामुदायिक संगठन एक प्रासंगिक पद्धति है। यह सामुदायिक विकास में भी प्रयुक्त होती है।

ङ) सामुदायिक विकास में शैक्षिक पहलू से आशय, लोगों को प्रजातंत्र की अवधारणा की जानकारी, इसके बारे में सीखना तथा स्वीकार करना, सहयोग, एकता, बौद्धिक विकास, प्रभावी कार्य प्रणाली आदि से है। सामुदायिक संगठन में भी उक्त पहलू महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया सामुदायिक शिक्षा पर बल देती है। इस प्रकार से ये दोनों समुदाय के विकास के लिए शिक्षा के महत्त्व को मानते हैं। अतः सामुदायिक संगठन और सामुदायिक विकास दोनों एक दूसरे से संबंधित तथा परस्पर सहयोगी हैं। सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास दोनों प्रजातांत्रिक पद्धति तथा स्वयं सहायता सिद्धांत पर बल देते हैं। अतः इनक बीच कोई भी विरोधाभास पहलू नहीं है। अतएव ये प्रासंगिक है। इस प्रकार से सभी सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में सामुदायिक संगठन पद्धति को कार्यान्वयन पद्धति के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

3.5 सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास में अंतर

सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास में अनेक समानताएँ हैं। परंतु सैद्धांतिक उद्देश्य से सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास में अंतर करना संभव है :

1) सामुदायिक संगठन समाज कार्य करने की पद्धति है जबकि सामुदायिक विकास सुनियोजित परिवर्तन के लिए एक कार्यक्रम है।

2) सामुदायिक संगठन प्रक्रियाओं पर जोर देता है परंतु सामुदायिक विकास लक्ष्यों या साध्यों पर।

3) सामुदायिक आयोजक अधिकतर समाज कार्यकर्त्ता एवं सामाजिक परिवर्तन के एजेंट होते हैं परंतु सामुदायिक विकास करने वाले कार्मिकों में अन्य व्यवसायों जैसे कृषि विशेषज्ञ, पशु पालन विशेषज्ञ, अभियन्ताओं, तथा तकनीकी विशेषज्ञ आदि भी शामिल होते हैं।

4) सामुदायिक संगठन समयबद्ध नहीं होता। इसे लोगों के साथ कदम मिलाकर प्राप्त किया जाता है परंतु सामुदायिक विकास समयबद्ध होता है तथा विकास उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समय निर्धारित होता है।

5) सामुदायिक संगठन में लोगों की सहभागिता अनिवार्य होती है परंतु सामुदायिक विकास में लोगों का विकास आवश्यक है।

6) सामुदायिक संगठन में सरकारी तथा बाहरी एजेंसियों की सहायता या तो अनावश्यक या महत्त्वपूर्ण नहीं होती है परंतु सामुदायिक विकास में सरकार तथा अन्य बाहरी एजेंसियों से सहायता महत्त्वपूर्ण होती है।

7) सामुदायिक संगठन समाज कार्य की पद्धति है तथा इसे अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त किया जाता है। परंतु इसके विपरीत सामुदायिक विकास को एक प्रक्रिया, पद्धति, कार्यक्रम तथा सुनियोजित परिवर्तन के लिए आंदोलन के रूप में माना जाता है।

8) सामुदायिक संगठन सभी क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है परंतु सामुदायिक विकास का प्रयोग अधिकतर आर्थिक विकास तथा लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए किया जाता है।

9) सामुदायिक संगठन में नियोजन का प्रारंभ लोगों द्वारा उनकी सहभागिता से किया जाता है। परंतु सामुदायिक विकास में नियोजन बाहरी एजेंसी अधिकतर सरकार द्वारा किया जाता है।

10) सामुदायिक संगठन में लोग अपनी समस्या के समाधान के लिए संगठित होते हैं परंतु सामुदायिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है और लोग इसके लिए इकट्ठे होते हैं।

11) सामुदायिक संगठन सभी समुदायों के लिए हैं। परंतु सामुदायिक विकास कार्यक्रम एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के लिए अलग–अलग होते हैं, जोकि ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, आदिवासी क्षेत्र और संबंधित क्षेत्र की अन्य विशेषताओं पर निर्भर करता हैं।

इन दोनों में अंतर होने के बावजूद ये दोनों आपस में संबंधित हैं। इनके संबंध इतने गहरे हैं कि सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया तथा सिद्धांत पूर्णतया स्वीकार्य है। ये दोनों एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह से है। आदर्श सामुदयिक विकास वहीं पर होता है, जहाँ सामुदायिक संगठन की पद्धतियाँ तथा इसके विभिन्न उपाय और सिद्धांत प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किए जाते हैं।

3.6 समुदाय के अंदर व्यक्तियों, परिवारों तथा समूहों के साथ कार्य करना

व्यक्ति साथ–साथ मिलते हैं और समूह तथा परिवार बनाते हैं। परिवारों और समूहों के इकट्ठे होने से समुदाय बनते हैं। समुदायों के साथ काम करने में हमें व्यक्तियों, परिवारों तथा समूहों के साथ कार्य करना होता है। व्यवहारिक समाज कार्य प्रणाली में समाज कार्य की विभिन्न पद्धतियों में अंतर की कोई सुस्पष्ट सीमाएँ नहीं हैं। ये सभी स्थितियों के आधार पर किए जाते हैं। सामुदायिक संगठन में आयोजक को व्यक्तियों के साथ कार्य करना होता है। जागरूकता लाने के लिए व्यक्तिगत सम्पर्क नीति प्रयोग की जाती है। शिक्षा तथा जागरूकता के

द्वारा अलग–अलग व्यक्तियों को सामुदायिक लक्ष्यों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाता है। व्यक्तियों के साथ काम करते हुए समय अधिक लगता है परंतु यह बहुत प्रभावी तथा सफल होता है। सामुदायिक संगठन में परिवारों तथा समूहों के साथ कार्य करना महत्त्वपूर्ण है। सामुदायिक संगठन में अनेक समूहों के साथ काम करना होता है क्योंकि समुदाय में अनेक समूह होते हैं। सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें अलग–अलग समूहों के साथ काम करना पड़ता है। समुदाय में अनेक समूह विभिन्न कार्यों में लगे होते हैं। ये अपने कार्यों के लिए एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न समूहों के साथ काम करता है। इस प्रकार से सामुदायिक आयोजक व्यक्तियों, परिवारों तथा समूहों में एकता पैदा करने के लिए सावधानीपूर्वक प्रयास करता है। जब ये एकजुट हो जाते हैं तो ये सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग देते हैं। समस्याओं का समाधान करने तथा कार्रवाई करने में समूहों को वरीयता प्राप्त होती है। औसत व्यक्ति की तुलना में समूह अच्छे माने जाते हैं। परंतु इन्हें श्रेष्ठ व्यक्ति की तुलना में अच्छा मानने की आवश्यकता नहीं है। सामुदायिक संगठन में समूहों के साथ कार्य करते समय राय तथा संरचनाओं की विविधता प्राप्त होने की संभावना बनी रहती है। समूह के सदस्य, सामूहिक निर्णय लेकर अनावश्यक विचारों (राय) समाप्त कर सकते हैं। समूह में व्यक्ति तेजी से कार्य कर सकते हैं परंतु दूसरों को कार्य में शामिल करने में समय लगता है। समूहों में कार्य करते समय, जब समूह के अधिकांश सदस्य वचनबद्ध होकर कार्य करते हैं तो विकल्पों का चयन करने के लिए सर्वसम्मति को आदर्श माना जाता है जोकि सफलता का आधार है। जब समूह के सदस्यों के मध्य कोई विवादास्पद मामला हो तो मूल निर्णय में संशोधन करके किसी निर्णय पर पहुँचा जा सकता है। तत्पश्चात यह समूह के सभी सदस्यों को स्वीकार्य हो जाता है। इस प्रकार से एक सामुदायिक संगठनकर्त्ता को सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए व्यक्तियों तथा समूहों के साथ कार्य करना होता है। संगठनकर्त्ता में सामुदायिक

संगठन कौशल के अंतर्गत् समुदाय में केस कार्य तथा समूहों के साथ काम करने की क्षमता भी होनी चाहिए।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए व्यक्तियों तथा समूहों के साथ कार्य करने के द्वारा आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 शक्ति की अवधारणा और आयाम

शक्ति से आशय, सामुदायिक संगठन के द्वारा दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता है अर्थात् सामुदायिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नेताओं द्वारा सदस्यों को दिए गए सुझाव के अनुसार कार्य करने के लिए प्रभाव डालना। सामुदायिक शक्ति के पहलुओं का अध्ययन किया जा सकता है। इसे समुदाय की शक्ति की संरचना कहा जाता है। समुदाय की शक्ति की संरचना प्रत्येक समुदाय में अलग–अलग होती है।

समाज कार्यकर्त्ताओं के अनुसार शक्ति से आशय, अन्य व्यक्तियों की आस्थाओं तथा व्यवहारों को प्रभावित करने की क्षमता से है। दूसरे शब्दों में शक्ति के द्वारा घटनाओं को वास्तविक रूप दिया जा सकता है। फ्लोइड हंटर (Floyd Hanter) ने शक्ति की प्रकृति तथा शक्ति की संरचना का वर्णन किया है। शक्ति अनेक रूपों तथा संयोगों की अनेक विभिन्नताओं में दिखाई देती है। शक्ति अनेक स्रोतों से प्रवाहित होती है। शक्ति के स्रोतों में धन, मत (वोट), कानून, सूचना, विशेषज्ञता, सम्मान, सामूहिक समर्थन, सम्पर्क, विशेष छवि, संप्रेषण के माध्यम, प्रचार माध्यम, सामाजिक भूमिका, पुरस्कार की प्राप्यता, स्थिति, पदवी, विचार वाक् पटुता, महत्त्वपूर्ण आवश्यकताएँ पूरी करने की योग्यता, अनिवार्य संसाधनों पर एकाधिकार समझौते, ऊर्जा, धारणा, उत्साह, आपसी निपुणता, नैतिक धारणा आदि शामिल हैं। किसी विशेष क्षेत्र में शक्ति के संचय को शक्ति का केंद्र कहा जाता है। शक्ति को वितरित किया जाता है। यह शक्ति के केंद्र तक ही सीमित नहीं रहती। यह समाज में हर स्तर पर विद्यमान है। शक्तिविहीन लोगों में भी शक्ति हैः उन्हें भी अपनी शक्ति की खोज करनी है। औपचारिक हस्तांतरण या पदवी द्वारा शक्ति दी जा सकती है। शक्ति अनेक प्रकार से प्राप्त की जा सकती है उदाहरणार्थ – क्षमता द्वारा, योग्यता, व्यक्तित्व द्वारा सामान्यतः समुदाय में लोगों के कुछ समूह उपरी सतह पर होते हैं। इन्हें शक्तियों के मामले में सबसे ऊपर की शक्ति केंद्र कहा जाता है। ये औपचारिक तथा अनौपचारिक संबंधों के द्वारा समुदाय को प्रभावित करते हैं। ये समुदाय में निर्णय लेने वाली प्रक्रिया में भाग न लेने वाले अधीनस्थ नेताओं के द्वारा समुदाय को प्रभावित करते हैं। सामान्यतया अमीर व्यक्ति शक्तिशाली होते हैं। कुछ समुदायों में शक्ति का बहुविध स्वरूप देखने में आया है। शक्ति के स्वरूप की प्रकृति भी लचीली होती है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता को निम्नलिखित का अध्ययन करना होता है 'कुछ लोग अन्य व्यक्तियों के कार्यों को कैसे प्रभावित करते हैं। शक्ति को कौन प्रयोग करता है? तथा कैसे? क्या मुद्दे होते हैं? सामुदायिक संगठन पद्धति को प्रभावी बनाने को लिए आयोजक द्वारा इन पहलुओं का विश्लेषण किया जाना चाहिए। इसे सामुदायिक शक्ति के स्वरूप का

विश्लेषण कहा जाता है। इसे शक्ति कहा जाता है अन्य व्यक्तियों के प्रतिरोधों के बावजूद कुछ लोग कार्य करने में सक्षम होते हैं। कुछ लोग शक्तिशाली होते हैं क्योंकि वे एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप में जानते तथा खुलकर बात करते हैं,, जिसके कारण सामुदायिक मामलों में सामूहिक प्रयासों में उन्हें शामिल करने के प्रयास किए जाने चाहिए। शक्तिशाली लोग समुदाय में अधिकतर निर्णय लेते हैं जबकि दूसरे लोग मुख्यतः इन्हें कार्यान्वित करने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। शक्ति स्वरूप का सही प्रकार से अध्ययन कर सकने वाला संगठनकर्त्ता ही सामुदायिक संगठन की पद्धति को प्रभावी ढंग से चला सकता है। उदाहरण के लिए – गाँव में पारंपरिक नेता शक्तिशाली व्यक्ति होता है। नेता अन्य लोगों पर काम करने के लिए प्रभाव डाल सकता है। अनेक बार यह नेता सामुदायिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया जाता है। नेता लोगों को प्रभावी ढंग से असर डालने में सक्षम होता है। जब कुछ व्यक्तियों द्वारा विरोध किया जाता है तो शक्ति होने के कारण नेता इन्हें संभाल सकता है।

समुदाय में शक्ति विभाजित होती है। संसाधनों तथा पारितोषिकों के वितरण पर प्रभाव डालकर प्रत्येक शक्ति केंद्र अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है। विभिन्न शक्ति केंद्र एक समझौता कर लेते हैं। ये शक्तियाँ आपस में इन्हें बाँट लेते हैं, समझौता कर लेते हैं तथा उत्तरदायित्वों को पूरा करते हैं। निष्क्रिय, संकोची तथा हारे हुए व्यक्तियों के पास शक्ति नहीं होती। ओजस्वी तथा उत्साहित व्यक्ति इसे धारण करते हैं। शक्तिशाली व्यक्ति मुद्दों के आधार पर इकट्ठे होते हैं। मैत्री संबंध का आधार आदर्शात्मकता, व्यक्तिगत समानताएँ, आवश्यकताएँ या लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। निहित शक्तियाँ सदा प्रयोग की जाती हैं। इन्हें लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। शक्ति बौद्धिक राजनीतिक, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक हो सकती है। शक्ति को अपने पास रखने के लिए स्व जागरूकता तथा आत्म नियंत्रण की आवश्यकता होती है। शक्ति के फलस्वरूप ही निर्णय लिया जाता है। कभी–कभी शक्ति केंद्र अधिक होने की संभावना भी होती है। प्रत्येक शक्ति केंद्र स्वायत हो सकता है। सामुदायिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संगठनकर्त्ता के पास

ज्ञान तथा समुदाय में शक्ति का संग्रहण करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। शक्ति के संग्रहण की निम्नलिखित प्रविधियाँ हैं :

1) संबंधित शक्तिशाली व्यक्ति से लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सहायता करने की अपील करना।

2) लक्ष्यों के साथ शक्ति केंद्रों को सीधे जोड़ना।

3) लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शक्ति के केंद्रों के बीच आपसी–आश्रय की भावना बढ़ाना।

4) लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शक्ति केंद्रों से सदस्यों को शामिल करके नए समूह बनाना।

5) लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शक्ति के केंद्रों के सदस्यों को अन्य सदस्यों के साथ मिलने हेतु प्रोत्साहित करना।

6) सामूहिक कार्य पद्धतियाँ अपनाकर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नए बड़े शक्ति केंद्र को सशक्त करना।

साउल आलिस्की (Saul Alinsky) तथा रिचर्ड क्लोबर्ड (Richard Cloward) ने (1960) शक्ति के केंद्रों के बदलाव पर प्रयोग किया है। शक्ति–केंद्र में परिवर्तन संस्थागत परिवर्तन द्वारा उपलब्ध होता है। सैद्धांतिक दृष्टि से स्थानीय लोगों के पास निर्णायक शक्ति होनी चाहिए। शक्ति तथा प्राधिकरण संबद्ध है। प्राधिकरण शक्ति का वैध रूप है। इन विवरणों का प्रयोग सामुदायिक संगठन में किया गया है ताकि लोगों का सहयोग प्राप्त किया जा सके और लक्ष्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक हो सके।

3.8 सामुदायिक संगठन में शक्ति की प्रासंगिकता

विकास पर समुदाय की शक्ति की संरचना का प्रभाव पड़ता है। प्रभावी व्यक्ति समुदाय के बड़े हिस्से का संग्रहण कर सकते हैं। उदाहरणार्थ निधियाँ इकट्ठी करते समय कुछ लोग अन्य लोगों तथा संस्थाओं से पीछे रह सकते हैं। सामुदायिक शक्ति संरचना के प्रतिरूप है। शक्ति संरचना के स्तरीयकरण (Stratification) तथा बहुलवादी (Pluralist) प्रतिरूप है। स्तरीयकरण (Stratification) मॉडल के अनुसार, सामाजिक श्रेणी सिद्धांत के रूप में निर्धारित करती हैं कि सामुदायिक शक्ति का वितरण कैसे हो? इस मॉडल के अनुसार समुदाय में शक्ति की संरचना का गठन स्थिर उच्च वर्ग (श्रेष्ठजनों) से निर्धारित होती है, जिनकी सामुदायिक कार्यों में रुचि तथा दृष्टिकोण अपेक्षाकृत समरूप है। बहुलवादी (Pluralist) मॉडल को मानने वाले इस विचार से सहमत नहीं हैं कि लघु समरूप समूह समुदाय निर्णय लेने की क्षमता को स्तरीयकरण प्रभावित करता रहे। इस समाज में अनेक ऐसे छोटे विशेष हित वाले समूह हैं जो सामुदायिक निर्णय लेने में प्रभाव डालते हैं। ये हितकारी समूह के सदस्यों की संख्या एक दूसरे से मेलजोल वाली हो सकती है परंतु शक्ति के आधार पर व्यापक रूप से अलग–अलग हैं. वे निर्णयों को प्रभावित करते हैं। इन विभिन्न हितों वाले समूहों के पारस्परिक विचार–विमर्श के आधार पर सामुदायिक निर्णय होते हैं।

सैद्धांतिक अभिन्यास सामुदायिक संगठनकर्त्ता को उसके कार्यों में सहायता करती है। सामुदायिक संगठन के लिए शक्ति की संरचना के सदस्यों का संगठनकर्त्ता को पता लगाना होता है। सामुदायिक कल्याणकारी परिषद के कार्यकारी निदेशक फ्लॉइड हंटर (Floyd Hanter) ने सामुदायिक शक्ति संरचना पर अद्वितीय कई भागों का संतुलित ग्रंथ लिखा है। समुदाय की विशिष्टताओं का पता लगाने की उनकी पद्धति को प्रतिष्ठित उपागम के रूप में जाना जाता है। इसका मूल प्रमाण ऐसी सूचना देने वाले व्यक्तियों का समूह बनाना है जो समुदाय के बारे में जानकारी रखते हैं, जिससे सामुदायिक कार्यों में अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्तियों की

सूची बना सकें। सूचना देने वालों का चयन कैसे किया जाए, तथा प्रश्न कैसे पूछे जाएँ? इस बारे में विभिन्नताएँ हो सकती हैं। प्रभावशाली नेताओं के बारे में बार–बार बताकर हम सामुदायिक शक्ति की संरचना के मर्म को जान सकते हैं। स्तरीयकरण (Stratification) मॉडल की मान्यताओं पर आधारित स्थिति उपगम शक्ति की संरचना के लोगों का पता लगाने की एक अन्य पद्धति है। यह दृष्टिकोण मानता है कि समुदाय में उच्च स्थान पाए व्यक्ति शक्ति संरचना में सबसे ऊपर होते हैं। समुदाय में महत्त्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक संगठनों की कार्यकारी सूची की समीक्षा करके कोई भी व्यक्ति आसानी से शक्ति की संरचना के केंद्रों के सदस्यों की सूची संकलित कर सकता है। इस दृष्टिकोण में प्रतिष्ठित दृष्टिकोण की तुलना में कम प्रयास करने पड़ते हैं। सामुदायिक शक्ति का सीधा संबंध सामुदायिक संगठन से है। लोगों की सहभागिता का संबंध शक्ति से है। सामुदायिक संगठन में, सामुदायिक शक्ति वाले व्यक्तियों को शामिल किया जाता है ताकि संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लोगों की सहभागिता को बढ़ावा दिया जा सके। कभी–कभी वर्तमान शक्ति केंद्रों के सामुदायिक संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए न होने पर नए शक्ति केंद्र बनाए जाते हैं ताकि लोगों की बचनबद्धता तथा जन सहयोग मिल सके। संगठनकर्त्ता को शक्ति संरचना का अध्ययन करने की आवश्यकता होती है तथा सामुदायिक संगठन प्रक्रिया नेताओं के द्वारा सफलतापूर्वक चलाई जा सकती है। उदाहरणार्थ लोग परिवार कल्याण के लिए संगठित होते हैं। इसमें जनसहयोग के लिए नेता को प्रेरित किया जाना चाहिए। कुछ गाँवों में नेता परिवार कल्याण का विरोध करते हैं। ऐसी स्थिति में आयोजक को परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू करने को लिए नए शक्तिशाली नेता का पता लगाना चाहिए। अन्यथा गाँव में परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू करना संभव नहीं होगा।

3.9 सशक्तिकरण में व्यवधान

प्रायः गरीब लोगों में शक्ति विहीनता की भावना है। सामुदायिक संगठन के प्रयोग द्वारा अपने कार्यों में निर्णय लेने के लिए शक्ति की भावना लोगों में जगाने में सहायता दी जा सकती है। इनमें विश्वास की भावना तथा क्षमता बढ़ाई जा सकती है ताकि वे अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करने के विषय में शक्तिशाली अनुभव कर सके। सामुदायिक संगठन में लोग निर्णय ले सकते हैं। इससे उनमें सशक्तिकरण की भावना आती है। सशक्तिकरण के द्वारा वंचित समूहों को वह सशक्त उपकरण प्राप्त होता है,, जिससे वे अपना माँगो तथा पसंदगी को बताते हए और निर्णय लेने की क्षमता एवं जागरूकता को विकसित करने के फलस्वरूप वे अपने लक्ष्य को स्वतंत्र रूप से प्राप्त कर सके।

सामुदायिक संगठन के फलस्वरूप लोगों में सशक्तिकरण की भावना आती है। परंतु इसमें कुछ बाधाएँ जैसे भाग्यवाद, अशिक्षा, अंधविश्वास तथा जाति विभाजन आदि हैं। कभी–कभी निहित स्वार्थ वाले समूह भी सशक्तिकरण में व्यवधान या बाधाएँ बन जाते हैं। सामुदायिक निर्भरता, लम्बी अवधि से गरीबी का प्रभाव तथा अंधविश्वास आदि सशक्तिकरण में बाधक होते हैं। जब लोग संगठित होते हैं तो उन्हें शक्तियाँ मिल जाती हैं। समुदाय में नेता होते हैं तथा यदि उन्हें एकत्र किया जाए तो वे मिलकर कार्य कर सकते हैं तथा एक दूसरे के साथ समन्वय कर सकते हैं। इससे उनमें शक्तिशाली होने की भावना पैदा होती है। इस प्रकार से सामुदायिक संगठन के कारण लोगों के सशक्तिकरण को मजबूत आधार मिलता है। सशक्तिकरण से समुदाय को शोषण के विरुद्ध खड़ा होने, समस्याओं के समाधान की योग्यता प्राप्त करने तथा अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। सामुदायिक संगठन तथा समुदाय के सशक्तिकरण से अनेक आर्थिक समस्याओं का निराकरण आसानी से हो जाता है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक शक्ति की संरचना से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.10 सारांश

इस इकाई में हमने सामुदायिक संगठन को समाज कार्य की व्यापक पद्धति तथा सामुदायिक विकास की प्रासंगिकता में सामुदायिक संगठन की चर्चा की है। सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक विकास में अंतर को सूचीबद्ध किया। व्यक्तियों, परिवारों तथा समूहों के साथ कार्य करने के महत्त्व का विश्लेषण किया है। इकाई के अंत में शक्ति की संरचना स्वरूप तथा सामुदायिक संगठन में इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा की गई है। यह सारी जानकारी सफल सामुदायिक संगठन के लिए लाभदायक रहेगी।

3.11 शब्दावली

शक्ति की प्राप्ति : शक्ति की उपलब्धता से अर्थ है वह शक्ति जो व्यक्ति को अपने प्रयासों से मिलती है।

दी गई शक्ति : दी गई शक्ति से आशय उस शक्ति से है जो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दी जाती है।

सामुदायिक विकास : सामुदायिक विकास से आशय विकासशील समुदाय के ऐसे पूर्ण आर्थिक, भौतिक तथा सामाजिक पहलुओं के विकास से है जो उनके संसाधनों के द्वारा हुआ हो।

सशक्तिकरण : जागरूकता पैदा करना तथा अपने विकास के लिए कार्य करने तथा निर्णय लेने हेतु क्षमता की वृद्धि।

आधारभूत दृष्टिकोण : आधारभूत दृष्टिकोण से आशय है धरातल स्तर के लोगों को निर्णय लेने की शक्ति का मिलना या आधारभूत स्तर के लोगों का सशक्तिकरण।

वृहत् प्रणाली : सामुदायिक समस्याओं को हल करने के लिए उपयोग की गई बड़े पैमाने की पद्धतियाँ।

शक्ति का बहुलवादी (Pluralist) पद्धतिः शक्ति की बहुलवादी प्रतिरूप से आशय है अनेक छोटे हितों वाले समूहों का शक्ति धारण करना।

शक्ति : अन्य लोगों की आस्थाओं तथा व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता है।

शक्ति केंद्र : शक्ति केंद्र का अर्थ उन विशिष्ट व्यक्तियों से है, जिनके पास शक्ति होती है।

शक्ति की संरचना : शक्ति की संरचना का मतलब है समुदाय में प्रभावशाली व्यक्तियों से है।

शक्ति के स्तरीयकरण (Stratification) प्रतिरूप : शक्ति के स्तरीयकरण प्रतिरूप का अर्थ शक्ति प्राप्त उच्च वर्ग के कुछ लोग।

स्वैच्छिक सहयोग : स्वैच्छिक शब्द का उन लोगों से है जो अपनी इच्छा से सामुदायिक संगठनकर्त्ता तथा समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ काम करने का निर्णय लेते हैं।

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

चेकी, ए. डॉन (1979), कम्युनिटी डेवलपमेंट, विकास पब्लिकेशन हाऊस प्रा.लि., नई दिल्ली।

कॉक्स, एम. फ्रेड एंड एलिच एल. जॉन (1987), स्ट्रेटेजीस ऑफ कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन, एफ.ई. पीकॉक पब्लिशर्स, इन्क., इलिनॉएस।

फीक, ई. आर्थर (1978), द फील्ड ऑफ सोशल वर्क, होल्ट राइनहार्ट एंड विंसटन, न्यूयार्क।

मूरे जी. रॉस (1955), कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन, हार्पर एंड रो पब्लिशर न्यूयार्क।

रोल्फ, जरसी एम. क्रामर (1975), रीडिंग इन कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन प्रैक्टिस, प्रेटिस हॉल इन्क., न्यूजर्सी।

रेक्स, ए. स्कीडमोर (1976), इनट्रोडक्शन टू सोशल वर्क, प्रेंटिस हॉल इन्क., न्यूजर्सी।

3.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) सामुदायिक संगठन को समाज कार्य की व्यापक कार्य पद्धति के अमलीकरण के रूप में जाना जाता है क्योंकि इसका प्रयोग बड़ी–बड़ी सामुदायिक समस्याओं को हल करने के लिए किया जाता है। इसमें अनेक लोग तथा व्यापक प्रभाव डालने वाली समस्याएँ शामिल होती हैं अतः इसे वृहत् कार्यपद्धति कहा जाता है।

बोध प्रश्न II

1) सामुदायिक संगठनकर्त्ता व्यक्तियों तथा समूहों को प्रभावित करने के लिए जानबूझकर प्रयास करते हैं ताकि सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इन्हें एक साथ किया जा सके। संगठनकर्त्ता को पता होना चाहिए कि समूह कार्य की स्थिति में काम कैसे किया जाए इससे सामान्य उद्देश्यों से कार्य करने के लिए विभिन्न समूहों को एकत्र करने में सहायता मिलेगी।

बोध प्रश्न III

1) शक्ति का अर्थ है, अपेक्षित कार्रवाई करने के लिए दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता। सामुदायिक शक्ति की संरचना में निर्णय लिया जाता है कि कौन प्रभावित करेगा? कितना प्रभावित करेगा? कैसे प्रभावित करेगा? प्रभाव का परिणाम क्या होगा? शक्ति के प्रयोग से संबंधित अन्य विवरण क्या होंगे? आदि।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 सामुदायिक संगठन में समकालीन मुद्दें

*प्रो. गोपाल जी मिश्रा

रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 जेण्डर सुग्राही सामुदायिक संगठन का व्यवहारीकरण

4.3 व्यापक नीतियों का प्रभाव

4.4 संगठनात्मक रणनीतियाँ

4.5 प्राधिकारियों से निपटना

4.6 विरोध और प्रदर्शन

4.7 सारांश

4.8 शब्दावली

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

मनुष्य का सामाजिक जीवन उस समुदाय के प्रकार से प्रभावित होता है, जिसमें वह रहता है। विज्ञान की उन्नति से हमारा जीवन जटिल हो गया। ग्रामीण

* प्रो. गोपाल जी मिश्रा, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर।

समुदायों की आत्म निर्भरता की अवधारणा टूट चुकी है। परिवार, संयुक्त परिवार, जाति प्रथा, ग्राम पंचायत, निजी संपत्ति तथा शिक्षा आदि जैसी सामाजिक संस्थाओं में काफी परिवर्तन आ गया है। वे अब व्यक्ति और समुदाय की बदलती माँगों को पूरा करने में असमर्थ होने लगी है। इस इकाई का उद्देश्य आपको सामुदायिक संगठन के समकालीन विषयों से अवगत कराना है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- जेण्डर और जेण्डर संबंधी अन्याय की व्याख्या कर सकेंगे;
- जाति और वर्ग तथा उनके कार्यों का वर्णन कर सकेंगे;
- समुदाय में प्रचलित विभिन्न ढंग की असमानताओं का सही पता लगा सकेंगे;
- व्यापक नीतियों का लोगों के ऊपर अनेक प्रकार के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- सीमांत समूह के अधिकारों की रक्षा के लिए गुटबाजी व अधिकारियों के साथ कार्य करने के तरीकों का पता लगा सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

आधुनिक समुदायों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं। प्राचीन सामाजिक संबंध, भावात्मक बंधन, और भावुक संबंध अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं रहे और नजर भी नहीं आते। सामुदायिक चेतना तेजी से कम हो रही है। शांतमय सामुदायिक जीवन में गंदी राजनीति का प्रवेश हो चुका है और लोग विभिन्न राजनीतिक समूहों और उप–समूहों में विभाजित हो गए हैं।

संयुक्त परिवार की प्रणाली तेजी से विघटन की तरफ बढ़ रही है तथा मनुष्य के दिमाग में दबाव बढ़ते जा रहे हैं। समुदायों, संस्थाओं तथा संगठनों के साथ काम करते हुए साम्प्रदायिक असामंजस्य, जेण्डर की असमानता, गुटबाजी, सीमांत समूहों के अधिकारों का रक्षा, विभिन्न वर्गों में वंचित रहने की भावना, जैसे कृषक, औद्योगिक श्रमिक, दिहाड़ी मजदूर की भावनाओं, सुविधाहीन लोगों के पक्ष में

संपत्ति के संबंधों में परिवर्तन तथा सूक्ष्म स्तरा (कम विकसित) लोगों पर बड़ी नीतियों के प्रभावों जैसे कुछ समकालीन मुद्दों पर तत्काल अंतःक्षेप आवश्यक है। यह इकाई आय को ऐसे विषयों की व्यापक जानकारी प्रदान करती है जो समुदायों और संगठनों की स्वस्थ जीवन शैली और कार्य प्रणाली की गतिशीलता को प्रभावित कर रहे हैं। आइए, अब हम जेण्डर और सेक्स में भेद, जेण्डर प्रथा और इसके तत्त्वों तथा महिला असमानताओं पर जेण्डर प्रथा के प्रभाव के अर्थ को समझें।

4.2 जेण्डर सुग्राही सामुदायिक संगठन का व्यवहारीकरण

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में लिंग का अर्थ लैंगिक वर्गीकरण करते हुए नर और मादा दिया गया है। लेकिन लिंग कोई जैविक गुण नहीं है। इसकी रचना समाज ने की है। महिला एवं पुरुष में समानता की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से हमारा वर्तमान समाज अपने आप नियम बनाने में लगा हुआ है जो मूलतः हमारे समाज में महिलाओं और बालिका के प्रति भेदभाव के लिए जिम्मेदार है।

4.2.1 जेण्डर और लिंग में अंतर

जेण्डर	लिंग
सामाजिक रूप से परिभाषित	जैविक रूप से परिभाषित
सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर	प्राकृतिक अंतर
समाज द्वारा निर्मित	प्रवृत्ति द्वारा
परिवर्तनीय	स्थिर

जेण्डर पुरुषों और महिलाओं को अलग–अलग मूल्य देते हैं। जैविकीय अंतर समाज में स्त्री और पुरुष की प्राप्यता और उनकी समाज में भागीदारी के सही अंतर संकेत के रूप में स्वीकार किए जाते हैं।

4.2.2 जेण्डर व्यवस्था

हमारा समाज कुछेक स्वयंसिद्धियों और उद्देश्यों के इर्द–गिर्द अनुसार संगठित है तथा इसकी कार्य प्रणाली कुछ व्यवस्थाओं और संस्थाओं के द्वारा सुनिश्चित की जाती है। उदाहरण के लिए, भारतीय समाज में विवाह और वैवाहिक पारिवारिक जीवन भारतीय समाज के अंतर्निहित पहलू हैं। लड़कियाँ और लड़के विवाह करते हैं और निर्धारित मानदण्डों के अनुसार अपना पारिवारिक जीवन आरंभ करते हैं जो उनके वैवाहिक जीवन साथी का चयन उनकी भूमिका, आचार संहिता (निष्ठा पति–पत्नी, लैंगिक पवित्रता, लड़की की अपने पति या सुसराल वालों के प्रति आज्ञाकारिता), जीवन व्यतीत करने की शैली और परंपराओं (जैसे – पर्दा, पुरुष विरासत, दहेज आदि) का चयन निर्धारित करती हैं। समाज कार्य प्रणाली के सभी पहलुओं को प्रभावित करने वाली सर्वव्यापक एवं विस्तृत रूप में संगठनात्मक संहिता जेण्डर प्रथा है। यह पैतृक प्रणाली प्रतिकूल परिस्थितियों को जीवन शक्ति प्रदान करती है, जिसका सामना महिला को करना पड़ता है। आइए हम जेण्डर प्रथा की कुछ सामान्य विशेषताओं की समीक्षा करें और उनकी सूची बनाएँ।

स्त्री–पुरुष में अंतर

स्त्री–पुरुष में अंतर करने की परंपराएँ ही जेण्डर पर आधारित प्रथा का मूल निर्माण करती है। जैविक लिंगीय भेद वास्तविक है लेकिन इसके आधार पर स्त्री का सामाजिक स्थान निर्धारण के मानदंड का प्रसार (फैलाव) किया जाता है।

भूमिका का निर्धारण

किसी भी संगठन या समाज में भूमिकाएँ कुछ विशिष्ट कार्य करने के लिए निर्धारित की जाती हैं। पैतृकता में भूमिकाओं का आवंटन न केवल जैविक कार्यों के अनुसार (सन्तानोत्पत्ति के लिए दाम्पत्य संबंध) है अपितु स्त्री एवं पुरुष का मूल्यों के आधार पर अनुचित ढंग से उपयोग किया जाता है। पैतृकता में प्रभुत्व एवं नियंत्रण वाले समाज कार्य पुरुषों के लिए निर्धारित किए गए हैं जबकि

संभरण संबंधी कार्य महिलाओं के हिस्से में आए हैं। इस प्रकार जन्म से ही पुरुष संसाधनों के वारिस बन जाते हैं जो अर्जक (आमदनी) के कार्य करते हैं, जबकि जन्म से ही महिलाएँ परिवार की देख–रेख (अनुरक्षण) करने वाली होती हैं जो 'बच्चों का पालन–पोषण और गृह कार्य करती हैं। परन्तु यह स्थिति अब बदल रही है एवं पुरूष तथा महिलाएँ बराबरी की समान स्थिति रखते हैं।

जेण्डर पर आधारित वंशानुगत स्थापन

भूमिका आवंटन के साथ कुछ आदर्श पर आधरित और मूल्य, परंपराएँ और सदियों से चले आ रहे विश्वास भी स्त्री–पुरुष की श्रेष्ठता–निकृष्ठता या वंशानुगतता को बढ़ावा देते हैं, जिसके कारण पुरुष की भूमिका भूमि नियंत्रण विरासत, दक्षताएँ, उत्पादक रोजगार और इसके साथ जुड़ी उच्च हैसीयत प्राप्त कर लेते हैं। जबकि दूसरी तरफ महिलाओं को जीवन जीने तक (मादा भ्रूण/बालिका हत्या) की मनाही होती है, उन्हें अल्प पोषण, कमजोर चिकित्सा संबधी देखभाल घटिया शिक्षा प्राप्त होती है और अत्याचार जैसे, छेड़ना, बलात्कार तथा मार–पीट आदि का सामना करना पड़ता है।

4.2.3 लिंग व्यवस्था के तत्त्व

घिसी–पिटी भूमिका

स्त्री के बच्चा पैदा करने के जैविक कार्य का विस्तार बच्चों का पालन–पोषण तथा गृह–कार्य पूरे करने तक किया गया है। दूसरी तरफ पुरुष की भूमिका परिवार के लिए कमाई करना है। इस तरह, दोनों लिंगों का पूर्व निर्धारित लेकिन अलग–अलग भूमिकाओं के लिए समाजीकरण होता है। यहाँ तक कि ऐसे समाज में जहाँ दोनों को कमाई करनी पड़ती है सामाजिक मूल्यों के साथ संबद्ध बुनियादी भूमिकाएँ नहीं बदली हैं। इस प्रकार यदि महिला भी आमदनी करती है तो भी घरेलू कार्यों के लिए उनकी जिम्मेदारी कम नहीं हुई है।

लिंग के आधार पर बच्चे की वरीयता

वारिश, परिवार और उसके हितों का संरक्षक और "कर्त्ता" होने के कारण पुरुषों का प्राप्त तदानुरूप सामाजिक स्थिति के कारण लड़कों का मूल्य अधिक है। इसके अतिरिक्त पुत्र अभिभावकों के लिए वृद्धावस्था में जीवन बीमा का काम करता है क्योंकि पुत्रियों का विवाह होने के बाद उन्हें अपना परिवार छोड़ना पड़ता है। इसके अतिरिक्त पुत्री के पैदा होने का अभिप्राय है खर्च जैसे दहेज। इस प्रकार समाज पुत्रों को प्राथमिकता प्रदान करता है। वास्तव में लड़के की पसंद कुछ क्षेत्रों में इतनी दृढ़ है कि जब पत्नी पुत्र पैदा नहीं करतीं है तो उसे "कुलच्छनी" एवं परिवार का नाश करने वाली तक कहा जाता है क्योंकि आगे वंश का नाम नहीं चलेगा।

4.2.4 जेण्डर व्यवस्था का महिलाओं पर प्रभाव

स्त्री–पुरुष में भेदभाव करने की परंपरा का महिला को ढाँचागत वंचना का शिकार होना पड़ता है (मादा भ्रूण हत्या/मादा बालिका हत्या, स्वास्थ्य, शिक्षा, पैतृक संपत्ति आदि)। व्यवहार के स्तर पर महिला के साथ भेदभाव किया जाता है (बेरोजगार, अल्प उत्पादक दक्षता, स्वास्थ्य की देखभाल, सार्वजनिक जीवन आदि) तथा अनेक प्रकार से सताया (दहेज प्रताड़ना, छेड़खानी, पत्नी को पीटना, बलात्कार आदि) जाता है। ढाँचागत दशाएँ समग्र समाज को प्रभावित करती हैं जबकि व्यवहार का परिलक्षण विशेष स्थिति में व्यक्ति को प्रभावित करता है।

4.2.5 असमानता की धुरी : जाति और वर्ग

जाति और वर्ग दोनों स्थिति संबंधी समूह हैं। स्थिति वाला समूह ऐसे व्यक्तियों का संघ है जो एक विशिष्ट जीवन शैली तथा विशेष प्रकार की असाधारण सजगता के साथ रहता है। फिर भी जाति को वंशानुगत समूह माना जाता है, जिसका निश्चित कर्मकाण्ड होता है जबकि वर्गों को उत्पादन के संबंध में परिभाषित किया जाता है। एक वर्ग के सदस्यों की समाज में अन्य वर्गों के संबंध में समान

सामाजिक–आर्थिक स्थिति होती है जबकि एक जाति के सदस्य अन्य जातियों के संबंध में या तो उच्च या निम्न कर्मकाण्ड की स्थिति प्राप्त करते हैं।

जाति : एक इकाई और व्यवस्था के रूप में

जाति पर एक इकाई और व्यवस्था दोनों के रूप में विचार किया जाता है। इसे एक ढाँचागत तथा सांस्कृतिक घटना के रूप में भी समझा जाता है। इकाई के रूप में जाति को एक बंद रैंक जाति समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है। अर्थात समूह के सदस्यों की स्थिति, उनका व्यवसाय, तथा जीवन साथी चयन और दूसरों के साथ पारस्परिक संपर्क का क्षेत्र सब कुछ निश्चित होता है। व्यवस्था के रूप में अंतः संबंधित स्थिति और अन्य जातियों के बीच पारस्परिक संबंध का प्रतिमान सभी को सामूहिक प्रतिबंधों के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। अर्थात सदस्यता, व्यवसाय तथा वैवाहिक एवं सामुदायिक संबंध परिवर्तन पर प्रतिबंध होता है। जाति को व्यवस्था के रूप में देखने से पूर्व धारणा यह है कि कोई भी जाति अकेली नहीं रह सकती और प्रत्येक जाति का आर्थिक, राजनीतिक और कर्मकाण्ड संबंधों के नेटवर्क में दूसरी जातियों के साथ गहन संबंध होता है। जाति की "बंद रैंक समूह" विशेषता भी इसके ढाँचे की व्याख्या करती है।

सांस्कृतिक घटना के रूप में जाति को मूल्यों, विश्वास और परंपराओं के एक सेट के रूप में देखा जा सकता है।

4.2.6 वर्ग

एक सामाजिक "वर्ग" व्यक्तियों के दो या अधिक बड़े समूहों में से एक होता है, जिन्हें समुदाय के सदस्यों द्वारा सामाजिक रूप से "उच्च" और "निम्न" स्थिति प्रदान की जाती है। (जिसबर्ग मोरिस : 1961) इस प्रकार एक सामाजिक वर्ग में निम्न तथ्य होते हैं :

- अपने वर्ग के सदस्यों के संबंध में समानता की भावना होती है।

- चेतना होती है कि एक व्यक्ति के व्यवहार का तरीका जीवन के समान स्तर के व्यवहार के सामंजस्य में होगा।
- एक सामाजिक वर्ग के सदस्यों के जीवन स्तर एक जैसा होने की आशा होती है। वे सीमित सीमा में ही अपने व्यवसायों का चयन करते हैं।
- एक वर्ग के सदस्यों में एक जैसा दृष्टिकोण और व्यवहार का अनुभव होता है।
- सामाजिक माप में उच्च वर्ग के लोगों के संदर्भ में हीनता की भावना होती है।
- सामाजिक क्रम में निम्न स्तर के लोगों के संदर्भ में उच्चता की भावना होती है।

4.2.7 जाति और वर्ग की असमानता की धुरी

यदि हम अपने समाज पर दृष्टि डाले तो पाएँगे कि लोग श्रेणियों (जाति और वर्ग) में बंटे हुए हैं। इसका आधार है जन्म, धर्म, जाति, भाषा और बोली, शिक्षा व्यवसाय और धन आदि। समाज के स्वरूप में विभिन्नता होती है। इन विशेषताओं के आधार पर व्यक्तियों को उच्च या निम्न सामाजिक स्तर पर रखा जाता है। इस प्रकार निम्न श्रेणी (जाति और वर्ग) के लोगों के समग्र विकास के मार्ग में अनेक सामाजिक बाधाएँ खड़ी की जाती हैं। इससे अनेक विषमताएँ उत्पन्न हो जाती हैं :

जाति

- श्रमिक श्रेणी विशेषतः सीमांत श्रेणी की गतिशीलता को नियंत्रित करती है।
- अस्पृश्यता, दासता की तरफ ले जाती हैं, जिससे अनेक सामाजिक बुराइयाँ और दोष जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा परंपरा और जातिवाद आदि उत्पन्न होते हैं।
- महिलाओं की निम्न स्थिति के लिए जिम्मेदार है।
- धार्मिक भेदभाव और रूढ़िवाद का आधार है।

कमजोर वर्गों के पक्ष में संपत्ति संबंधी सपने पूरे होने अभी बाकी हैं।

प्रचलित अतः और अंतर जातीय व सामुदायिक असमानताएँ तथा व्यापक असंतोष भी हमारी सामाजिक व्यवस्था की प्रचलित विपरीत स्थितियों का परिणाम है, जैसे :

- हमारी भूमिकाएँ आधुनिक होने के बावजूद हम अभी भी पारंपरिक मूल्यों का पालन करते आ रहे हैं।
- हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि भारत समानता लाने को लिए प्रतिबद्ध है लेकिन वास्तविक रूप से इसमें जाति और वर्ग की युगों पुरानी व्यवस्था कायम है।
- हम बौद्धिक होने का दावा करते हैं लेकिन हम अन्याय और गलत बातों को बर्दाश्त करते हैं तथा भाग्यवादी हताशा के साथ रहना चाहते हैं।
- हम व्यक्तिवाद की बातें करते हैं लेकिन हम सामूहिकता को मजबूत करते हैं।
- अनेक कानूनों के निर्माण और पुराने कानूनों में संशोधनों के बावजूद इनसे आम व्यक्ति को लाभ नहीं हुआ क्योंकि वे या तो लागू नहीं होते या इनमें अनेक खांमियाँ होती हैं जो केवल कानूनी व्यवसाय वालों को लाभ पहुँचाते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) निम्नलिखित कथन सही या गलत है संबंधित कॉलम में ✓ सही का निशान लगाएँ

क) लिंग जैविक वर्गीकरण है।	सही	गलत

ख) समाज कार्यप्रणाली के सभी पक्षों को प्रभावित वाले संगठन के संकेतों का नियम जेण्डर व्यवस्था है। सही गलत

ग) महिलाओं द्वारा आमदनी करने के बावजूद गृह कार्य के प्रति उनके दायित्व अपरिवर्तित रहते हैं। सही गलत

घ) वर्गों को आनुवांशिक समूह समझा जाता है। सही गलत

ङ) जाति महिलाओं की निम्न स्थिति के लिए जिम्मेदार है। सही गलत

च) समाज के स्वरूप में भिन्नता होती है। सही गलत

छ) जाति से उत्पादकता में वृद्धि होती है। सही गलत

2) निम्नलिखित में मुख्य अंतर बताइए :

संदर्भ हेतु अनुभाग 4.2 देखें।

क) जेण्डर और लिंग में अंतर

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ख) जाति और वर्ग

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) समाज में असमानता को बढ़ावा देने वाली जाति और वर्ग प्रथा की पाँच परंपरा बताएँ

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.2.8 गुटबंदी

गुटबंदी ऐसी स्थिति/अवस्था है, जिसमें उप–जातियाँ (जाति के अंदर) अपने उद्देश्य पूरे करने के लिए जाति समूहों की अपेक्षा गुटों (संघर्ष समूहों) के रूप में कार्य करती हैं। प्रो. के.एन. शर्मा ने उन्हें इस विचार से स्रोत समूहों के रूप में

परिभाषित किया है ताकि उनके सकारात्मक कार्य पर जोर दिया जा सके। कभी–कभी समूहों में उद्देश्य पूरा करने की अवधि तक गठबंधन हो जाता है। ऐसे गठबंधनों में अधिकतर परिवार शामिल होते हैं। फिर भी, कुछ मामलों में उन्हीं परिवारों के भाई भी विभिन्न गुटों में शामिल हो जाते हैं और अपने पारिवारिक संबंधों के मूल्य पर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।

गुट/दल (एक ही उप–जाति में) दूसरे परिवारों से चुनौतियों का मुकाबला करने या अदालती मुकद्मों में सहायता और ऐसे अन्य मामलों के लिए कुछ प्रमुख परिवारों का संघ होता है। ऐसे गुट/गठबंधन सायंकाल देखे जा सकते हैं जब लोग अपने खेतों या कार्यालयों से अपने घरों में आ जाते हैं और अपने विश्राम का समय बिताने के लिए छोटे–छोटे समूहों में बैठ जाते हैं। इस तरीके से समूह के साथ घनिष्ठ और अनौपचारिक संबंधों के द्वारा निकटता प्रतिदिन मजबूत होती है और स्थिति की सुरक्षा या रुतबा दिखाने के लिए समय–समय पर शक्ति को सक्रिय किया जाता है। कोई भी गुट कई दशकों या कुछ वर्षों या महीनों तक बने रह सकते हैं या आशा के विपरीत बदल सकते हैं, क्योंकि उसके सदस्यों के एक साथ रहने का कोई निश्चित नियम नहीं है। फिर भी, गुट में जाति/उप–जाति . नगरों और शहरों में उल्लेखनीय रूप से महत्त्वपूर्ण होती हैं।

गुटों की ताकत धन, मानव शक्ति और संसाधनों की गतिशीलता तथा गाँव से बाहर के प्रभाव पर निर्भर करती है। आजकल गुटबंदी गंभीर समस्या बन गई है और हमारे गाँव और जनजातीय समुदायों की पारंपरिक एकता और भाईचारे के लिए गंभीर चुनौती बन गई है।

73वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम के अंतर्गत् पंचायती राज प्रणाली में विभिन्न प्रकार की नेतृत्व की स्थिति की वैधानिक स्वीकृति भी अधिक उपयोगी नहीं रही। अपितु इसने देश में गाँवों के विकास के सभी प्रयासों को व्यापक मजबूती और गंभीरता से निष्फल कर दिया। क्योंकि वे (गुट) एक दूसरे के बिना किसी उचित कारण या तर्क के केवल विरोध प्रदर्शन और अपनी शक्ति दर्शाने के लिए विरोध

करते रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप किसी बाहरी या आंतरिक परिवर्तन एजेंट द्वारा समुदाय में सहयोग और सहकारात्मक दृष्टिकोणों एवं व्यवहारों को बढ़ावा देने के लिए किया गया प्रयास बुरी तरह से व्यर्थ हो जाता है।

4.2.9 सामान्त समूहों के अधिकारों की रक्षा करना

सीमांत लोग

सीमांत समूहों के लोग कोई संगठित क्षेत्रीय समुदाय की संरचना नहीं करते। वे दरिद्रतापूर्ण शोषण को बर्दाश्त करते हुए, उत्पीड़न, हिंसा और ऐसे अनेक अपमान सहते हुए रहने को विवश होते हैं। ये समाज में वे समूह है जो निर्धनता, संस्कृति, भाषा, धर्म, प्रवासीय स्थिति या अन्य हानियों के कारण स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और विकास के अवसरों की दृष्टि से भी अधिक लाभप्रद स्थिति में नहीं होते। उनमें से अधिकतर लोग भूमिहीन श्रमिक, छोटे भू–खंड वाले ग्रामीण निर्धन, कलाकार असंगठित क्षेत्र में श्रमिक, महिलाएं अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति आदि होते हैं।

सीमांत के अधिकारों की रक्षा के लिए विद्यमान प्रावधान

यद्यपि सरकार ने सीमांत लोगों के हितों की रक्षा के लिए और उनके समग्र विकास के लिए विभिन्न संवैधानिक, कानूनी और गैर–कानूनी सामाजिक एवं आर्थिक प्रावधान किए है तो भी उनकी स्थिति में कोई महत्त्वपूर्ण सधार नहीं हुआ है। सामाजिक न्याय की संकल्पना भी समाज के विभिन्न वर्गों विशेषतः सीमांत लोगों को कल्याणकारी सेवाओं/कायक्रमों के लाभ उपलब्ध कराने को लिए सरकार की तरफ तथा राज्य संबंधी कार्रवाई के नए और अधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों की तरफ निहार रही है। कार्य अवधि, श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी निश्चित करने तथा उनकी कार्यदशाएँ सुधारने को लिए

पारिश्रमिक भुगतान, सामाजिक सुरक्षा, नियंत्रणकारी कानून और सामाजिक न्याय आदि से संबंधित विभिन्न कानून बनाए गए हैं। इसके अलावा भूमि सुधार, चकबंदी, हदबंदी समेकीकरण, भूमि हस्तांतरण, ऋण सुविधा तथा ऋण सहायता से संबंधित विभिन्न कानून पारित किए गए हैं। विभिन्न सामाजिक सुरक्षा, आय उत्पादक तथा ग्रामीण आधारभूत ढाँचा विकास योजनाएँ एवं कार्यक्रम लागू किए गए हैं। कुछेक का वर्णन इस प्रकार है :

1) संवैधानिक प्रावधान :

- मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य
- राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत

2) कानूनी और गैर–कानूनी सामाजिक आर्थिक प्रावधान :

- पारिश्रमिक भुगतान अधिनियम 1936 एवं 1971
- न्यूनतम पारिश्रमिक अधिनियम, 1948
- समान वेतन अधिनियम, 1978
- संविदा श्रमिक (विनियमन और उन्मूलन) अधिनयिम, 1971 व 1986
- बंधुआ मजदूर अधिनियम, 1976
- अंतर्राज्यीय आप्रजन अधिनियम, 1979
- सिविल अधिकार रक्षा अधिनियम, 1955
- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार सुरक्षा) अधिनियम, 1989

3) आयोग, कार्यक्रम और योजनाएँ :

- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयोग
- 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम

- सफाई कर्मचारी और उनके आश्रितों की मुक्ति और पुनर्वास की राष्ट्रीय योजनाएँ, 1992
- विशेष क्षेत्र विकास कार्यक्रम (जैसे डी पी ए पी, डी डी पी, आई डब्ल्यू डी पी, एच ए डी पी, सी ए डी पी और आई टी ए डी पी)
- न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम
- राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (जैसे, एन ओ पी एस, एन एफ बी एस, एन एम बी एस और अन्नपूर्णा आदि)

विद्यमान प्रावधानों और कार्यक्रमों में चूक

- सीमांत परिवारों में जागरूकता ओर सग्राह्यता जागृत करने के लिए विद्यमान संप्रेषण माध्यम पर्याप्त और प्रभावशाली नहीं हैं तथा सीमांत लोगों लोगों तक वांछित जानकारी नहीं पहुँच पाती है।
- सीमांत लोगों से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए वृहत् योजनाओं में समेकित उपागम का अभाव।
- उपेक्षित लोगों के सरोकारों को उठाने और दबाव बनाने के लिए मजबूत और शक्तिशाली संगठनात्मक समर्थन का अभाव।

सीमांत लोगों के अधिकारों की रक्षा को लिए उठाए गए कदम

सरकार द्वारा किए गए इन सभी प्रयासों के बावजूद हम पाते हैं कि भारत में सीमांत लोगो की आवश्यकताएँ और समस्याओं का समाधान संतोषजनक ढंग से नहीं किया गया है। उनकी आवश्यकताएँ और समस्याएँ विविध और बहुआयामी हैं। इन्हें समाज के साथ साथ राष्ट्र की सीमांत लोगों के प्रति मनोवृत्ति में परिवर्तन के द्वारा ही हल किया जा सकता है। इसलिए सीमांत लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए निम्नलिखित सुझाव/उपाय प्रभावशाली और उपयोगी हो सकते हैं :

1) उन्हें अपनी स्थितियों/परिस्थितियों तथा इन परिस्थितियों के कारकों के बारे में संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।

2) उन्हें उनके कार्य क्षेत्र और सामाजिक क्षेत्र में उनके संवैधानिक और कानूनी अधिकारों के बारे में जागरूक बनाया जाना चाहिए।

3) दक्षताओं के विकास और आय उत्पन्न करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना भी एक नाजुक पहलू है। व्यवसाय पूर्व प्रशिक्षण वाले कार्यों में प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। उनकी आमदनी बढ़ाने के लिए नए तरीकों, प्रविधियों तथा दक्षताओं से अवगत कराने के लिए चयन किए गए व्यवसायों की प्रकृति के आधार पर प्रशिक्षण एक से छह मास का हो सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में रुचि बनाने को लिए प्रशिक्षण अवधि में नकद या वस्तु के रूप में उनके पारिश्रमिक का भुगतान किया जाना चाहिए क्योंकि वे दैनिक मजदूरी कमाने वाले श्रमिक होते हैं।

4) सभी परिवारों, समुदायों तथा अन्य सामाजिक आर्थिक समूहों के लिए परामर्श सेवाओं का प्रावधान होना चाहिए।

5) ग्राम विकास विशेष कर सीमांत लोगों को उत्थान के लिए ग्रामीण सामुदायिक संगठनों की क्षमता का निर्माण करने, सशक्तीकरण और उसका संपूर्ण उपयोग करने की आवश्यकता है।

6) प्रभावशाली प्रबोधन प्रणाली के साथ सरकार औरध्या गैर–सरकारी संगठनों द्वारा जिला/तालुका और ब्लॉक स्तर पर कानूनी सहायता परामर्श केंद्रों (निःशुल्क या नाममात्र शुल्क के साथ) की स्थापना की सिफारिश करना।

7) इनके वैध दावों के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए तथा संगठित संघर्ष के उन्हें आवश्यक मागदर्शन प्रदान करने के लिए आधारभूत स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक इन लोगों के संगठनों का विकास करना।

8) सीमांत लोगों के लिए स्वयं सहयता समूहों का गठन उनकी सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) गुटबाजी से आप क्या समझते हैं? इसके अस्तित्त्व में आने के उद्देश्य और आधारों की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) किन लोगों को सीमांत कहा जाता है? इस समूह के अधिकारों की रक्षा के लिए सरकार द्वारा किए गए किन्हीं पाँच उपायों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 व्यापक नीतियों का प्रभाव

प्रत्येक व्यक्ति इस बात से सहमत है कि भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने देश के अंदर तथा विभिन्न देशों के बीच धनी और निर्धन के बीच के अंतर को अत्यधिक बढ़ा दिया है। भूमण्डलीकरण का सिद्धांत है "बाजार शक्ति आधारित अर्थव्यवस्था"। सरकारी कार्रवाई और नियंत्रण को मुद्रास्फिति, ऋण और आर्थिक मंदी के कारण के रूप में देखा जाता है जबकि निजी क्षेत्र को दक्षता और वृद्धि को उन्नतिशीलता के रूप में बढ़ावा देने वाला समझा जाता है। इसलिए विश्वव्यापी एवं राष्ट्रीय सोच तथा नीति निजीकरण, उदारीकरण की तरफ उन्मुख हो गई है तथा आर्थिक सहायता, विनियमन और राष्ट्रीय उपक्रमों के प्रोत्साहन को नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय सहायता में कमी तथा बढ़ते ऋण ने अनेक देशों को विश्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन द्वारा लागू शर्तों को मानने के लिए विवश कर दिया है। इनमें से कुछ शर्ते विशेषतः भारत के संदर्भ में इस प्रकार हैं:

- कृषि से आर्थिक छूट हटाना
- आयात प्रतिबंध पर से रोक हटाना
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली को समाप्त करना
- विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत में आने की अनुमति देना
- बौद्धिक संपत्ति अधिकारों को स्वीकार करना
- भारतीय पेटंट अधिनियम को रद्द करना।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं जैसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन हमारे देश की नीतियों और कार्यक्रमों को अपने निहित स्वार्थ तथा विकसित देशों के हित को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं जो सामान्यतः आम लोगों विशेषतः उपेक्षित लोगों को बुरी तरह से प्रभावित करते हैं जैसेः

1) विकास के लिए 'वृद्धि पर आधारित मॉडल' का उद्देश्य केवल आर्थिक प्रगति और देश में सकल घरेलू उत्पादन (जी डी पी) बढ़ाना है। लेकिन इसे भारी सामाजिक आर पर्यावरणीय कीमत पर प्राप्त किया जा सकता है। तीन दशकों में यह स्पष्ट हो गया है कि दबाव डालने वाले मॉडलों ने समाज के बहुत बड़े अनुभागों की अनदेखी की है, जिससे विषमता में अधिक वृद्धि हुई है और वंचित वर्गों को और अधिक सीमांत कर डाला है। कमजोर वर्गों के लिए आरंभ किए गए विशिष्ट कार्यक्रम प्रभावी होने में असफल हो गए क्योंकि लोगों को केवल लाभार्थी समझा गया है तथा विकास के 'उद्देश्य' के लिए मान लिया गया।

2) इस प्रकार 'प्रभावशील शक्ति संरचना' द्वारा अपनाया गया 'निम्न स्तर तक टपकने का सिद्धांत' वांछित विकास का विस्तार नहीं कर सका और गरीबी रेखा से नीचे वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई। विकास के नाम पर प्रकृति का भरपूर दोहन हो रहा है, जिससे पर्यावरण को अपूर्णीय क्षति हो रही है। संसाधनों को केंद्रीयकरण और नियंत्रण अब कुछ लोगों के हाथों में आ गया है जबकि अधिकांश जनता कायक्रमों की निष्क्रिय लाभार्थी समझी जाती है तथा विकास के लिए उपकरण मात्र है।

3) 'हरित क्रांति' ने छोटे और सीमांत किसानों को और अधिक सीमांत बना दिया है और वे प्रक्रिया में भूमिहीन हो गए। ये किसान नई प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में असमर्थ है तथा उन्होंने अपनी भूमि बड़े भूमि मालिकों को बेच दी बड़े जमींदार सरकार द्वारा प्रदत्त आर्थिक छूट के लाभ उठाने से

और अधिक धनी हो गए। भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा औद्योगिकरण पर अधिक बल देने से शहरों की तरफ अधिक अभिनति (झुकाव) हो गयी है। ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था इतनी अधिक क्षतिग्रस्त हो गई कि रोजगार की तलाश में शहरों में ग्रामीणों की बाढ़ सी आ गई। चूँकि शहरों में बड़ी जनसंख्या को बसाने की क्षमता नहीं है इसलिए स्वास्थ्य, सफाई, शिक्षा, उपभोगवाद और बेरोजगारी से संबंधित समस्याओं ने शहरों में पहल से विद्यमान विषमता को और अधिक बढ़ा दिया।

5) प्रौद्योगिकी में बड़ी तेजी से विकास हो रहा है, जिसका लाभ की वृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जिससे भारतीय समाज में कमजोर और सुभेद्य वर्ग और अधिक सीमांत हो गए हैं।

6) इसके अतिरिक्त खाद्यान की अच्छी फसल देने वाली अनेक श्रेणियों का धनी देशों ने विकास किया, जिनका उद्देश्य उपभोग को लिए किया जा सकता था और खेत में फसल उगाने के लिए नहीं, जिससे भारत जैसे विकासशील देश में बीज बाजार की एकाधिकारिता की स्थिति और भी खराब हो गई क्योंकि किसानों को ऊँचे मूल्य पर बीज खरीदने के लिए विवश होना पड़ता है तथा परिस्थितियों से विवश होकर अपनी पैदावार को 'रद्दी के मूल्य' पर भारी नुकसान उठाकर बेचना पड़ता है।

7) यहाँ तक कि जीवन रक्षक औषधियों पर विकसित देशों का एकाधिकार है और वे आम आदमी की क्रय शक्ति से काफी ऊँचे मूल्य पर बेची जाती है।

8) भारत में अब तक विभिन्न क्षेत्रों जैसे ऊर्वरक, बिजली, पेट्रोल, डीजल आदि में आर्थिक छूट का फायदा उठाने को बंद करने के लिए विश्व बैंक का दबाव है, जिसका आर्थिक बोझ देश में आम व्यक्ति पर तथा विशेष रूप से सीमांत और छोटे किसानों और छोटे उद्यमियों पर पड़ा है। इससे विभिन्न

प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और वितरण बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) हमारी व्यापक योजनाओं और कार्यक्रमों को गहन रूप से प्रभावित करने वाले अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्येक रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त शब्द का चयन कीजिए।

बाजार शक्तियाँ, आधिपत्य शक्ति संरचना, सुभेद्य वर्ग, ग्रामीण कृषि एवं पर्यावरणीय संकट, प्रौद्योगिकी, रोजगार की तलाश में शहर, पर्यावरण संतुलन, सीमान्तीकरण, छोटे और सीमांत किसान, नई प्रौद्योगिकी का उपयोग

i) भूण्डलीकरण के साथ संबद्ध सिद्धांत है ..... की अर्थव्यवस्था।

ii) ..... द्वारा अपनाया गया नीचे पहुँचाने के सिद्धांत ने अपेक्षित विकास नहीं किया।

iii) ..... के विकास के लिए आरंभ किए गए विशेष कार्यक्रम प्रभावी होने में असफल रहें।

iv) हरित क्रांति ने (iv क) .....को और अधिक उपेक्षित बनाया क्योंकि वे (iv ख) ..... का उपयोग करने में असमर्थ थे।

v) (v क)..... अर्थव्यवस्था इतनी अधिक क्षतिग्रस्त हो गई कि प्रवास (v ख) ..... में बाढ़ सी आ गई।

vi) (vi क) ..... में तेजी से विकास ने कमजोर और सुभेद्य वर्गों की (vi ख) ..... में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

vii) प्राकृतिक संसाधनों के अनियोजित दोहन बुरी तरह से (vii क) .... को विकृत कर दिया और गंभीर रूप से (vii ख) ....उत्पन्न किया।

4.4 संगठनात्मक रणनीतियाँ

अपने विशिष्ट लक्ष्य और हितों के लिए असंगठित लोगों को संगठित करने की प्रक्रिया यूनियन है। यूनियन निर्माण में दलित, शोषित, कमजोर, सुभेद्य तथा सीमांत लोग (व्यक्ति, समूह और/या समुदाय) स्वेच्छा से स्वयं को शामिल करके युनियन (युनियनों) में संगठित कर लेते हैं। इसका आधार उनकी आवश्यकताओं/समस्याओं/मुद्दों की समानता के आधार पर पहचान करने तथा उनको प्राथमिकता के आधार पर क्रमबद्ध करते हैं ताकि वे सामूहिक कार्रवाई के

द्वारा अपने हितों की रक्षा करने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए अपनी आवश्यक माँगे पूरी करवा सके। इसमें सामुदायिक संगठन और विकास प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में बहुमत का शासन और सामुदायिक लोगों की अधिकतम भागीदारी सिद्धांत को स्वीकार किया जाता है।

सामान्य स्थिति में परिवर्तन करने की समग्र उपागमों को रणनीति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें कार्यकर्त्ताओं और मुवक्किलों (सेवाग्राहियों) की भूमिका, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला कार्य निष्पादन और प्रयुक्त की जाने वाली पद्धतियाँ और तकनीकें शामिल है।

लक्ष्य समूह अर्थात सामुदायिक लोगों की युनियन बनाने के लिए यूनियन निर्माण की निम्नलिखित रणनीतियों का इस्तेमाल किया जा सकता है। आइए इनमें से कुछ की हम चर्चा करें:

- सूचनाएँ एकत्रित करना और सामुदायिक बैठकें
- आंतरिक जागृति
- योजनाओं और कार्यकमों का निर्माण (Participatory Rural Appraisal-PRA)
- कार्य क्षमता का निर्माण
- सहकार और समन्वय
- नेटवर्क बनाना

सूचना एकत्र करना और सामुदायिक बैठकें

यह भाग सामुदायिक लोगों के साथ औपचारिक तथा अनौपचारिक बैठकों के बारे में वर्णन करता है। विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए समुदाय का अवलोकन तथा उनका अध्ययन करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त इसमें निम्न तथ्य शामिल हैं:

क) आवश्यकताओं/समस्याओं/मुद्दों की क्रमबद्धता तथा उनके भागीदारों की पहचान करना तथा उन्हें प्राथमिकता प्रदान करना।

ख) इन अनुभूत आवश्यकताओंध्समस्याओं की प्राथमिकताओं के बारे में जागृति उत्पन्न करना तथा सामुदायिक लोगों में चेतना लाना।

ग) केंद्रीय/साधन परिपूर्ण व्यक्तियोंध्जनाधार वाले नेताओं तथा विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक/व्यवसायिक समूहों और उप–समूहों की पहचान करना।

आंतरिक जागृति

यह रणनीति पौलो फेरियर की शिक्षा के माध्यम से जनता में जागरूकता और संवेदनशीलता जागृत करने की विचारधारा पर आधारित है। उनके विचार में यदि गरीबों तथा दलितों आदि को अपनी वस्तुस्थिति का विश्लेषण करने को लिए प्रेरित किया जाए तो वे इसके परिवर्तन में भी सक्रिय भागीदार हो सकते हैं। तर्क और चिंतन के माध्यम से प्राप्त चेतना कारण की गई कार्रवाई वर्तमान आर्थिक संरचना में शोषक मनोवृत्तियों को कम कर सकती है।

योजनाओं और कार्यक्रमों की योजना बनाना तथा संरचना (पी आर ए के माध्यम से) करना

योजना निर्माण में किसी समस्या के आरंभ होने की जानकारी से लेकर उसके समाधान तक उठाए गए कदमों की समग्र प्रक्रिया शामिल है। इसे चाहे कुछ लोगों से संबंध स्थापित कर परियोजना के विकास की संरचना में उन्हें शामिल कर प्राप्त किया जा सकता है। लोगों की इस विशिष्ट आवश्यकता को पूरा करने के लिए भागीदारी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक (पी आर ए) को लागू करना आवश्यक है।

भागीदारी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक (पी आर ए)

पी आर ए को स्थानीय लोगों द्वारा अपनी जीवन स्थिति और ज्ञान के आधार पर विश्लेषण करने, योजना बनाने तथा कार्य करने के लिए सक्षम बनाने की पद्धतियों और उपागमों (दृष्टिकोणों) के सदृश्य माना जाता है। इसमें शामिल हैं :

i) ग्रामीण जनगणना का मानचित्र बनाना

ii) संसाधन और संस्थागत मानचित्र बनाना

iii) सारे गाँव का आर–पार दौरा करना

iv) समय रेखा

v) धारणा का चित्रण करना

vi) मैट्रिक्स और धन का विवरण

क्षमता निर्माण

जैसे–जैसे निर्धन लोगों की क्षमता (उनके कौशलों का सुधार और इस्तेमाल करने के द्वारा, उनका अनुभव और मनोवृत्ति बदलने के द्वारा तथा जिम्मेदार भागीदार के रूप में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के द्वारा) मजबूत बना कर और उनकी आवाज सुनना आरंभ किया जाता है, वे सरकार और निजी क्षेत्र की एजेंसियों से माल और सेवाएँ माँगने और उसको प्रदान करने के दावेदार बनने में सक्षम हो जाते हैं। इन परिवर्तित हालात में उनकी आवश्यकताएँ पूरी करने वाली तंत्र प्रणाली भी बदल जाएगी।

सहकार और समन्वय

जब दो या अधिक व्यक्ति (अर्थात सहायक) एक सामान्य कार्य योजना के आधार पर मिल कर कार्य करते हैं तो इसे सहकार कहा जाता है। सहकार में प्रत्येक सहायक मुवक्किल (सेवाग्राही) के कार्यध्सेवा के कुछ विशेष संदर्भों के लिए

उत्तरदायी होता है। वे एक या अनेक एजेंसियों से संबधित हो सकते हैं तथा वे समाज कार्यकर्त्ता और/या अन्य व्यवसायिक कार्यों से संबंधित हो सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सहकार प्रदान की जा रही विभिन्न सेवाओं के एकीकरण का माध्यम है। इसमें प्रत्येक भागीदार द्वारा निभाई जा रही भूमिका और सेवाओं का विवरण होता है तथा इस तथ्य को सुनिश्चित करता है कि सेवाग्राहियों को कोई विरोधी और भ्रमित संदेश नहीं दिए जा रहे।

जबकि समन्वय में दो या अधिक सेवा प्रदाता मिलकर कार्य करते हैं। इसमें सामान्य कार्य योजना शामिल नहीं होती है। अपित इसमें दो या अधिक कार्य–योजनाएँ हो सकती हैं। प्रभावशाली समन्वय के लिए वांछित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मिलकर कार्य की भावना का होना आवश्यक है। फिर इसमें शामिल सभी संबधित व्यक्तियों और एजेंसियों का परस्पर संतुष्ट होना भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

नेटवर्क बनाना

किसी सामान्य उद्देश्य या साझे के लक्ष्य को पूरा करने के लिए विभिन्न सामाजिक संरचनाओं को एक साथ मिलाने के लिए नेटवर्क बनाने की समाज कार्य नीति का भी उपयोग किया जाता है। नेटवर्क बनाने में दूसरे व्यक्तियों के संसाधनों तथा सामाजिक प्रणालियों तक पहुँचने के लिए समन्वित और सहयोगात्मक संबंध स्थापित किया जाता है। समाज कार्यकर्त्ता मानव सेवा प्रदाता संगठनों, अन्य सामाजिक संरचनाओं जैसे व्यापार और उद्योग तथा प्रभावशाली सामुदायिक नेताओं के साथ नेटवर्क बनाते हैं। नेटवर्क ज्ञात सेवा अंतरालों और बाधाओं को कम करने में सहयोग को बढ़ावा देता है तथा अपूर्ण सेवा देने वाली आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एजेंसियों में परस्पर योजना निर्माण को बढ़ावा देता है।

निर्धन लोगों की यूनियन बनाना, संगठित करने की समस्या जटिल होती है। लेकिन ऐसे . भी उदाहरण हैं जहाँ एक जैसे आर्थिक हितों के आधार पर निर्धन लोग स्वयं संगठित हो गए और इसके द्वारा उन्होंने स्थानीय सरकार में अपने लटकते हुए महत्त्व को स्थापित किया, जिसका काफी समय से इंतजार था। या फिर उन्होंने हित समूहों, छोटे किसानों, सहकारी संस्थाओं, भूमि विहीन श्रमिकों, यूनियनों, महिला संगठनों के संघों ग्रामीण युवा दलों या सीधी राजनीतिक कार्रवाई के लिए राजनीतिक रूप से लाभ न मिलने वालों के संगठन (जैसा तमिलनाडु में तंजोर के मामले में हुआ था) के आधार पर नियामक संगठन बनाने के द्वारा अपना महत्त्व स्थापित किया। इस प्रकार के प्रयोग आनंद डेरी, गुजरात, श्रीलंका, बंगलादेश की कोमिला परियोजना तथा चीन के साथ–साथ मॉरीशस, बर्मा आदि में भी देखे जा सकते हैं।

4.5 प्राधिकारियों से निपटना

अधिकारी वह व्यक्ति होता है, जिन्हें आदेश देने और दूसरों से पालन करवाने का अधिकार होता है। ये सरकार के विभिन्न विभागों में होते हैं जो नीति और योजना निर्माण, कार्यान्वयन, कानून और व्यवस्था की स्थापना (शांति और सद्भाव के साथ) तथा लोगों को सामाजिक न्याय प्रदान करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। दूसरों शब्दों में, अधिकारियों को छोटे से गाँव से लेकर संपूर्ण राष्ट्र तक में लोगों के समग्र और स्थाई विकास के लिए अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करना होता है। लेकिन जनाधारित शैली के स्थान पर अधिकारियों में स्व–केंद्रित कार्य शैली के कारण यह संभव न हो सका, जिसके फलस्वरूप, अधिकतर लोगों की दयनीय हालत है। उनकी हालत सुधारने तथा उनको उचित हक प्रदान करने को लिए आवश्यकता होने पर निम्नलिखित कार्यनीतियों का उपयोग किया जा सकता है :

i) याचिका प्रस्तुत करना

ii) समझाना एवं राजी करना

iii) समझौता करना

iv) वार्तालाप/संधि करना

v) दबाव बनाना और आंदोलन करना

vi) विरोधात्मक/संघर्षात्मक कार्यनीतियाँ

याचिका प्रस्तुत करना : यह एक लिखित प्रार्थना होती है इसमें संक्षिप्त रूप से मुद्दे और समस्याएँ, उनका स्वरूप तथा लोगों की पीड़ा की सीमा होती है, जिस पर प्रभावित और/या रुचि रखने वाले लोगों के हस्ताक्षर होते हैं, जो संबंधित अधिकारियों को समस्या के स्थाई समाधान के लिए प्रस्तुत की जाती है। इसे संबंधित अधिकारियों को भेज दिया जाता है।

समझाना एवं राजी करना : याचिका संबधित अधिकारियों के पास पहुँचने के बाद जब कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता तो समझाने की नीति का प्रयोग किया जाता है। इसमें व्यक्तियों को आवश्यक सूचनाएँ प्रदान कर उनका दृष्टिकोण बदलने के लिए प्रभावित करने के प्रयास किए जाते हैं। इसमें तर्क तथा युक्ति के द्वारा आवश्यकता बताकर तथा विशेष दृष्टिकोण स्वीकार कर समस्या/मुद्दों का समाधान कराने के लिए दूसरों को प्रेरित करने के लिए अनेक क्रमिक कार्यध्प्रक्रियाएँ अपनाना भी शामिल है।

समझौता करना : समझौता करना दो पक्षों के बीच चर्चा और संधि करने की प्रक्रिया है, जिसमें एक या दोनों पक्ष सामंजस्य पूर्ण कार्य करने वाले व्यक्तियों के समूह होते हैं। परिणामकारी समझौता निरंतर प्रदान की जाने वाली सेवा के अंतर्गत् शर्तों और निबंधनों की शपथ होती है। (सामाजिक विज्ञान का एनसाइक्लोपीडिया)

वार्तालाप/संधि करना : इसमें किसी विशेष मुद्दे/समस्या पर असहमति रखने वाले दो या दो से अधिक पक्षों के बीच संप्रेषण (बातचीत) द्वारा संबंध बनाए जाते

हैं। ये संबंध इसलिए स्थापित किए जाते हैं ताकि संबंधित समूह अपनी–अपनी कठिनाइयों का समाधान कर सके तथा एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझ सके और पारस्परिक रूप से स्वीकृत निर्णय कर सके। यदि सभी संबंधित पक्षों को स्वीकार हो तो सामुदायिक संगठनकर्त्ता संधि कराने वाले के रूप में कार्य कर सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसा दृष्टिकोण बनाता है, जिसके कारण विरोधी समूह अपने मत भेदों को दूर करने के लिए एक मंच पर आ जाते हैं।

दबाव बनाना और समर्थन करना : दबाव बनाना एक ऐसी तकनीक है, जिसमें विधान एवं विधान बनाने के लिए जनमत का पक्ष प्रभावित कर वैधानिक विचारधारा को दबाव बनाने वाले की तरफ से उस समूह या हित के पक्ष में जनमत तैयार किया जाता है।

विधान को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने के प्रयास के बावजूद, लॉबी बनाने वाले लॉबी की दबाव समूह तकनीक का प्रयोग कर सकते हैं, जिसमें अपने उद्देश्य के लिए दबाव समूह व्यापक जन समर्थन प्राप्त होने को प्रकट करते हैं। यह दिखावा वास्तविक या बनावटी हो सकता है। जो भी हो इसका उद्देश्य वैधानिक नीति को प्रभावित करना होता है।

समर्थन में अपने उन मुवक्किलों (सेवाग्राहियों) के लिए अनुरोध और संघर्ष करना शामिल है, जिन्हें सेवा प्रणाली दूसरे तरीकों से सहायता करने से मना कर दिया गया है। इसके लिए नियमों और विनियमों या सेवा को लिए मुवक्किल (सेवाग्राही) के अधिकारों की विभिन्न व्याख्या करने या उनका अपवाद ढूँढ़ने की आवश्यकता होती है और किसी एजेंसी की सेवाएँ प्राप्त करने में सेवाग्राहियों के मार्ग की बाधाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने की भी आवश्यकता होती है। समर्थन में कार्यकर्त्ता सेवाग्राही की तरफ से आवाज उठाते हैं। समर्थन करने में शामिल होने से पूर्व इस तरीके से मध्यस्थता करने वाले कार्यकर्त्ता को सेवाग्राही/सेवाग्राहियों की इच्छा (इच्छाओं) के बारे में निश्चित होना आवश्यक है। सेवाग्राही को इसमें शामिल जोखिम को अवश्य जान लेना चाहिए तथा यदि सेवा (सेवाएं) उपलब्ध हो

जाती है तो इनका उपयोग करने के लिए प्रेरित भी किया जाना चाहिए। फिर कार्यकर्त्ता को भी समर्थन तकनीक प्रयोग करने पर सेवाग्राही के लिए शामिल जोखिम का मूल्यांकन करना चाहिए।

विरोधात्मक संघर्षात्मक रणनीतियों : आरंभिक अनुमान यह है कि विरोधात्मक और संघर्षात्मक नीति पूर्ववत् स्थिति का समर्थन करने वालों तथा परिवर्तन का पक्ष लेने वालों के बीच परस्पर संघर्ष में लागू होती है। अतः स्पष्ट है कि सामुदायिक संगठन और कार्यवाही आरंभ करने की प्रक्रिया में संघर्ष का तत्त्व अनिवार्य है। इसमें प्रतिरोधात्मक तकनीके जैसे विरोध करना, प्रदर्शन करना और सिविल अवज्ञा या प्रत्यक्ष सीधी कारवाई आदि करना आवश्ययक हो सकता है।

फिर भी यह याद रखना आवश्यक है कि सिविल अवज्ञा या सीधी कार्रवाई आदि की अपेक्षा विरोध और प्रदर्शन के द्वारा लोगों को गतिशील करना अधिक आसान है।

4.6 विरोध और प्रदर्शन

जब लोग अपनी आवश्यकताओं को हतोत्साहित करने वाली सामाजिक संस्थाओं से असंतुष्ट होते हैं तो उनकी सामाजिक समस्या का समाधान न करने वाली उन सामाजिक संस्थाओं को बदलना चाहते हैं। यह स्थिति उनमें सामाजिक तनाव, अशांति और अस्थिरता पैदा कर देती है तथा सामाजिक आंदोलन की तरफ ले जाती है। इस प्रकार सामाजिक अदिोलनों को समाज में परिवर्तन के सामूहिक प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। प्रायः इन्हें सामाजिक अन्याय से सद्मा में आए पीड़ित लोग आरंभ करते हैं। सामाजिक आंदोलन विरोध, प्रदर्शनों, रैलियों, विद्रोहों और हंगामों का स्वरूप ले सकते हैं।

विरोध

विरोध/सरकार/संगठन/लोगों की एसोसिएशन या समूह या विद्यमान व्यवस्था द्वारा थोपी गई सरकारी नीति/समाप्त की गई सुविधा/किसी प्रकार के कर में वृद्धि या किसी अन्य अनुचित स्थिति के लागू करने की मौखिक या लिखित और/या असंतोष, असहमति का अस्वीकृति कानूनी अभिव्यक्ति होती है।

यह किसी प्रस्तावित परिवर्तन को रोकने या पहले आरंभ किए गए किसी परिवर्तन को स्थाई करने का प्रयास होता है। देखा गया है कि प्रतिरोध/विरोध में प्रायः अत्याचार एक कारण होता है और पीड़ित व्यक्ति मुख्यतः प्रतिरोध/विरोध करने वाले होते हैं।

विरोध की निम्नलिखित कुछ विशेषताएँ हैं :

1) विरोध मुख्यतः भावनाओं की अभिव्यक्ति है।

2) यह अभिव्यक्ति मौखिक, लिखित या कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से हो सकती है।

3) विरोध का मुख्य उद्देश्य सरकार, संस्था या विद्यमान व्यवस्था द्वारा आरंभ किए गए कार्य का विरोध या अस्वीकृत करना है।

4) विरोध का कारण सामान्यतः लोगों पर अत्याचार और विशेषतः लोगों के कुछ वर्गों पर अत्याचार करना होता है।

5) पीड़ित व्यक्ति विरोध में 'मुख्य विरोध करने वालों के रूप में सक्रियता से भाग लेते हैं।

6) विरोध सामान्य होने की अपेक्षा वर्ग सापेक्ष होता है।

7) किसी सामाजिक कारण (कारणों) के लिए समय समुदाय विरोध नहीं करता।

प्रदर्शन

प्रदर्शन सरकार/सार्वजनिक संगठनों/संस्थाओं या संघों के पहले से ही पक्ष/समर्थन अथवा विरोध में लोगों की भावनाओं/संवेदनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति की एक पद्धति है। प्रदर्शन में लोग अपनी मांगों या भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए एक साथ एकत्रित होते है। प्रदर्शन करने वाले समूह के सदस्य बैठकों, रैलियों या सार्वजनिक जुलूस के द्वारा तोड़–फोड़ की अपेक्षा अपनी समस्याओं की आवाज उठाने में अधिक रुचि रखते हैं।

प्रदर्शनकारी भीड़ हिंसात्मक तरीकों से तितर–बितर करने के प्रयत्न के कारण यह आक्रामक/प्रतिरोधात्मक भीड़ में परिवर्तित हो सकती है। यह समूह को समस्या के कारण तथा अब तक की कार्रवाई के परिणाम को भी अच्छी तरह समझने में सक्षम बनाता है।

एक अच्छा प्रदर्शन

- प्रदर्शनकारियों के वास्तविक जीवन की महत्त्वपूर्ण और वास्तविक समस्या (समस्याओं)/स्थिति (स्थितियों) पर आधारित होना चाहिए।
- इसमें जनता (श्रोताओं) को प्रेषित करने वाले सही संदेश का पहले से निर्णय कर लेना चाहिए।
- जनता द्वारा समझ में आने और स्वीकार किए जाने वाले संदेश को सरल बनाता है।
- लोगों में स्पष्टीकरण और चर्चा को सहज बनाता है।
- सहानुभूतिपूर्ण और पक्ष में वातावरण बनाता है।
- प्रदर्शित करने वाली आवश्यक चीजें (जैसे पोस्टर चाटें विज्ञापन और आदि) पहले से तैयार रखता है।

- जिसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध सस्ती और अच्छी सामग्री का प्रभावशाली और दक्षता से उपभोग किया जाता है, जिससे अनावश्यक खर्च कम हो जाता है और लोगों से प्रशंसा मिलती है।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संगठन बनाने की रणनीतियों की विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्राधिकारियों के साथ निपटने की रणनीतियाँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) प्रदर्शन और विरोध के किन्हीं पाँच गुणों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.7 सारांश

इस इकाई में आपने जेण्डर, जातियों और वर्गों के अर्थ, जेण्डर एवं लिंग में अंतर, जेण्डर प्रथा की अवधारणा और इसके तत्त्व तथा जेण्डर, जातियों और वर्गों के कारण समुदाय में प्रचलित असमानता के बारे में जानकारी प्राप्त की है। आपने देखा कि कैसे विभिन्न गुट गुटबंदी को बढ़ावा देते हैं? आज कल इससे पारंपरिक एकता तथा हमारे ग्रामीण और शहरी समुदायों का भाई–चारा समाप्त हो रहा है। हमने सीमांत लोगों का अर्थ, उनके हितों की रक्षा के लिए विद्यमान संवैधानिक, कानूनी, और गैर–कानूनी सामाजिक–आर्थिक प्रावधानों, इनमें दोषों तथा इनके अधिकारों की रक्षा के लिए उठाए गए कदमों की भी चर्चा की है। हमने सामान्य जनता तथा विशेषतः सीमांत लोगों पर व्यापक नीतियों के होने वाले प्रभावों से अवगत कराने का प्रयास किया है।

आपकी जानकारी के लिए हमने विभिन्न रणनीतियों जैसे यूनियन निर्माण, अधिकारियों से व्यवहार करना, विरोध और प्रदर्शन आदि को स्पष्ट किया है। यूनियन निर्माण में मुख्यतः अंतः जागरूकता की प्रक्रिया एवं स्थिति शामिल है। योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रतिपादन में पी आर ए, क्षमता निर्माण, सहकार,

समन्वय और नेट वर्किंग के माध्यम से निर्माण को प्राथमिकता दी जाती है। अधिकारियों से व्यवहार करने में याचिका प्रस्तुत करना, समझाना एवं राजी करना, समझौता करना, संधि करना, दबाव बनाना व समर्थन करना तथा प्रतिरोध/संघर्षात्मक रणनीतियाँ शामिल होती हैं। विरोधों और प्रदर्शनों की बुनियादी विशेषताएँ और उनके प्रभावशाली उपयोग का भी वर्णन किया गया है। प्रायः विरोध और प्रदर्शन सहानुभूतिपूर्ण और सहायक वातावरण उत्पन्न करता है।

4.8 शब्दावली

भूमण्डलीकरण : इस उक्ति का उपयोग विश्व अर्थव्यवस्था की तरफ अग्रसर होने का संकेत देने के लिए किया जाता है जहाँ सीमाएँ समाप्त हो जाती है।

हरित क्रांति : हरित क्रांति उक्ति का उपयोग भारत की कृषि उत्पादन, उत्पादकता विशेषतः बड़ी खाद्यान्न फसलों के मामले में 60वें दशक के उत्तरार्ध में नई कृषि नीति अपनाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न स्थिति को दर्शाने को लिए किया जाता है।

व्यापक नीतियाँ : आबादी के बड़े वर्गों को प्रभावित करने वाली तथा उत्पादन, और आमदनी, जीवन स्तर में सुधार और समग्र विकास आदि से संबंधित नीतियाँ।

पैतृकता : इसे विशेषतः इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता हैः

- पिता का शासन
- पुरुष प्रधान व्यवस्था जहाँ पुरुष को श्रेष्ठ समझा जाता है।

- निर्णय लेने की प्रक्रिया और संसाधन तक पुरुषों की अधिक पहुँच होना।
- पैतृक संरचना और प्रणाली पुरुष श्रेष्ठता के सिद्धांत पर आधारित है।

सामाजिक व्यवस्था : अंर्तसंबंधित और अन्योन्याश्रित भागों (व्यक्ति और उप व्यवस्थाएँ) से बनी हुई व्यवस्था।

नीचे तक पहुँचने वाला सिद्धांत : यह सिद्धांत सकल राष्ट्रीय उत्पादन में जोर देता है और तीसरी पंचवर्षीय योजना तक यह माना जाता था कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद के लाभ जनता तक पहुँचेंगे और उनके आय का स्तर बढ़ेगा। लेकिन जैसा माना गया था वैसा नहीं हुआ।

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

कॉक्स, एफ.एम. एट.एल. (इडी) (1987), स्ट्रेट्जी ऑफ कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन : ए बुक ऑफ रीडिंग्स, पथ एडीसन इटास्का, 12, एफ ई पीकॉक।

दूबे मुचकुंद (प्रकाशित) (1995), इंडियन सोसायटी टु डे : चैलेंजेंज ऑफ इक्विलिटी, इंटीग्रेसन एंड एम्पावरमेंट, नई दिल्ली, हर आनंद पब्लिकेशन।

गंगराडे, के.डी. (1971), कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन इन इंडिया, बॉम्बे, पापुलर प्रकाशन।

घुर्ये, जी.एस. (1961), क्लास, कास्ट एंड आकुपेशन, बम्बई, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

पॉस्कल गिस्बर्ट एस.जे. (1999), फण्डामेंट्ल्स ऑफ सोशियोलॉजी, हैदराबाद : ओरिएंट लॉगमैन लि., थर्ड एडिशन।

पठानिया सुनीता (1999). ग्लोबलाइजेशन कल्चर एंड जेंडर : सम इश्यूज ग्लोबलाइजेशन, कल्चर एंड वूमैन डेवलपमेंट, जयपुर, रावत पब्लिकेशंस।

पौलो फ्रेयर (1992), पेडागोगी ऑफ द ओप्रेस्ड, पेंगुइन बुक।

सिद्दकी, एच.वाई. (1997), वर्किंग विद द कम्यनिटी : एन इंट्रोडक्शन टु कम्युनिटी वर्क, नई दिल्ली, हीरा पब्लिकेशंस।

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) क) गलत

ख) सही

ग) सही

घ) गलत

ड.) सही

च) गलत

छ) गलत

2) क) जेण्डर और लिंग में अंतर इस प्रकार है :

जेण्डर	लिंग
सामाजिक रूप से परिभाषित सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर के बारे में	जैविक रूप से परिभाषित प्राकृतिक अंतर की चर्चा की जाती है।

चर्चा की जाती है। समाज द्वारा बनाए जाते हैं परिवर्तनीय हैं।	 प्राकृतिक रूप से बनते हैं। स्थाई हैं।

ख) जाति और वर्ग में अंतर निम्नलिखित प्रकार हैं :

जाति	वर्ग
वंशानुगत माना जाता है। स्थिर कर्मकाण्ड की स्थिति होती है। जाति के सदस्य दूसरी जातियों के संदर्भ में या तो उच्च या निम्न कर्मकाण्ड की स्थिति में होते हैं। सदस्यों में कोई व्यक्तिनिष्ठ सजगता आवश्यक नहीं होती।	उत्पादन के संदर्भ में समझा जाता है। कोई स्थिर कर्मकाण्ड की स्थिति नहीं होती। एक वर्ग के सदस्य समाज में अन्य वर्ग के संदर्भ में एक जैसी सामाजिक आर्थिक स्थिति रखते हैं। किसी वर्ग में बने रहने के लिए सजगता आवश्यक है।

3) जाति और वर्ग मूलतः समाज में असमानता बनाए रखने को लिए उत्तरदायी हैं जैसे वेः

क) महिला की निम्न स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं।

ख) उनकी जाति, वंश, रंग और वर्ग के बावजूद सभी को समान अधिकार प्रदान नहीं करते।

ग) विभिन्न निम्न जातियों और वर्गों तथा विशेषतः सीमांत समूहों में अभावग्रस्त होने की भावना पैदा करते हैं।

घ) कम अवसर प्राप्त निम्न जाति और वर्गों के पक्ष में संपत्ति संबंधों की अदला–बदली न करने के लिए प्रश्न खड़े किए जाते हैं।

ङ) गुलामी और कई अन्य सामाजिक बुराइयाँ और कुरीतियों को बढ़ावा देते हैं।

बोध प्रश्न II

1) गुटबाजी को उस स्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें उप जातियाँ (एक जाति में) एक जाति की समूह की अपेक्षा अपने स्वार्थों/उद्देश्यों के लिए दलों या गुटों (विरोधी–समूहों) के रूप में कार्य करती हैं। जब वह उद्देश्य पूरा हो जाता है तो किसी अन्य उद्देश्य के लिए सहयोग जारी रह सकता है अन्यथा समाप्त हो जाता है। वे उसी उद्देश्य के लिए अन्य गठबंधन बना सकते हैं या उनमें शामिल हो सकते हैं। देखा गया है कि प्रायः परिवारों ने भिन्न दल या गुट बनाए हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुट कुछ मुख्य परिवारों का एक संघ होता है जो अन्य परिवारों या गुटों से बढ़ती चुनौतियों का सामना करने तथा पुलिस, अदालत की कार्रवाई आदि या किसी अन्य परेशान करने वाले मुद्दे में समर्थन प्राप्त करने के लिए बनाई जाती है। इन गठबंधनों के बनाने का आधार, धन, मानव शक्ति तथा गाँव से बाहर प्रभाव जमाने की क्षमता होती है।

2) सीमांत समाज के वे समूह हैं, जो निर्धनता, संस्कृति, भाषा, धर्म, प्रवासी स्थिति या अन्य किसी कमी के कारण धन, शिक्षा, रोजगार तथा अन्य किसी विकासात्मक अवसरों का लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं। उनमें से अधिकतर भूमिविहीन श्रमिक, छोटे–छोटे भू–खंड वाले, ग्रामीण निर्धन, कलाकार, असंगठित क्षेत्र के श्रमिक, महिलाएँ, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आदि से संबंधित होते हैं।

सामाजिक न्याय, ग्रामीण उत्थान तथा सीमांत लोगों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने को लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। भूमि सुधार, चकबंदी, भूमि की हदबंदी, भूमि हस्तांतरण तथा सामाजिक सुरक्षा संबंधी नियम और योजनाएँ बनाई गई हैं। जिनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार हैं:

- पारिश्रमिक भुगतान अधिनियम, 1936 एवं 1971
- न्यूनतम पारिश्रमिक अधिनियम, 1948 समान वेतन अधिनियम, 1978
- नागरिक अधिकार सुरक्षा, 1955
- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निषेध) अधिनियम, 1989
- स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एस जी एस वाई)
- संपूर्ण ग्राम रोजगार योजना (एस जी आर वाई)

बोध प्रश्न III

1) क) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

ख) विश्व बैंक और

ग) विश्व व्यापार संगठन

2) i) बाजारी ताकतें

ii) प्रभुत्व अधिकार संरचना

iii) सुभेद्य वर्ग/कमजोर वर्ग

iv) क) छोटे और सीमांत किसान, ख) नई प्रौद्येगिकीय का उपयोग करना

v) क) ग्रामीण कृषि व्यवस्था, ख) कार्य की तलाश में शहर

vi) क) प्रौद्योगिकी, ख) उपेक्षित करना

vii) क) पर्यावरण संतुलन, ख) पर्यावरण संबंधी संकट

बोध प्रश्न IV

1) यूनियन बनाना असंगठित लोगों को उनके विशिष्ट उद्देश्य और हित के लिए उन्हें संगठित करने की प्रक्रिया है। इस कार्य के लिए यूनियन निर्माण नीतियों के रूप में उन्हें तथा यूनियन से भिन्न लोगों की यूनियन बनाने के लिए कुछ नीतियाँ अपनाई . जाती हैं ताकि उन्हें उनकी एसोसिएशन में संबद्ध रखा जा सके।

   i) सूचना एकत्रित करना और सामुदायिक बैठक बुलाना

   ii) अंतःजागरूकता

   iii) योजनाएँ और कार्यक्रमों का प्रतिपादन

   iv) क्षमता निर्माण करना

   v) सहकार और समन्वय

   vi) नेटवर्क बनाना

2) i) मौखिक/लिखित याचिका प्रस्तुत करना

   ii) समझाना एवं राजी करना

   iii) समझौता करना

   iv) वार्तालाप/संधि करना

   v) दबाव बनाना और समर्थन करना

   vi) विरोधी/संघर्षात्मक नीतियाँ

3) **i) विरोध करना**

- यह मूलतः भावनाओं और संवेदनाओं की मौखिक या लिखित और/या कानूनी अभिव्यक्ति होती है।
- इसका मुख्य उद्देश्य सरकार द्वारा आरंभ की गई किसी कार्रवाई या विद्यमान सामाजिक व्यवस्था का विरोध करना या अस्वीकृत करना है।
- विरोध का मुख्य कारण आम लोगों या आबादी के कुछ वर्गों का पीड़ित होना देखा गया है।
- पीड़ित व्यक्ति महत्त्वपूर्ण विरोधकर्त्ता के रूप में विरोध में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं।
- किसी सामाजिक कारण (कारणों) से समस्त समुदाय सक्रिय नहीं होता।

ii) प्रदर्शन

- प्रदर्शन से संदेश समझने और स्वीकृति में आसान हो जाता है।
- यह लोगों में स्पष्टीकरण और चर्चाओं को सहज बना देता है।

इकाई 5 विभिन्न परिवेशों में सामुदायिक संगठनकर्त्ता की भूमिका

*डॉ. ए.जी. क्रिस्टेफर

रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सामुदायिक संगठन का परिवेश

5.3 सामुदायिक संगठन के चरण

5.4 सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विशेषताएँ

5.5 सामुदायिक संगठनकर्त्ता की भूमिका

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विभिन्न भूमिकाओं के बारे में समझना है। इसमें उन विभिन्न भूमिकाओं के बारे में बताया जाएगा, जिन्हें विभिन्न परिवेश में पूरा किया जा सकता है।

* डॉ. ए.जी. क्रिस्टोफर, सेक्रेड हर्ट कॉलेज, तिरूपत्तुर

इसका अध्ययन करने के बाद आप :

- एक सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विभिन्न भूमिकाओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- विभिन्न परिवेशों में सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विभिन्न भूमिकाओं का अमल कर सकेंगे; और
- एक सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विभिन्न भूमिकाओं के निर्वहन के चरणों की समीक्षा कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

समुदाय संगठन को अलग–अलग समुदायों या स्थितियों में अमल में लाया जा सकता है। समुदाय को भौगोलिक स्थितियों के आधार पर ग्रामीण, शहरी तथा आदिवासी के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। जाति, धर्म, पेशा आदि समुदाय को वर्गीकृत करने का अन्य आधार है। ये समुदाय उन विभिन्न स्थितियों में आते हैं जहाँ सामुदायिक संगठन को अमल में लाया जा सकता है।

सामुदायिक संगठन का अमल तब होता है जब समुदाय अपनी समस्याओं के समाधान तथा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की पहल करता है। ऐसी परिस्थिति में विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने तथा समस्याओं को हल करने में समुदाय अलग–अलग तरह की भूमिकाएँ निभाता है। किसी समस्या को सबके सामने लाने में आमतौर पर समुदाय में मौजूद, रुचि रखने वाले या प्रभावित लोग होते हैं। दूसरे शब्दों में वे समुदाय बनाते हैं तथा समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न भमिकाएँ अपनाते हैं, परिणामतः उनकी जरूरतें पूरी हो जाती हैं।

जब समुदाय के भीतर से कोई पहल नहीं होती है तो एक बाहरी एजेंट या बाहरी व्यक्ति या एक सामुदायिक संगठनकर्त्ता उस समुदाय में आता है और उस समुदाय के साथ काम करता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय का परिवेश, परिस्थितियों तथा समस्याओं के आधार पर उचित प्रकार की विभिन्न भूमिकाएँ

अपनाता है। ये भूमिकाएँ समुदाय का परिवेश, समस्याओं तथा जरूरतों के अनुसार अलग–अलग होती हैं।

सामुदायिक संगठन को सामुदायिक संगठनकर्त्ता द्वारा विभिन्न क्षेत्रों या परिवेशों जैसे ग्रामीण, शहरी, जनजातीय, संस्थागत और गैर–संस्थागत रूपों में प्रयुक्त किया जा सकता है। चाहे कोई भी परिवेश हो जो कि सामुदायिक संगठन के मॉडल (प्रतिरूप) जैसे स्थानीय विकास, सामाजिक नियोजन, तथा सामाजिक कार्रवाई पर निर्भर हो, सामुदायिक संगठनकर्त्ता को क्रमशः अलग–अलग भूमिकाएँ निभानी होती हैं। इसलिए सामुदायिक संगठनकर्त्ता को सामुदायिक संगठन की सभी भूमिकाओं की जानकारी होनी चाहिए।

5.2 सामुदायिक संगठन का परिवेश

ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जहाँ सामुदायिक संगठन की गुंजाइश है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता विभिन्न परिवेशों में सामुदायिक संगठन को अमल में ला सकता है। परिवेशों की पहचान कुछ विशेषताओं के आधार पर की जा सकती है जैसे स्थान तथा प्रशासन का स्वरूप।

भौगोलिक स्थिति	ग्रामीण, शहरी, जनजातीय
क्षेत्र	संस्थागत, गैर–संस्थागत या संगठित, असंगठित
मॉडल (प्रतिरूप)	स्थानीय विकास
	सामाजिक नियोजन
	सामाजिक कार्रवाई

जिस लक्ष्य समूह के साथ सामुदायिक संगठनकर्त्ता को काम करना है उसकी पहचान करनी होती है और उसे समझना होता है। अलग–अलग परिवेशों में समुदाय की जरूरतें और समस्याएँ एक जैसी नहीं होंगी साथ ही अलग–अलग परिवेश में लोगों की विशेषताएँ भिन्न रहने की संभावना है। तदनुसार सामुदायिक संगठन की पद्धतियाँ और तकनीकें तथा सामुदायिक संगठनकर्त्ताओं की भूमिकाएँ इस ढंग से प्रयुक्त की जाएँगी कि वे अलग अलग परिवेशों तथा विशेषताओं वाले लोगों के अनुकूल हों।

संगठनकर्त्ता जरूरतों की पहचान, उनका मूल्यांकन, विश्लेषण तथा परिस्थितियों को समझने के लिए विभिन्न पद्धतियाँ को प्रयोग में ला सकता है। इस समझ के दो स्तर हैं – पहले स्तर पर संगठनकर्त्ता द्वारा समुदाय की समझ तथा दूसरे स्तर पर समुदाय को उनकी परिस्थितियों को समझाना। समुदाय को समझने तथा समुदाय को उसकी परिस्थितियाँ समझाने के लिए विभिन्न पद्धतियाँ और तकनीकें प्रयुक्त की जा सकती हैं। सहभागी ग्रामीण निर्धारण तथा निर्धारण जाँच इस संबंध में ज्यादा उपयोगी हैं। चूंकि ये इस इकाई के कार्य क्षेत्र में नहीं आती, इसलिए इनका यहाँ वर्णन नहीं किया गया है।

चाहे कोई भी परिवेश हो आवश्यकताओं तथा समस्याओं के साथ एक समुदाय या लोगों का समूह है। दूसरे शब्दों में समुदाय में सामान्य रूप से आम असंतोष होता है, जिस पर ध्यान केंद्रित करना और इस ढंग से इसे आगे बढ़ाना होता है कि लोग साथ आएँ, सम्मिलित होकर मिलकर सोचें, साथ योजनाएँ बनाएँ, क्रियान्वयन करें और अपने कार्यों का मूल्यांकन करें। सभी चरणों में समुदाय को पूरी तरह सम्मिलित होना है तथा संसाधनों की प्राप्यता, नियंत्रण तथा निर्णय लेने में भागीदारी होने के परिणामस्वरूप उनकी क्षमता बढ़ती हो। इसलिए सामुदायिक संगठन में सामुदायिक संगठनकर्त्ता को लोगों को निर्भरता के लक्षणों के बिना आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न भूमिकाएं निभानी होती हैं।

परिवेशों के प्रकार सीमित हो सकते हैं। लेकिन यह कहा जा सकता है कि जहाँ कहीं भी लोग साथ–साथ रहते हैं या जहाँ समान विचारधारा के लोग हैं या परस्पर प्रेम करने वाले व्यक्ति साथ–साथ आते हैं वे एक समुदाय बना लेते है, समाज से अपना उचित हिस्सा माँगते हैं। जरूरतों तथा समस्याओं तथा समुदाय की सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर अलग–अलग परिवेशों में इनकी भूमिकाएँ और रणनीतियाँ बदलनी होती हैं। इसके साथ साथ सभी भूमिकाएँ सभी परिवेशों में प्रयुक्त करने की आवश्यकता नहीं है। विभिन्न भूमिकाएँ अपनाने के लिए सामुदायिक संगठनकर्त्ता को सामुदायिक संगठन पद्धतियों तथा कौशल को अपनाने में शामिल होने वाली प्रक्रियाओं या चरणों के बारे में बहुत स्पष्ट होना चाहिए। तदनुसार भूमिकाओं का चुनाव तथा अमलीकरण किया जाना है।

ग्रामीण क्षेत्र को शहरी क्षेत्र से पृथक किया जा सकता है यह जनसंख्या के आकार जनसंख्या के घनत्व तथा लोगों के व्यवसाय पर आधारित है। यदि किसी क्षेत्र की जनसंख्या 5000 से अधिक हो, जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर 300 से अधिक हो तथा 75 प्रतिशत से ज्यादा लोग कृषि कार्य में लगे हों तो ऐसे क्षेत्रों को ग्रामीण क्षेत्र कहा जाता है। इन्हीं विशेषताओं के साथ यदि भौगोलिक स्थिति सामान्यतः पर्वतीय क्षेत्र में है और जनजातियाँ रहती हैं तो इसे जनजातीय क्षेत्र कहते हैं। शहरी क्षेत्र के मामले में जनसंख्या 5000 से अधिक होती है, घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर 300 से अधिक होता है तथा 75 प्रतिशत से ज्यादा लोग गैर कृषि कार्यों में लगे होते हैं।

ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्रों में लोगों के बीच परस्पर संबंध तथा ग्रहणशीलता उच्च तथा सकारात्मक होती है जबकि शहरी क्षेत्रों में समुदाय के बीच प्राथमिक संबंध अपेक्षाकृत निचले स्तर के होते हैं। शहरी लोगों के मुकाबले ग्रामीण तथा जनजातीय लोगों को संगठित करना कम मुश्किल है।

संस्थागत तथा गैर–संस्थागत परिवेशों में लोग क्रमशः संगठित और असंगठित हैं। एक संगठनात्मक ढाँचा होने के कारण किसी संस्था में समान प्रयोजन के लिए

लोगों को साथ लाने की संभावना है जबकि गैर–संस्थागत मामले में इसका प्रारूप असंरचित होता है इसलिए लोगों को साथ लाने में कठिनाइयाँ हो सकती हैं।

सामुदायिक संगठन के तीन मॉडलों (प्रतिरूपों) की अलग–अलग भूमिकाएं अपेक्षित होती हैं। स्थानीय विकास मॉडल में लोग किसी क्षेत्र या स्थान के बारे में विचार–विमर्श करने या निर्णय लेने के लिए साथ में आते हैं तथा लक्ष्य निर्धारण तथा कार्रवाई में स्थानीय स्तर पर ज्यादा लोगों के शामिल होने पर जोर दिया जाता है।

सामाजिक योजना मॉडल में लोग साथ आते हैं तथा समस्याओं से संबंधित तथ्यों को इकट्ठा करते हैं तथा एक तर्कसंगत और संभावित कार्रवाई तय करते हैं। सामाजिक समस्याओं को हल करने की यह एक तकनीकी प्रक्रिया है और सामान और सेवाओं को व्यवस्थित करना और उन लोगों को देना, जिन्हें इनकी जरूरत है। बाहरी मदद ज्यादा होती है। दिलचस्पी रखने वाले समूह के सदस्य इसमें भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर भागीदारी कम होती है।

समाज कार्य मॉडल उत्पीड़न का नाश करने के लिए लोगों को साथ लाते हैं। जनसंख्या के प्रभावित खंड को संगठित करके सामाजिक परिस्थितियों में मूल परिवर्तन लाए जाते हैं ताकि वे बड़े हुए संसाधनों या सामाजिक न्याय तथा प्रजातंत्र के अनुसार अपेक्षाकत अच्छे व्यवहार तथा संसाधनों तथा निर्णय लेने की शक्तियों के पुनर्वितरण के लिए बड़े समुदाय से माँग कर सकें।

सामुदायिक संगठनकर्त्ता को लोगों को एक स्थिति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने या लोगों का जबाव मिलने से पहले सभी परिवेशों तथा प्रतिरूपों को देखना, अवलोकन करना तथा समझना पड़ता है।

5.3 सामुदायिक संगठन के चरण

सामुदायिक संगठन के अनेक चरण होते हैं। इन चरणों को अपनाकर कोई भी संगठनकर्त्ता सामुदायिक संगठन के विभिन्न सिद्धातों, पद्धतियों तथा प्रतिरूपों को प्रयुक्त कर सकेगा। सामुदायिक संगठन के चरणों पर आगे आने वाले पृष्ठों में चर्चा की गई है।

लोग/समुदाय

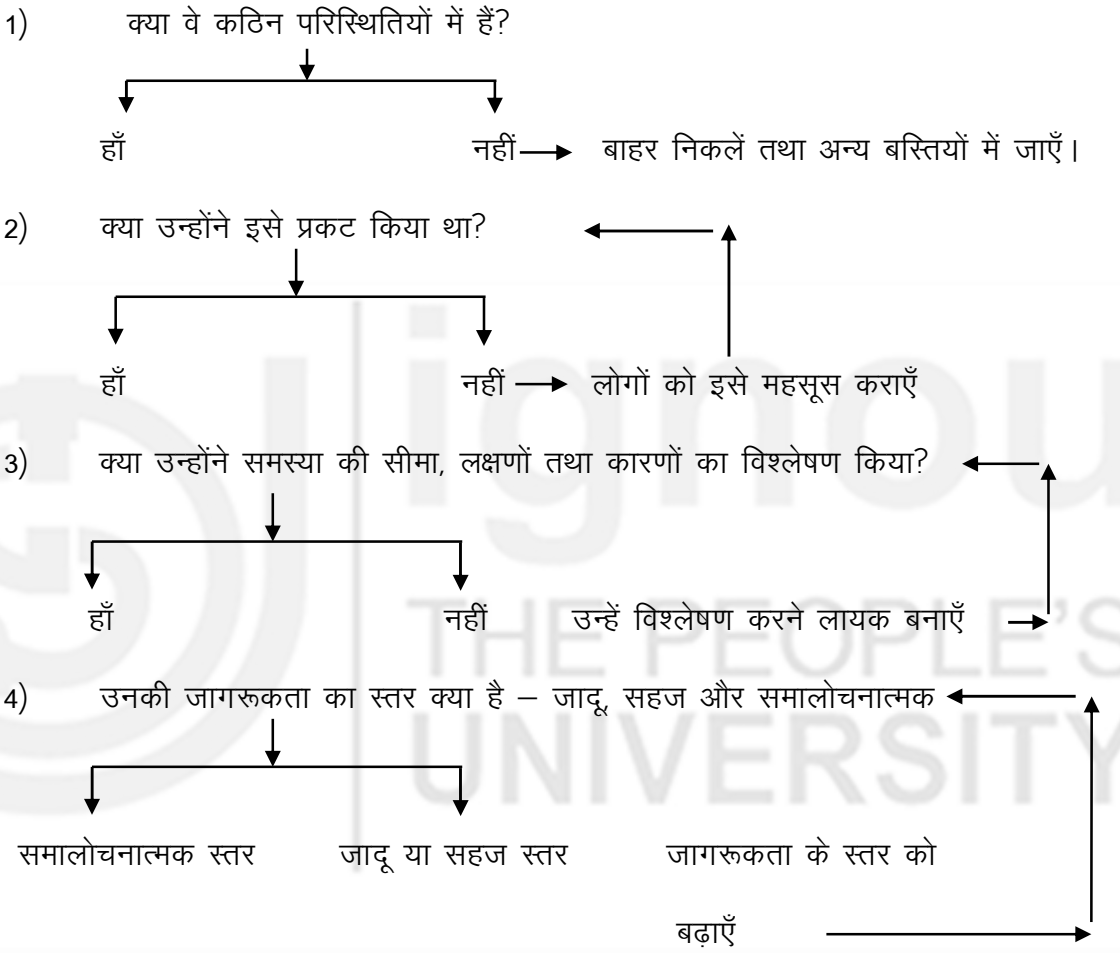

उपर्युक्त चार अवस्थाएँ या चरण मूल चरण हैं जो समुदाय को अपनी समस्याएँ पहचानने, उनका विश्लेषण करने तथा उन्हें समझने की आवश्यक क्षमता प्राप्त कराती है। अन्यथा इसे समुदाय की आवश्यकताओं तथा

समस्याओं का निर्धारण कहा जा सकता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता को जरूरतों तथा समस्याओं के बारे में जानना है। साथ ही साथ उसे लोगों को जरूरतों तथा समस्याओं का निर्धारण करने के लिए सक्षम बनाना है। इसको करने के लिए समुदाय के सदस्यों को आगे बढ़ाना होता है तथा व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से आगे की कार्रवाई के बारे में अपनी राय बतानी होती है। इस प्रक्रिया में लोग विश्लेषण की निपुणताओं को अर्जित करते हुए और जागरूकता का स्तर उठाते हुए सबल होते हैं।

5) **समस्याओं की सूची** : समुदाय की पहचान की गई सभी आवश्यकताओं तथा समस्याओं को सामुदायिक के संगठनकर्त्ता की मदद से समुदाय द्वारा सूचीबद्ध किया जाता है। यह एक प्रक्रिया है, जिससे लोगों को उनकी परिस्थितियों को समझाया जाता है। आवश्यकताओं तथा समस्याओं को महसूस करने से लोगों में अपनी परिस्थितियों के बारे में सजगता आती है विभिन्न आवश्यकताओं तथा समस्याओं की पहचान करने में समुदाय की शिरकत लोगों के शामिल होने को बढ़ाएगी। विभिन्न परिवेशों में समस्याएँ अलग–अलग हो सकती हैं और इसलिए तदनुसार पहचान की गई समस्याओं को सूचीबद्ध किया जा सकता है।

6) **समस्याओं/आवश्यकताओं को वरीयता (प्राथमिकता) देना** : सभी आवश्यकताओं तथा समस्याओं को आगे की कार्रवाई के लिए एक साथ विचार नहीं किया जा सकता। इसलिए सभी आवश्यकताएँ तथा समस्याओं का उनकी गंभीरता, परिमाण, लक्षणों तथा कारणों के आधार पर विश्लेषण किया जाता है, क्रमबद्ध किया जाता है और आवश्यकताओं तथा समस्याओं को हल करने के लिए प्राथमिकता दी जाती है। समुदाय आवश्यकताओं और समस्याओं की पहचान करने के बाद उनका विश्लेषण करता है तथा उन्हें प्राथमिकता तथा वह क्रम देता है, जिस तरह उन्हें अगली कार्रवाई के लिए अमल करता है।

7) **एक समस्या को चुनें :** प्राथमिकता सूची से सबसे जरूरी समस्या जिसको तत्काल हल करना होता है उसे चुना जाता है। सभी समस्याओं को एक साथ हल नहीं किया जा सकता इसलिए आगे की कार्रवाई शुरू करने के लिए किसी एक समस्या को चुनने की आवश्यकता होती है। प्राथमिकता के क्रम के आधार पर सूची में पहली समस्या को हल किया जाता है।

8) **समस्या को पुनः परिभाषित करना :** समुदाय की बेहतर समझ के लिए चुनी गई समस्या को पुनः परिभाषित किया जाता है। बेहतर योजना बनाने के लिए समस्या के बारे में आगे कोई कदम उठाने से पहले उसे विश्लेषित तथा परिभाषित किया जाता है। कई बार किसी व्यक्ति को प्रकट या ऊपरी तौर पर किसी घटना को समस्या के रूप में दिखाई देता है, इसकी अपेक्षा इसका पुनः विश्लेषण किया जाए कि वास्तविक समस्या क्या है? क्या यह समुदाय के सामान्य कामकाज पर असर डालती है? कितने लोग इससे प्रभावित हो रहे हैं? वे किस तरह प्रभावित हो रहे हैं? यदि इस ओर कुछ नहीं किया जा रहा है तो यह समुदाय को किस तरह परेशान करेगी? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिनसे हम किसी समस्या को आसानी से विश्लेषित और पुनः परिभाषित कर सकते हैं।

9) **प्राप्त किए जा सकने वाले लक्ष्य तय करना :** पुनः परिभाषित किए जाने वाली समस्या को प्राप्त किए जा सकने वाले लक्ष्यों में परिवर्तित किया जाता है। इस लक्ष्य पर आगे कार्रवाई के लिए विचार किया जाएगा। कभी–कभी लक्ष्यों को कई भागों में विभक्त कर दिया जाता है ताकि उन्हें आवश्यकताओं को पूरा करने तथा समस्याओं के समाधान की दिशा में कार्यक्रमों और गतिविधियों में परिवर्तित किया जा सके। हम यह मानकर चलें कि निरक्षरता किसी समुदाय की समस्या है। यह भी विश्लेषित किया गया है कि ज्यादातर लोग अपने बचपन में स्कूल नहीं गए हैं। इसका एक कारण यह भी था कि उनके निवास स्थान के आस–पास कोई स्कूल नहीं

था। वर्तमान में स्कूल बनाया जा चुका है तथा अध्यापक नियुक्त किए जा चुके हैं। अब स्कूल उपलब्ध न होना निरक्षरता का कारण नहीं है। अब यह विश्लेषित किया और देखा गया है कि बच्चे स्कूल नहीं भेजे जाते। यद्यपि स्कूल जाने योग्य उम्र के बहुत से बच्चे हैं लेकिन उनके माता–पिता उन्हें स्कूल नहीं भेजते क्योंकि एक ओर जहाँ स्कूल में अध्यापक नियमित रूप से नहीं आते हैं, वहीं दूसरी ओर जब अध्यापक स्कूल आते है तब भी वे बच्चों को नहीं पढ़ाते। इस परिस्थिति में बाहरी तौर पर सामान्य समस्या निरक्षरता प्रतीत होती है लेकिन इस समस्या का मूल कारण स्कूल की दोष पूर्ण कार्य प्रणाली है।

10) **विकल्पों की तलाश करें :** लक्ष्यों के आधार पर समुदाय में सबकी सोच प्राप्त करके विभिन्न तरीकों और साधनों की खोज करना है। किसी को भी किसी समस्या के एक मात्र हल से संतुष्ट नहीं होना चाहिए क्योंकि यह सामुदायिक संगठन की व्यवहारिकता को सीमित कर देगी। चुनी हुई समस्याओं को हल करने के लिए समुदाय को इसके निदान के लिए अधिकतम विकल्प तैयार करने होते हैं। अब हम पहली अवस्था में निरक्षरता जैसी बताई गई समस्या को लेते हैं। हम समस्या को कैसे हल करते हैं? समस्या सीधे तौर पर स्कूलों की दोषपूर्ण कार्य प्रणाली से संबंधित है। इसको हल करने के विभिन्न तरीके क्या हैं? संबंधित अध्यापकों से मिला जा सकता है और उन्हें सलाह दी जा सकती है। दोषपूर्ण कार्य प्रणाली को विभिन्न तरीकों से उच्च प्राधिकारियों की जानकारी में लाया जा सकता है। समुदाय के प्रतिनिधि लिखित अभ्यावेदन के साथ उच्च प्राधिकारियों से मिल सकते हैं, विभिन्न विकल्पों को आजमाया जा सकता है। और अधिक बच्चों को स्कूल जाने के लिए प्रेरित करें। सभी बच्चों को स्कूल से निकाल लें। स्कूल को बंद कर दें। विरोध मार्च का आयोजन करें। भूख हड़ताल का आयोजन करें। इस समस्या पर ध्यान देने के लिए ऐसे कई विकल्प हो सकते हैं तथा दीर्घ अवधि के आधार पर समस्या का समाधान करने के

लिए सीधी कार्रवाई शुरू करें। अब नये प्रकार के प्रोटेस्ट हैं जो जनता की सुगमता को बाधित नहीं करते। नृत्य एवं गायन इस प्रकार के विरोध (प्रोटेस्ट) के उदाहरण हैं।

11) **एक उपयुक्त विकल्प चुनें** : प्रस्तावित विकल्पों में चुने गए सबसे बढ़िया विकल्प को चुनिंदा समस्या का हल निकालने के लिए चुना जाता है। किसी समस्या को हल करने के लिए कई उपाय हो सकते हैं लेकिन इनमें से एक उपाय या पद्धति सबसे बढ़िया तथा उपयुक्त हो सकती है, जिससे समस्या आसानी से हल हो सकती है। ऐसे विकल्पों का चुनाव किया जाना चाहिए। जब कोई विकल्प चुना जाता है तो सरल तथा क्रमिक ढंग से शुरूआत करनी होती है। यदि निचले स्तर का प्रयास असफल हो जाता है तो अगले विकल्प का प्रयोग करें तथा उसके भी असफल होने पर उससे अगला विकल्प चुनें और अगर कोई भी काम न करे तो अंततः हमें सामाजिक क्रिया की पद्धति अपनानी चाहिए तथा कभी–कभी हमें और अधिक मजबूत कदम उठाने पड़ सकते हैं।

12) **एक कार्ययोजना बनाएँ** : चुने गए विकल्पों को अमल में लाने के लिए एक कार्य योजना प्रस्तावित की जाती है, जिसमें जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं तथा अस्थायी संगठनातमक ढाँचा तैयार किया जाता है। इस स्तर पर समय सीमा, आवश्यक संसाधनों तथा शामिल किए जाने वाले व्यक्ति का निश्चय किया जाता है। मान लीजिए किसी समुदाय की निरक्षरता की समस्या सबसे पहले ली जाती है, तो यह निर्णय लिया जा सकता है कि प्राधिकारियों से मिले तथा एक याचिका प्रस्तुत करें। बैठक की तारीख, समय, कौन, कितनी बार, कहाँ बैठक होगी यह निर्णय करने के लिए इस पर विस्तृत चर्चा करनी होती है। साथ ही बैठक के समय जिन प्राधिकारियों को बोलना होता है? क्या बोलना है? कैसे बोलना है? आदि

पहले ही तय करना होता है तथा वांछित परिणाम पाने के लिए की जाने वाली भूमिका तथा पर्याप्त अभ्यास पूर्ण रूप से करना होता है।

13) **संसाधनों को जुटाना :** कार्य योजना को अमल में लाने के लिए आवश्यक संसाधनों का निर्धारण, पहचान तथा साधनों को इकट्ठा किया जाना है। संसाधन, समय, धन, श्रम शक्ति तथा सामग्री के रूप में हो सकते हैं। एक अनुमान लगाया जाता है तथा स्रोतों को जुटाने के लिए उनकी पहचान की जाती है। कई बार केवल श्रम शक्ति संसाधन किसी हल को निकालने में सहायता कर सकती हैं। इसलिए समुदाय में श्रम शक्ति के प्रयोगों की पूरी तरह समझ होनी चाहिए, जिससे लोग आगे की कार्रवाई के लिए स्वयं अपने आपको सामने पेश कर सकें। इसके अलावा किसी अन्य संसाधन को अंदरूनी तौर पर जुटाना होता है और यदि यह संभव न हो तभी इन्हें बाहरी स्रोतों से प्राप्त करने के बारे में सोचें।

14) **कार्य योजना को अमल में लाना :** संसाधनों के अनुरूप कार्य योजना बनाने के बाद योजना को अमल में लाया जाता है। निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में कार्यान्वयन के दौरान समय और संसाधनों का ध्यान रखा जाता है। कार्य योजना को अमल में लाते समय लोगों की सहभागिता तथा जिम्मेदारी स्वीकारते हुए सक्रिय सहयोग को सुनिश्चित करना चाहिए। लोगों को समस्या का हल निकालने की प्रक्रिया में साझेदार बनाने के लिए तैयार और मार्गदर्शन करना होता है।

15) **कार्य का मूल्यांकन :** उद्देश्यों के अनुसार सफलता पाने तथा विचलन को देखने के लिए कार्यान्वित योजना का मूल्यांकन किया जाता है। किसी भी कमी या अवांछनीय परिणामों की पहचान की जाती है तथा विचलन के कारणों की चर्चा की जाती है। सकारात्मक तथा वांछनीय परिणामों की प्रशंसा की जाती है। मूल्यांकन समुदाय के साथ काम करते हुए एक सतत प्रक्रिया के रूप में किया जा सकता है। उसे या तो सामयिक आधार पर

संगठित किया जा सकता है या गतिविधि समाप्त होने पर संगठन के भीतर ही संगठन के कार्मिकों द्वारा या किसी बाहरी व्यक्ति या विशेषज्ञ द्वारा संगठित किया जा सकता है। जब तक मूल्यांकन न किया जाए तब तक यह कार्य पूरा नहीं होता।

16) **परिवर्द्धन** : मूल्यांकन के आधार पर, आवश्यक परिवर्द्धन का निश्चय किया जाता है और क्रियान्वित भी किया जाता है। किसी चुनी हुई समस्या का स्थायी समाधान निकालने के लिए इसको प्रभावशाली ढंग से निपटाया जाता है और रूपांतरण सुझाए जाते हैं। किसी निर्दिष्ट समस्या का स्थायी समाधान ढूँढ़ने के लिए रूपांतरण प्रस्तावित किए जाते हैं।

17) **जारी रखना** : रूपांतरित कार्य योजना को क्रियान्वित किया जाता है तथा जारी रखा जाता है।

18) **अगली समस्या का चुनाव** : एक बार चुनी गई आवश्यकता पूरी हो जाने पर प्राथमिकता सूची से अगली समस्या चुनी जाती है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक संगठन में शामिल चरणों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विशेषताएँ

अच्छे सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विशेषताएँ

1) **जिज्ञासा** : एक संगठनकर्त्ता का काम उन प्रश्नों को उठाना है जो आंदोलित करते हैं तथा स्वीकृत प्रतिमानों को चुनौती देते हैं। वह प्रश्नों के साथ आगे बढ़ता है तथा शंका करता है कि प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं अपितु केवल और प्रश्न उठ जाते हैं।

2) **अनादर** : जिज्ञासा और अनादर साथ–साथ चलते हैं, वह चुनौती देता है, लोगों को उत्प्रेरित करता है, आंदोलित करता है और विश्वास घटाता है। वह लोगों में अशांति उत्पन्न कर देता है। दूसरे शब्दों में वह दी गई परिस्थिति को रेखांकित करके या लोगों को सामाजिक परिस्थिति के विभिन्न आयामों को समझकर तथा संभावित हल सुझा कर उनमें असंतोष पैदा करता है।

3) **कल्पना** : संगठनकर्त्ता के लिए, कल्पना केवल मानसिक दायरा ही नहीं बल्कि उससे भी गहरी है। यह उस बल को उत्प्रेरित तथा पोषित करता है जो उसे बदलाव के लिए संगठित करने की दिशा में प्रयत्नशील करता है। अवरोधक बलों को संभावित प्रतिक्रियाओं का वास्तविकता से आकलन तथा अनुमान लगाने के लिए उसे अपनी परिकल्पना में उन्हें भी पहचानने में सक्षम होना चाहिए तथा अपने क्रियाकलापों के लिए उनकी प्रतिक्रियाओं का पूर्वानुमान लगाना आना चाहिए।

4) **विनोद प्रियता** : एक सफल राजनीतिज्ञ के लिए विनोदशीलता अनिवार्य है क्योंकि मानवता के ज्ञात सबसे सशक्त हथियार व्यंग और उपहास हैं। इससे वह अपना सापेक्ष महत्त्व बनाए रख पाता है तथा वह अपने को उस रूप में देखता है जैसा वह वास्तव में है तथा हर किसी से दोस्ताना संबंध रखने में सहायता करता है।

5) **एक संगठित व्यक्तित्व** : परिवर्तन के प्रयोजन से उसे असंगतियों को स्वीकार करने तथा उनके साथ काम करने में सक्षम होना चाहिए। उसे यह पहचानना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति या समुदाय के मूल्यों का एक पदानुक्रम है। उसे अपने आस–पास हो रही हर चीज के प्रति संवेदनशील बनना चाहिए। वह हमेशा सीखता रहता है और घटना उसे कुछ सिखाती है। उसे हमेशा बिना भय और चिंता के यह भी स्वीकारना चाहिए कि संभावनाएँ उसके विरुद्ध हैं तथा सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ स्वीकारने के लिए सदैव तत्पर रहना होता है।

6) **मुक्त तथा खुला दिमाग** : उसका व्यक्तित्व लचीला होना चाहिए न कि कठोर, संरचना हो जो कि कुछ अप्रत्याशित घटना घटने पर टूट जाए। संगठनकर्त्ता जब किसी समुदाय के साथ काम करता है तो उसकी कोई गुप्त कार्य सूची या पूर्वाग्रह न हो।

7) **कुशाग्र बुद्धि तथा आलोचनात्मक नजर** : संगठनकर्त्ता परिस्थिति को देख तथा आलोचनात्मक रूप से इसमें अतर करने में सक्षम होना चाहिए। किसी भी परिस्थिति को ध्यानपूर्वक लोगों की नजरों के माध्यम से दिखाना होता है तथा इसका परिमाण, लक्षण और कारणों का पता लगया जाता है।

8) **सुनने वाले कान** : संगठनकर्त्ता को एक अच्छा और सतर्क श्रोता होना चाहिए जो लोगों तथा उनकी समस्याओं को सुनता हो। संगठनकर्त्ता

समुदाय के साथ काम करते हुए ऐसा व्यक्ति हो जो धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता रखता हो तथा लोगों को आदेश न देता हो।

9) **दूरदर्शी** : संगठनकर्त्ता के पास एक लम्बा अनुभव होना चाहिए कि क्या होना है और कैसे होना है। यह दूरदर्शिता समुदाय के लोगों को कार्य करने हेतु समर्थन बनाएगी जो संगठनकर्त्ता द्वारा किया जाना है।

एक नेता और संगठनकर्त्ता के बीच यह अंतर है नेता सामाजिक तथा व्यक्तिगत प्रयोजन से शक्ति रखने की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए शक्ति बढ़ाता है। वह शक्ति अपने खुद के लिए चाहता है। संगठनकर्त्ता दूसरों के प्रयोग के लिए शक्ति उत्पन्न करके अपना उद्देश्य पूरा करता है।

एक प्रभावशाली सामुदायिक संगठनकर्त्ता के कौशल

1) **समस्या विश्लेषण** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता के प्रमुख कार्यों में से एक लोगों को किसी समस्या को हल करने में मदद देना है। संगठनकर्त्ता समस्या की पहचान करने में सक्षम होता है तथा इसकी पहचान विश्लेषण, प्राथमिकता देने, उपयुक्त प्राथमिकता का चुनाव, संसाधन जुटाने, कार्य योजना बनाने, लागू करने, निगरानी करने, रूपांतरित तथा जारी रखने में भी लोगों की सहायता करता है।

2) **संसाधन जुटाना** : समुदाय की किसी भी समस्या का हल निकालते समय संसाधनों की जरूरत होती है। संसाधन श्रमशक्ति, धन, सामग्री और समय के रूप में हो सकते हैं। एक ओर संगठनकर्त्ता समुदाय के भीतर या बाहर के संसाधनों की उपलब्धता की जानकारी रखता है तथा लोगों को संसाधनों के स्रोतों की पहचान करने तथा इन स्रोतों के दोहन का तरीका बताता है।

3) **संघर्ष का समाधान** : समुदाय की समस्याओं में पहली समस्या प्रभावित लोग तथा दूसरे वे लोग समस्या का कारण बनते हैं। इसलिए इन दो समूहों या लोगों तथा प्रणाली के बीच में संघर्ष हो सकता है। संगठनकर्त्ता के पास कौशल होता है, जिससे वह संघर्ष की स्थिति की पहचान कर लेता है तथा लोगों को संघर्ष की स्थिति समझा पाता है और इसके बाद संघर्ष के समाधान के तरीके और माध्यम ढूंढ निकालता है।

4) **बैठक आयोजित करना** : समुदाय के भीतर तथा समुदाय तथा संगठनकर्त्ता के बीच संचार बहुत महत्त्वपूर्ण है। कार्य व्यवहार में पारदर्शिता होनी चाहिए, जिसके लिए औपचारिक तथा अनौपचारिक बैठकें आयोजित करनी है तथा सूचना का आदान प्रदान किया जाता है।

5) **प्रतिवेदन लिखना** : भविष्य के संदर्भ तथा अनुवर्ती कार्रवाई के लिए घटनाओं का प्रलेखन अत्यंत आवश्यक है। किसी भी संप्रेषण या लिखित माँग तथा कार्य की रिपोर्टों को रिकार्ड किया जाना आवश्यक है। इस काम को या तो सामुदायिक संगठनकर्त्ता द्वारा किया जाता है या किसी और को सौंपा जाता है।

6) **नेटवर्क बनाना** : किसी समुदाय में जब लोगों के साथ काम किया जाता है तो लोगों की सहभागिता लोगों की शक्ति को मजबूती प्रदान करती या बढ़ाती है। कभी–कभी समान विचारधारा वाले लोगों या संगठन का समर्थन उत्पन्न किया जाता है ताकि दमनकारी शक्ति के विरुद्ध एक दबाव बनाया जा सके। इससे दबाव बनाने तथा सौदा करने की शक्ति बढ़ाने में मदद मिलती है इसके लिए सामुदायिक संगठनकर्त्ता को अन्य लोगों तथा संगठनों के साथ नेटवर्क करना होता है।

7) **प्रशिक्षण** : समुदाय के साथ काम करते हुए किसी संगठन के लोगों और कार्मिकों की क्षमता बढ़ाना महत्त्वपूर्ण है। क्षमता बढ़ाने की प्रक्रिया में

सामुदायिक संगठनकर्त्ता को एक अच्छा प्रशिक्षक होना चाहिए। समुदाय के संगठनकर्त्ता को इस संबंध में प्रशिक्षण क्षमताओं तथा कौशल का प्रयोग करना होता है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक के संगठनकर्त्ता के कौशल का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 सामुदायिक संगठनकर्त्ता की भूमिका

सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया तथा चरणों के बारे में वांछित विशेषताएँ, कौशल तथा जानकारी रखने वाला समुदाय का संगठनकर्त्ता विभिन्न परिवेशों में उपयुक्त भूमिकाएँ निभाकर इन्हें प्रयुक्त करने में सक्षम होगा। समुदाय के संगठनकर्त्ता की अलग–अलग भूमिकाओं की यहाँ चर्चा की गई है। ये भूमिकाएँ न तो बहुत व्यापक है और न तो एक दूसरे से बिल्कुल अलग बल्कि परस्पर पूरक भी हो सकती हैं।

1) **संसूचक** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता सूचना, विचार, ज्ञान आदि को समुदाय के सदस्यों में हस्तांतरित या प्रेषित करता है। सूचना के आदान–प्रदान से समुदाय सूचना के प्रति बेहतर ढंग से परिपक्व और अधिकारयुक्त होता है। संगठनकर्त्ता तथा समुदाय तथा समुदाय के भीतर सूचना का आदान–प्रदान आवश्यक है। लोगों को सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया के विभिन्न प्रभावों या परिणामों के बारे में तैयार तथा सूचित होना चाहिए। यह परस्पर जानकारी व्यक्तिगत सम्पर्क, सामूहिक बैठकों, सामूहिक चर्चा, सार्वजनिक बैठकों आदि से होती है।

कभी–कभी समुदाय का संगठनकर्त्ता अपना पक्ष ऊपर रखता है तथा सोचता है कि लोग अशिक्षित तथा भोले–भाले हैं। इससे लोगों से संपर्क मालिक तथा नौकर के संबंध जैसा बन जाता है। ऐसे किसी अवाछनीय संबंध से बचने के लिए सामुदायिक संगठनकर्त्ता लोगो के साथ पारदर्शिता तथा संपर्क बनाए रखता है। संचार से बेहतर अंतःक्रिया होती है जो अगले कार्य और प्रतिक्रिया के लिए स्वस्थ संबंध और सहयोग की तरफ ले जाती है।

सामुदायिक संगठनकर्त्ता सूचना को लोगों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न तकनीके प्रयोग कर सकता है जैसे प्रहसन, भूमिका–नाटक, नुक्कड़ नाटक तथा श्रव्य (ऑडियो) और दृश्य (वीडियो) प्रदर्शन। संगठनकर्त्ता इन सभी संचार तकनीकों में लोगों को प्रशिक्षित कर सकता है। यह ज्यादा प्रभावशाली रहेगा यदि वह छोटे बच्चों को संगठित कर सके और उन्हें इस बारे में प्रशिक्षित कर सके। बच्चे एक प्रभावशाली संचार चैनल तथा तेजी से बढ़ते हुए संचार के माध्यम हैं।

स्थानीय समूह जैसे महिलाओं का समूह, युवाओं का समूह संचार के अन्य माध्यम हैं। ऐसे समूहों को समूह के अन्य सभी सदस्यों को संसूचित करने की जिम्मेदारी देना पूरे समुदाय तक पहुँचने में भी सहायक होगा। सूचना

को दबाया या गुप्त नहीं रखा जाना चाहिए इससे केवल अवांछनीय परिणाम ही प्राप्त होंगे।

2) **योग्य बनाने वाला :** सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय में परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है। वह खुद कोई काम नहीं करता परंतु समुदाय को काम करने में सक्षम बनाता है। संगठनकर्त्ता उत्पाद के बजाए प्रक्रिया को महत्त्व देता है। इसलिए लोग प्रक्रिया के परिणामों या निष्कर्षों से चिंतित होने की अपेक्षा प्रक्रियाओं को सीखते हैं।

सक्षम बनाने वाले की भूमिका के द्वारा संगठनकर्त्ता लोगों में आत्मनिर्भरता लाएगा, जिससे वे दूसरों पर निर्भरता के लक्षणों से बच सकेंगे।

सामुदायिक संगठनकर्त्ता लोगों के साथ होता है तथा प्रोत्साहन और विभिन्न सुझाव देता है, जिससे लोग यह निर्णय ले पाते हैं कि वे क्या करना चाहते थे तथा कैसे करना चाहते थे? सामुदायिक संगठनकर्त्ता केवल प्रक्रिया शुरू करता है तथा लोगों को अनुसरण करना होता है तथा कठिनाइयों आने पर वे समुदाय के संगठनकर्त्ता से सम्पर्क करते है। इसलिए सामुदायिक संगठनकर्त्ता की भूमिका लोगों को प्रक्रिया समझाना तथा पूरी तरह सम्मिलित होना है ताकि वे अपने पैरों पर खुद खड़े हो कर आत्मनिर्भर बन सके।

3) **सजीवता लाने वाला :** सामुदायिक संगठन की किसी प्रक्रिया में संगठनकर्त्ता विभिन्न गतिविधियों शुरू करने में प्रोत्साहन देता है तथा दिशा–निर्देश तथा पथप्रदर्शन करता है। अनेक लोग अपने संस्कृति के कारण दूसरों पर निर्भर करते हैं तथा अपने आप कोई निर्णय नहीं लेते। ऐसी स्थितियों में संगठनकर्त्ता एक सजीवक के रूप में लोगों को आगे लाने तथा सक्रिय भागीदारी करने में सहायता करता है। समुदाय के कार्यों में किन्हीं और सुधारों या रूपांतरणों को इस सजीवक द्वारा किया जाता है।

यह सजीवक मूल्यांकन होने तक योजना बनाकर लोगों की सक्रिय भागीदारी में सक्रिय भूमिका निभाता है। खासकर मुद्दों और समस्याओं को हल करने में लोगों का शामिल होना सुनिश्चित करता है।

सामान्यतः लोग कोई जोखिम नहीं उठाना चाहते तथा कभी–कभी वे सार्वजनिक भलाई के लिए कुछ भी नहीं कहना चाहते। इसके कारणों में से एक कारण लोगों की 'गरीबी की संस्कृति' या 'मूक संस्कृति वाला दृष्टिकोण होता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता प्रश्नों द्वारा नुक्ताचीनी या अंतर्रात्मा को झकझोर कर इस स्थिति को बदल सकता है। इससे समुदाय के मूक या गरीबी की संस्कृति अपनाने वाले लोग अपनी चेतना के स्तर को आगे बढ़ा सकेंगे।

4) **मार्गदर्शक (गाइड)** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता स्वयं कुछ करने के बजाए सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया में समुदाय के सदस्यों का मार्गदर्शन करता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता वह व्यक्ति नहीं है जो लोगों की जिम्मेदारी उठाए या लोगों की समस्याओं को हल करे। इसके अपेक्षा वह समुदाय की समस्याओं को हल करते हुए उसे लोगों को जिम्मेदार बनाना होता है जिसके लिए संगठनकर्त्ता पक्ष दिखाता है तथा पथप्रदर्शन के लिए प्रेरित करता है। मार्गदर्शक के रूप में संगठनकर्त्ता जरूरी सूचना उपलब्ध कराता है। उसे ऐसा व्यक्ति बनना पड़ता है, जिसके पास काफी विचार और समाचार होता है। उदाहरण के लिए किसी समुदाय में बहुत सारे शिक्षित युवा हों तो समुदाय में उनकी उपस्थिति मानव संसाधन के मुकाबले एक कांटा समझी जाती है। ऐसी स्थिति में सामुदायिक संगठनकर्त्ता को विभिन्न रोजगार अवसरों की सूचना उपलब्ध कराने तथा स्व–रोजगार के विभिन्न तरीकों तथा उधार देने वाली संस्थाओं आदि से उधार प्राप्त करने की शर्तों आदि के बारे में युवाओं को जानकारी देने में सक्षम होना चाहिए। संगठनकर्त्ता एक बार लोगों को ऐसी सूचना देने में सक्षम हो जाए जो

उनके लिए उपयोगी है तो पास–पड़ोस के लोगों के युवा भी सामुदायिक संगठनकर्त्ता से कुछ मार्गदर्शन पाने का प्रयास कर सकते हैं। इससे निश्चित रूप से सामुदायिक संगठनकर्त्ता की ख्याति बढ़ेगी साथ ही साथ मदद से लोगों की सद्भावना मिलेगी।

5) **परामर्शदाता** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय को समझता है और समुदाय को स्वयं अपने आप समझने योग्य बनाता है। कठिनाई के समय व्यक्ति या समुदायों को वांछित परामर्श दिया जाता है ताकि वे सही दिशा में अग्रसर हो सकें। परामर्श का सबसे मूल आयाम, धैर्यवान श्रोता है। आमतौर पर हर कोई यह पसंद करता है कि दूसरे लोग उसकी बात सुनें और दूसरों की सुनने में हिचक होती है। इसके साथ ही परामर्शदाता के रूप में उसे दूसरों की परिस्थितियों को सुनना, समझना तथा जबाव देना होता है। लोग जब परेशानी में होते हैं तब उन्हें सबसे ज्यादा यह जरूरत होती है कि कोई उनकी बात को सुने। जब लोग कोई समस्या लेकर आते हैं उनकी बात सुनने के लिए कोई न कोई मौजूद होना चाहिए। ऐसी सभी परिस्थितियों में सामुदायिक संगठनकर्त्ता, लोगों की मदद करने के लिए परामर्शदाता के रूप में आसानी से पैठ बना सकता है।

6) **सहकर्मी** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता अपना कार्य करने के लिए अपने सहकर्मियों तथा अन्य समान विचारधारा के लोगों तथा संगठनों से सहयोग लेता है। संगठनकर्त्ता अंतःव्यक्तिगत संबंधों और जन–सम्पर्क कौशल में सक्षम होना चाहिए। आजकल संगठन किसी समस्या को निजी तौर पर नहीं उठाते क्योंकि वे पड़ोस के संगठनों पर भी निर्भर करते हैं। इसी प्रकार अन्य संगठन भी विभिन्न संगठनों के साथ सहयोग तथा सहकार की अपेक्षा करते हैं। ऐसे संगठन भी हैं जो एक जैसी समस्या के लिए काम कर रहे हैं, जिसमें सहकार दोनों संगठनों को मजबूत बनाएगा। इसलिए

सहकर्मी की भूमिका समान कारण के लिए काम कर रहे समान विचारधारा वाले संगठनों को जोड़ने की नितांत आवश्यकता है।

7) **सलाहकार** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता में लोगों का विश्वास होता है तथा व्यापक हित के मामलों में उन्हें सलाह देता है। संगठनकर्त्ता ऐसा ज्ञान और जानकारी रखने वाला व्यक्ति बन जाता है, जिसे लोगों में बांटा जाता है। सलाहकार के रूप में समुदाय का संगठनकर्त्ता उन लोगों के लिए स्वयं को उपलब्ध कराता है, जिन्हें उसकी जरूरत होती है, क्योंकि सामुदायिक संगठनकर्त्ता के पास वह ज्ञान और विशेषज्ञता होती है, जिसका उन लोगों द्वारा लाभ उठाया जा सकता है, जिन्हें इनकी जरूरत है।

संगठनकर्त्ता एक क्षेत्र में फील्ड में काम करने के बजाए परामर्शदाता के रूप में काम करके व्यक्तियों तथा समूहों के माध्यम से अपनी विशेषज्ञता से सहयोग देता है।

8) **प्रवर्तक** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया के माध्यम से तकनीकी में नवीनता, निष्पादन तथा सुधार लाता है। इससे समुदाय के लोगों को मार्गदर्शन मिलता है तथा वे अपनी जरूरतों और समस्याओं के समाधानों के लिए नए तरीके आजमा पाते हैं। सामुदायिक संगठन केवल समस्याएँ हल करने के लिए नहीं होना चाहिए। इसे एक ओर व्यक्तियों तथा समुदाय की क्षमता बढ़ाने के क्षेत्र में काम करना होता है जहाँ संगठनकर्त्ता लोगों की क्षमता सुधारने के लिए नए ढंग प्रयुक्त करके एक प्रवर्तक बन सकता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता मौजूदा प्रणाली को बनाए रखने वाला व्यक्ति नहीं है लेकिन यही वह व्यक्ति है, जिसे विकास की सीढ़ी पर चढ़ने के नए तरीके लागू करने में सक्षम होना चाहिए।

9) **मॉडल (प्रतिरूप)** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता के रूप में यह व्यक्ति अपना कार्य बेहतरीन ढंग से अंजाम देता है तथा प्रेरणा के स्रोत के रूप में काम

करता है। संगठनकर्त्ता का काम लोगों के साथ काम करते हुए एक उदाहरण बनना होता है। इसे आगे चलकर मॉडल बनना चाहिए, जिसे इसी प्रकार की समस्याओं वाले अन्य क्षेत्रों में भी प्रयुक्त किया जा सके। किसी समस्या को हल करने में उचित नियोजन तथा उसे कार्य रूप में परिणित करके तथा पूरी प्रक्रिया का प्रलेखन दूसरों के लिए भी अत्यंत मददगार सिद्ध होगा। समस्या का समाधान करने की प्रक्रिया दूसरों के लिए मॉडल बन जाती है।

10) **प्रेरक** : संगठनकर्त्ता जरूरतों को पूरा करने तथ समस्याओं का समाधान निकालने के लिए लोगों में सक्रिय रुचि पैदा करता है तथा उसे बनाए रखता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय को छोटे–मोटे कार्य हाथ में लेने तथा उन्हें सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे ज्यादा मुश्किल कार्यों को अंजाम देने में सुयोग्य बनेंगे। इस प्रक्रिया में कभी–कभी लोग कोई पहल नहीं करते या मौजूदा परिस्थितियों से ही संतुष्ट होते हैं। इसलिए संगठनकर्त्ता परिस्थिति का अवलोकन, विश्लेषण, समझ तथा प्रतिक्रिया द्वारा लोगों को प्रेरित करता है। जब लोग जो प्राप्त करने में सक्षम थे उसे प्राप्त नहीं कर पाते और उन्हें हतोत्साहित किया जाता है या ऐसी परिस्थितियों में प्रतिरोध और विरोध होता है तो संगठनकर्त्ता इन तमाम कठिनाइयों के बावजूद समुदाय के लोगों सहायता देने के लिए अपनी कोशिशें जारी रखने में प्रेरक की भूमिका निभाता है।

11) **विश्लेषण** : सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया में सामुदायिक संगठनकर्त्ता अपनी पहचान बनाए रखता है साथ ही लोगों को सबल बनाने में सक्षम भी करता है। लोग संसाधनों पर अपनी पहुँच और नियंत्रण कर लेते हैं तथा निर्णय लेने में कौशल हासिल कर लेते हैं। समुदाय का संगठनकर्त्ता समाज कार्य और प्रतिक्रियाओं को गति प्रदान करता है ताकि लोग वांछित परिणाम प्राप्त करने योग्य बन सकें। एक विश्लेषक के रूप में संगठनकर्त्ता लोगों

की जबावदेही का स्तर बढ़ाता है। विश्लेषक की भूमिका लोगों को आगे आत्मनिर्भर बनाने तथा अपनी आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी बनने में विशेषज्ञ बनाता है।

12) **अधिवक्ता** : अधिवक्ता की भूमिका समुदाय के सदस्यों का प्रतिनिधित्व करना या विश्वास में लेना है तथा उन्हें प्रतिनिधि बनने के लिए तैयार करना है ताकि अपने मुद्दों/विषयों को संबंधित प्राधिकारियों के सामने रखा जा सके तथा अपूर्ण जरूरतों का समाधान निकाला जा सके। वर्तमान संदर्भ में वकालत करना महत्त्वपूर्ण भूमिका है। लोगों की आवश्यकताओं तथा समस्याओं का प्रतिनिधित्व किया जाना है तथा कि दमनकारी शक्तियों पर दबाव बढ़ाने को लिए वांछित समर्थन तथा ताना–बाना (नेटवर्क) प्राप्त किया जा सके। अधिवक्ता की भूमिका में संगठनकर्त्ता दूसरों के आधकारों का समर्थक होता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय की ओर से समुदाय क पक्ष में बात करता है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब समुदाय अपना काम नहीं कर पाता या समुदाय अपना पक्ष प्रस्तुत नहीं कर पाता है और समुदाय की बात काई नहीं सुनता है। अधिवक्ता अपनी पहुँच उन तक बनाने या सेवाओं या उनकी गुणवत्ता सुधारने के लिए समुदाय के हितों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन सेवाओं में निहित स्वार्थ वाली शक्तियों के द्वारा व्यवधान डाला जाता है। एक अधिवक्ता समुदाय की ओर से बुराई करने वाले से तर्क–वितर्क, बहस, सौदेबाजी, बातचीत और मुकाबला करता है।

13) **सुसाध्यक (सुविधादाता)** : सामुदायिक संगठनकर्त्ता समुदाय को अपनी आवश्यकताओं को बताने, समस्याओं को स्पष्ट करने तथा पहचानने, उपयुक्त रणनीतियों को ढूंढने, अंतःक्षेप की रणनीतियों को चुनने और उन्हें लागू करने तथा लोगों को अपनी समस्याओं को ज्यादा बेहतर ढंग से हल करने की क्षमताएँ विकसित करने में मदद करता है। एक सुसाधक समुदाय को समर्थन, प्रोत्साहन तथा सुझाव उपलब्ध कराता है ताकि वे अपने काम

को पूरा करने या समस्याओं का ज्यादा आसानी और निपुणता से हल करने में अग्रसर हो सकें। सुसाध्यक समुदाय को मुकाबला करने वाली रणनीतियों, ताकत और संसाधनों का पता लगाने में सहायता करता है ताकि लक्ष्यों तथा वस्तुनिष्ठता को हासिल करने के लिए आवश्यक परिवर्तन किए जा सकें। सुसाध्यक सेवार्थी प्रथा को अपने वातावरण में परिवर्तन लाने के लिए सहायता करता है।

14) **मध्यस्थ :** सामुदायिक का संगठनकर्त्ता दो दलों के बीच होने वाले विवादों में समझौता करने, मतभेद के निपटारे या आपस में संतोषजनक सहमति बनाने में हस्तक्षेप करता है। मध्यस्थ शामिल दलों के बीच अपनी तटस्थ स्थिति रखता है। एक मध्यस्थ व्यापक माहौल में समुदाय के सदस्यों के बीच के विवादों या समुदाय तथा अन्य व्यक्तियों के बीच विवादों को दूर करने में शामिल रहता है।

15) **शिक्षक :** सामुदायिक संगठनकर्त्ता शिक्षक के रूप में व्यापक वातावरण के संदर्भ में तथा समुदाय को सूचना देता है। संगठनकर्त्ता समस्या की स्थितियों का मुकाबला करने के लिए जरूरी सूचनाएँ उपलब्ध कराता है। नए व्यवहार प्रतिमानों या कौशलों को अपनाने में समुदाय की सहायता करता है तथा भूमिका निभाने वाले मॉडलों को पेश करके शिक्षित करता है। समुदाय का संगठनकर्त्ता निर्णय लेने के लिए आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध कराता है।

सामुदायिक संगठन समाज कार्य में एक व्यापक पद्धति है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता आवश्यक गुणवत्ताओं तथा कौशल सहित लोगों के साथ काम कर सकेगा। विभिन्न पृष्ठभूमियों या विभिन्न भौगोलिक परिवेशों के लोगों के साथ काम करते हुए विभिन्न भूमिकाएँ प्रयुक्त की जा सकती हैं। सभी भूमिकाओं को सभी परिवेशों या सभी समस्याओं से निपटने में प्रयुक्त करने की आवश्यकता नहीं है या प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। इसके अलावा

ऐसी कोई एक भूमिका नहीं है जो श्रेष्ठ या निकृष्ट हो तथा किसी भी समस्या का समाधान करने में संगठनकर्त्ता को एक से अधिक भूमिकाएँ निभानी होती हैं। इसलिए परिस्थितियाँ समुदाय की आवश्यकताओं तथा समस्याओं के आधार पर समुचित भूमिका अदा करनी होती हैं।

बोध प्रश्न III

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामुदायिक संगठनकर्त्ता की विभिन्न भूमिकाओं का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

इस इकाई में वे परिवेश बताए गए हैं, जिनमें सामुदायिक संगठन तथा सामुदायिक संगठनकर्त्ता के कौशल तथा विशेषताओं का प्रयोग किया जा सकता है। सामुदायिक संगठन प्रक्रिया में समुदाय की विभिन्न आवश्यकताओं तथा समस्याओं की पहचान की पहल विश्लेषण तथा चुनाव करने में समुदाय शामिल होता है। समुदाय आवश्यक संसाधनों की पहचान भी करता है तथा कार्य योजना बनाता है,

लागू करता है तथा मूल्यांकन भी। अगली प्राथमिकता वाले क्षेत्रों तक जारी रखता है। सामुदायिक संगठन की प्रक्रिया में संगठनकर्त्ता संचारक, हितैषी, परामर्शदाता, प्रेरक, प्रवर्तक, गाइड, अधिवक्ता आदि जैसे विभिन्न परिवेशों में विभिन्न भूमिकाएं निभाता है जो कि परिस्थितियों तथा क्षेत्र की आवश्यकताओं तथा समस्याओं पर निर्भर करता है।

5.7 शब्दावली

चेतना के स्तर : यह लोगों की सामाजिक तथा आर्थिक स्तर के बारे में समझ है। चेतना के तीन स्तर होते हैं इनके नाम हैं जादू, निष्कपट तथा आलोचनात्मक स्तर।

चेतना का जादू स्तर : यदि भाग्यवाद में मूल विश्वास है तथा भाग्य या भगवान दया के कारण व्यक्ति के स्तर का औचित्य है।

चेतना का निष्कपटता का स्तर : लोगों का विश्वास होता है कि सुविधाओं की कमी के कारण उनका शोषण किया जाता है।

चेतना का आलोचनात्मक स्तर : लोग समझते हैं कि निर्भरता, असमानता तथा शोषण के कारण उनका गरीबी का स्तर है।

सशक्तिकरण : यह अपने ऊपर नियंत्रण करने, आदर्श, संसाधनों तथा निर्णय लेने की क्षमता है।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

काम्स, एफ.एम., ई.टी.ए.एल. (चतुर्थ संस्करण). स्ट्रेटेजीज ऑफ कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन, इलियोनिस, पीकाक पब्लिशर्स।

गंगराडे, के.डी. (1971), कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन इन इंडिया, बॉम्बे प्रकाशन।

राफ एम. एंड हैरी स्पैच (1975), रीडिंग्स इन कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन प्रेक्टिस, न्यू जर्सी : पेंटिस हाल, आई.एन.सी.।

रॉस, एम.जी. (1955), कम्युनिटी आर्गेनाइजेशन, न्यूयार्क : हार्पर एंड ए पब्लिशर्स।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) सामुदायिक संगठन में मूल रूप से लोगों को इसलिए शामिल किया जाता है ताकि वे अपनी समस्याएँ पहचान सकें, समस्या को उनके परिमाण, लक्षणों तथा कारणों के आधार पर विश्लेषित कर सकें। पहचान की गई समस्याओं में से किसी एक समस्या को उसकी गंभीरता तथा अत्यावश्यकता के आधार पर चुना जाता है। आवश्यक संसाधनों की पहचान की जाती है तथा उन्हें जुटाया जाता है। लक्ष्यों को हासिल करने के लिए एक कार्य योजना बनाई जाती है। इस योजना को लागू किया जाता है तथा मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन के आधार पर आगे की कार्रवाई तथा स्थायित्व के लिए आवश्यक होने पर रूपांतरण किए जाते हैं। यदि वांछित योजना पूरी हो चुकी है तो कार्रवाई के लिए प्राथमिकता सूची से अगली समस्या का चुनाव किया जाता है।

बोध प्रश्न II

1) समुदाय के साथ काम करने के लिए संगठनकर्त्ता को समस्याओं से निपटने तथा समुदाय के सदस्यों के साथ काम करने में निपुण होना होता है। यह निपुणता आवश्यकताओं तथा संसाधनों के बीच के अंतराल को पूरा करने में है। इसलिए सामुदायिक संगठनकर्त्ता को समस्या का समाधान निकालने, संसाधन जुटाने, योजना बनाने, क्रियान्वित करने तथा उनका मूल्यांकन

करने में निपुण होना होता है। संगठनकर्त्ता को प्रत्येक स्तर पर लोगों की भागीदारी तथा सहयोग को बनाए रखना होता है।

बोध प्रश्न III

1) सामुदायिक संगठनकर्त्ता की अनेक भूमिकाएँ होती हैं। ये परिस्थिति, समुदाय तथा आवश्यकताओं और समस्याओं पर निर्भर हैं। संचार की भूमिका में सूचना उपलब्ध कराता है। एक योग्य प्रेरक के रूप में लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में काम करने के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाता है। सामुदायिक संगठनकर्त्ता सूचना के स्रोत के रूप में एक उत्प्रेरक, सलाहकार तथा मंत्रणाकर्त्ता के रूप में भी काम करता है तथा लोगों को परिस्थितियों के अनुरूप काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। संगठनकर्त्ता एक प्रवर्तक के रूप में समुदाय की कुशलता के लिए नए तरीके तथा विभिन्न उपायों का सुझाव देता है। वकालत दूसरी भूमिका है जहाँ या तो संगठनकर्त्ता समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है या आवश्यकता पड़ने पर समुदाय को अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रोत्साहित करता है। संगठनकर्त्ता ऐसे व्यक्ति के रूप में काम नहीं करता जो हुक्म चलाता या आदेश देता है अथवा नियंत्रित करता है न ही समुदाय के सदस्यों से माँग करता है। संगठनकर्त्ता को एक दोस्त, दार्शनिक तथा मार्गदर्शक बनना पड़ता है ताकि समुदाय का मार्गदर्शन किया जा सके। आवश्यक सूचना उपलब्ध कराई जा सके तथा उन्हें अपनी शक्ति एकजुट करने तथा अपनी समस्याओं को समझने और जरूरतों और समस्याओं का हल ढूंढने में विकल्पों को तलाशने में सहायक हो सके।